Teacher's Manual

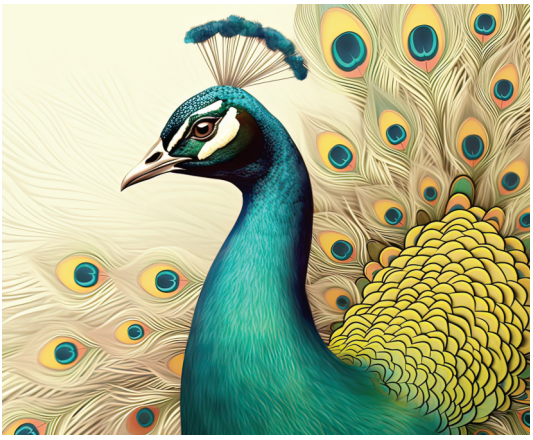

Fiesta Learning
Big Ideas Simply Explained

सर्वनाम
विलोम
काल
विशेषण
कहानी
भाषा
वचन
धातु
क्रिया
निबंध
संज्ञा
वर्ण
कारक

व्याकरण भारती

अनुभवी हिंदी लेखकों द्वारा तैयार की गई

संजय आत्रेय
उमा शर्मा

कक्षा—6	...	2
कक्षा—7	...	33
कक्षा—8	...	65

1. भाषा, बोली और व्याकरण

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) भाषा वह साधन है, जिसके द्वारा मनुष्य मन के भावों और विचारों को एक-दूसरे के सामने प्रकट करता है।

(ख) भाषा के मुख्यतः दो रूप हैं1. मौखिक भाषा 2. लिखित भाषा।

मौखिक भाषा–मुख से बोलकर जिन ध्वनि-समूहों के प्रयोग से हम प्रतिदिन परस्पर बातचीत करते हैं, वह भाषा का 'मौखिक रूप' कहलाता है; जैसे– भाषण, बातचीत, वाद-विवाद आदि।

(ग) **बोली–**बोली एक क्षेत्र विशेष में बोली जाने वाली भाषा के विशिष्ट रूप को ही बोली कहा जाता है। इसका प्रयोग बोलचाल के लिए ही होता है। इसका कोई लिखित साहित्य नहीं होता है। हमारे देश में हिंदी की कई बोलियाँ हैं; जैसे– भोजपुरी, मारवाड़ी, बुंदेली आदि।

उपभाषा–उपभाषा का क्षेत्र बोली की अपेक्षा अधिक विस्तृत होता है। इसमें साहित्य रचना भी होती है। बोली की अपेक्षा इसका रूप अधिक विकसित होता है; जैसे– ब्रज, अवधी, मैथिली।

(घ) मौखिक ध्वनियों को लिखकर प्रकट करने के लिए जिस विधि अथवा निश्चित किए गए चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उसे लिपि कहते हैं।

(ङ) जिसके द्वारा भाषा के शुद्ध और अशुद्ध रूपों की पहचान होती है, उसे व्याकरण कहते हैं। इसी के माध्यम से हम भाषा का मानक प्रयोग सीखते हैं।

व्याकरण के निम्नलिखित तीन अंग होते हैं

1. वर्ण-विचार 2. शब्द विचार 3. वाक्य विचार।

1. **वर्ण-विचार–**शब्दों की रचना वर्णों के द्वारा होती है। अतः वर्ण-विचार में वर्णों के रूपों का ज्ञान प्राप्त करके उनके उच्चारण और लिखने की विधि पर विचार किया जाता है।
2. **शब्द विचार–**प्रत्येक भाषा का शब्द-भंडार विशाल होता है। शब्द-विचार के अंतर्गत शब्दों के भेद, उत्पत्ति, बनावट और परिवर्तन का अध्ययन किया जाता है।
3. **वाक्य विचार–**वाक्य भावों की अभिव्यक्ति का प्रतीक होते हैं। अतः वाक्य-विचार के अंतर्गत वाक्यों की रचना, भेद, विग्रह और विराम चिह्नों के प्रयोग आदि का अध्ययन किया जाता है।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) हिंदी भारत की **राजभाषा** है।

(ख) वाद-विवाद **मौखिक** भाषा का उदाहरण है।

(ग) घर में बोली जाने वाली भाषा **मातृभाषा** कहलाती है।

(घ) उपभाषा का क्षेत्र बोली की अपेक्षा **विस्तृत** होता है।

(ङ) भारत में लगभग **19,500** से अधिक बोलियाँ बोली जाती हैं।

3. हाँ अथवा नहीं में उत्तर दीजिए–

(क) हाँ (ख) नहीं (ग) नहीं

(घ) नहीं (ङ) नहीं

4. निम्नलिखित वाक्यों के सामने भाषा का रूप लिखिए–

(क) लिखित भाषा (ख) मौखिक भाषा

(ग) लिखित भाषा (घ) मौखिक भाषा

5. निम्नलिखित राज्यों में बोली जाने वाली भाषाओं के नाम लिखिए–

(क) पंजाब **पंजाबी**

(ख) उत्तर प्रदेश **हिंदी, उर्दू, अवधी, ब्रज**

(ग) उड़ीसा **उड़िया**

(घ) मणिपुर **मणिपुरी**

(ङ) तमिलनाडु **तमिल**

(च) गुजरात **गुजराती**

6. निम्नलिखित भाषाओं की लिपियों के नाम लिखिए–

(क) हिंदी **देवनागरी** (ख) उर्दू **फारसी**

(ग) तमिल **तमिल** (घ) अंग्रेजी **रोमन**

(ङ) संस्कृत **देवनागरी** (च) पंजाबी **गुरुमुखी**

7. नीचे वर्ग-पहेली में कुछ खाने खाली हैं उन्हें उन प्रांतों के नामों से पूरा कीजिए जिनकी आम बोलचाल की भाषा हिंदी है

ह	रि	या	णा		उ
	म				त
	ध्य	हि			रा
रा	प्र	मा			खं
ज	दे	च			ड
स्था	श	ल			
न	बि	हा	र		

8. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (iii) बोली (ख) (ii) देवनागरी (ग) (iii) उपभाषा

(घ) (i) शब्द विचार (ङ) (i) मातृभाषा (च) (iii) 1652

2. वर्ण-विचार

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) **वर्ण**–भाषा की वह सबसे छोटी ध्वनि, जिसके और अधिक टुकड़े नहीं किए जा सकते हैं। वर्ण कहलाती है।

वर्णमाला–किसी भाषा के समस्त वर्णों के क्रमानुसार समूह को उस भाषा की वर्णमाला कहते हैं।

(ख) जिन वर्णों का उच्चारण करते समय किसी अन्य ध्वनि की सहायता न ली जाए और हवा मुँह से बिना रुके बाहर आए, उन्हें स्वर कहते हैं।
स्वर तीन प्रकार के होते हैं–

1. **ह्रस्व स्वर**–जिन स्वरों के उच्चारण में कम समय लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। ह्रस्व स्वर चार हैं–अ, इ, उ, ऋ।
2. **दीर्घ स्वर**–जिन स्वरों का उच्चारण करते समय ह्रस्व स्वरों से दोगुना समय लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। दीर्घ स्वर सात हैं–आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।
3. **प्लुत स्वर**–जिन स्वरों का उच्चारण करते समय ह्रस्व स्वरों से लगभग तीन दुगना अधिक समय लगता है, उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं। जिस स्वर का प्लुत के रूप में प्रयोग होता है, उसके आगे हिंदी की गिनती का ३ लिखा जाता है। जैसे–ओ३म्।

(ग) व्यंजन के तीन भेद होते हैं–
1. स्पर्श व्यंजन 2. अंतःस्थ व्यंजन 3. ऊष्म व्यंजन।

(घ) 'आगत' शब्द का अर्थ है– बाहर से आया हुआ। इस प्रकार आगत ध्वनियों से तात्पर्य उन ध्वनियों से है, जो पहले हिंदी भाषा में नहीं थी, किंतु विदेशी भाषाओं के शब्द आ जाने के कारण हिंदी में वे अपना ली गई हैं। जैसे– अर्द्धचंद्राकार और नुक्ते का प्रयोग।

(ङ) अयोगवाह के तीन भेद हैं–
1. **अनुस्वार (ं)**–अनुस्वार नाक से बोला जाता है। अनुस्वार का चिह्न बिंदु (ं) है। इसका प्रयोग स्वरों और व्यंजनों के ऊपर बिंदु के रूप में किया जाता है; जैसे– मंद, चंदा आदि।
2. **अनुनासिक (ँ)**–अनुनासिक मुख और नाक दोनों से बोला जाता है। इसका सूचक चंद्रबिंदु (ँ) है, जिसे वर्णों के ऊपर लगाते हैं; जैसे– साँप, आँच आदि।
3. **विसर्ग (ः)**–विसर्ग का चिह्न (ः) है। इसका प्रयोग वर्ण के आगे होता है; जैसे– प्रातः, अतः, पुनः आदि। विसर्ग का उच्चारण 'ह्' की तरह होता है।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) भाषा की सबसे छोटी इकाई **वर्ण** होती है।
(ख) किसी भाषा के समस्त वर्णों के समूह को उस भाषा की **वर्णमाला** कहते हैं।
(ग) वर्णों को **अक्षर** भी कहते हैं।
(घ) ऐसे वर्ण जो न तो स्वर हैं और न ही व्यंजन, उन्हें **अयोगवाह** कहते हैं।
(ङ) ऑ एक **आगत स्वर** ध्वनि है।

3. सही कथन के सामने (✓) तथा गलत कथन के सामने (✗) का चिह्न लगाइए–

(क) (✓) (ख) (✗) (ग) (✗)
(घ) (✓) (ङ) (✗)

4. दिए गए वर्णों के उच्चारण-स्थान लिखिए–

(क)	क्	**कंठ**	(ख)	ण्	**नासिका**
(ग)	फ्	**ओष्ठ**	(घ)	ई	**तालु**
(ङ)	ल्	**दंत**	(च)	प्	**ओष्ठ**

5. निम्नलिखित द्वित्व व्यंजनों वाले तीन-तीन शब्द लिखिए–

(क)	त्+त	=	त्त	**पत्ता**	**कुत्ता**	**छत्ता**
(ख)	च्+च	=	च्च	**कच्चा**	**बच्चा**	**उच्चारण**
(ग)	न्+न	=	न्न	**अन्न**	**तमन्ना**	**गन्ना**
(घ)	द्+द	=	द्द	**कद्दू**	**गद्दा**	**भद्दा**

6. अनुस्वार (ं) या अनुनासिक (ँ) का प्रयोग करते हुए सार्थक शब्द बनाइए

(क)	पाच	**पाँच**	(ख)	आख	**आँख**
(ग)	नगा	**नंगा**	(घ)	रग	**रंग**
(ङ)	मदिर	**मंदिर**	(च)	गाधी	**गांधी**
(छ)	आधी	**आँधी**	(ज)	जहा	**जहाँ**
(झ)	पाचवी	**पाँचवीं**	(ञ)	हस	**हंस**
(ट)	फस	**फंस**	(ठ)	कठ	**कंठ**

7. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (iii) वर्णमाला (ख) (i) दो

(ग) (i) तीन (घ) (iii) श ष स ह

3. शब्द-विचार

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) वर्णों के सार्थक समूह को शब्द कहते हैं।

(ख) शब्दों का वर्गीकरण चार आधारों पर किया गया है–रचना के आधार पर, उत्पत्ति के आधार पर, प्रयोग के आधार पर और अर्थ के आधार पर।

(ग) जिन शब्दों का प्रयोग अनेक अर्थों में किया जा सके, वे अनेकार्थक शब्द कहलाते हैं।

(घ) **रूढ़ और योगरूढ़ शब्दों का अंतर–**

रूढ़ शब्द शब्दों के मूल रूप होते हैं। इन्हें सार्थक खंडों में विभक्त नहीं किया जा सकता। इनका निश्चित अर्थ होता है, जिसे मुख्यार्थ कहा जाता है; जैसे–जल, घर आदि। जबकि योगरूढ़ शब्द दो या दो से अधिक शब्दों या शब्दांशों से मिलकर बने होते हैं और अपने शाब्दिक अर्थ को छोड़कर किसी विशेष (रूढ़) अर्थ का बोध कराते हैं; जैसे–नीलकंठ = नील + कंठ। 'नीलकंठ' का सामान्य अर्थ है–नीले कंठ वाला, लेकिन इसका रूढ़ (विशेष) अर्थ है–शिव।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) जो यौगिक शब्द विशेष अर्थ का बोध कराते हैं, उन्हें **योगरूढ़ शब्द** कहते हैं।

(ख) 'नीलकंठ' **योगरूढ़** शब्द है।
(ग) **अविकारी** शब्दों का रूप नहीं बदलता है।
(घ) 'खिड़की' **देशज** शब्द है।

3. हाँ अथवा नहीं में उत्तर दीजिए–

(क) नहीं (ख) हाँ (ग) नहीं
(घ) हाँ (ङ) हाँ

4. निम्नलिखित विदेशी शब्द किस भाषा के हैं? लिखिए–

(क)	बेगम	**तुर्की**	(ख)	स्कूल	**अंग्रेजी**
(ग)	नमक	**फारसी**	(घ)	फौज़	**फारसी**
(ङ)	दीवार	**फारसी**	(च)	कसम	**अरबी**
(छ)	फ़ौलाद	**अरबी**	(ज)	तंबाकू	**पुर्तगाली**
(झ)	सुराग	**तुर्की**	(ञ)	अफ़सोस	**फारसी**

5. निम्नलिखित शब्दों के तद्भव रूप लिखिए–

(क)	ओष्ठ	**ओंठ**	(ख)	सर्प	**साँप**
(ग)	मृत्तिका	**मिट्टी**	(घ)	अक्षि	**आँख**
(ङ)	काक	**कौआ**	(च)	भ्रमर	**भौंरा**
(छ)	व्याघ्र	**बाघ**	(ज)	पृष्ठ	**पीठ**
(झ)	कूप	**कुआँ**			

6. निम्नलिखित वर्ण-समूहों से सार्थक शब्द बनाकर लिखिए–

(क)	रीमाअल	**अलमारी**	(ख)	दारकीचौ	**चौकीदार**
(ग)	ठामिस	**मिठास**	(घ)	लागिस	**गिलास**
(ङ)	छमली	**मछली**	(च)	तुराचई	**चतुराई**
(छ)	लोकरप	**परलोक**	(ज)	नाईआ	**आईना**
(झ)	दाबाम	**बादाम**			

7. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (iv) (ख) (iii) (ग) (iv) (घ) (iv)

4. संज्ञा

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) जिस शब्द से किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, भाव या गुण का बोध हो, उसे संज्ञा कहते हैं; जैसे–दिव्या, गेंद, स्कूल, सुंदरता, गरमी आदि।

(ख) संज्ञा के मुख्यतः तीन भेद होते हैं–
(i) व्यक्तिवाचक संज्ञा
(ii) जातिवाचक संज्ञा
(iii) भाववाचक संज्ञा

(ग) जिस शब्द से किसी विशेष व्यक्ति, प्राणी, वस्तु अथवा स्थान का बोध हो, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।

(घ) भाववाचक संज्ञा शब्दों की रचना चार प्रकार के शब्दों में प्रत्यय लगाकर की जाती है अर्थात् जातिवाचक संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया शब्दों से की जा सकती है।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कोष्ठक में दिए गए उचित संज्ञा शब्दों से कीजिए–

(क) जून के महीने में बहुत **गरमी** होती है।
(ख) चल-चलकर मुझे तो बहुत **थकान** महसूस हो रही है।
(ग) परशुराम क्रोध में अपना **आपा** खो बैठते थे।
(घ) कनिष्ठ **पढ़ाई** करके खेलने गया।
(ङ) कुतुबमीनार **दिल्ली** शहर में है।

3. निम्नलिखित संज्ञाओं को उनके उचित स्थान पर लिखिए–

व्यक्तिवाचक संज्ञा –	**लालकिला,**	**सूरदास,**	**नीलम,**	**रामायण,**	**शिमला**
जातिवाचक संज्ञा –	**पुस्तक,**	**साधु,**	**भाई,**	**नदी,**	**खिलाड़ी**
भाववाचक संज्ञा –	**सुंदरता,**	**प्यास,**	**अमीरी,**	**घबराहट,**	**मिठास**
द्रव्यवाचक संज्ञा –	**सोना,**	**मिट्टी,**	**तेल,**	**दूध,**	**ऊन**
समूहवाचक संज्ञा –	**सेना,**	**कक्षा,**	**झुंड,**	**दल,**	**परिवार**

4. निम्नलिखित शब्दों से भाववाचक संज्ञाएँ बनाइए–

(क) कृति	**कृतित्व**	(ख) पराया	**परायापन**
(ग) वीर	**वीरता**	(घ) कुटिल	**कुटिलता**
(ङ) अतिथि	**आतिथ्य**	(च) शीघ्र	**शीघ्रता**
(छ) स्व	**स्वत्व**	(ज) ईमानदार	**ईमानदारी**

5. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (iv) (ख) (i) (ग) (iv) (घ) (iii)

5. शब्द-भंडार

अभ्यास-कार्य

पर्यायवाची शब्द

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) समान अर्थ प्रकट करने वाले शब्द पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं।
(ख) पर्यायवाची शब्द को समानार्थी शब्द के नाम से भी पुकारते हैं।

2. निम्नलिखित शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए–

(क) कपड़ा	**वस्त्र**	**पट**	**अंबर**
(ख) सूर्य	**दिनकर**	**भास्कर**	**रवि**
(ग) जल	**नीर**	**तोय**	**पानी**
(घ) घर	**गृह**	**आलय**	**निकेतन**

3. शब्दों के सही पर्यायवाची पर (✓) का निशान लगाइए–

(क) वृक्ष –	तरु **(✓)**	विपिन	विहग
(ख) पक्षी –	पक्ष	दिवस	विहग **(✓)**

(ग) खड्ग – तलवार (✓) धरती स्वर्ण
(घ) स्वर्ण – हंस सोना (✓) मधु

विलोम शब्द

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) जो शब्द एक-दूसरे का विपरीत या उल्टा अर्थ प्रकट करते हैं, उन्हें विलोम शब्द कहते हैं।

(ख) विलोम शब्द को विपरीतार्थक शब्द के नाम से भी पुकारा जाता है।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति रंगीन शब्दों के विलोम शब्द लिखकर कीजिए–

(क) व्यापार में **लाभ** और **हानि** तो लगी ही रहती है।

(ख) कुरसी **निर्जीव** है लेकिन पौधा **सजीव** है।

(ग) क्या **उचित** है और क्या **अनुचित** इसका निर्णय करना कठिन है।

(घ) राजीव **आलसी** है और नमन **उद्यमी**।

3. दिए गए शब्दों में से उपयुक्त विलोम शब्द पर (✓) का निशान लगाइए–

(क)	आशा	–	आस	निराशा (✓)	दुखी
(ख)	अमावस्या	–	एकादशी	दोषी	पूर्णिमा (✓)
(ग)	कर्कश	–	मीठा	मधुर (✓)	प्रेम
(घ)	आस्था	–	विश्वास	अनास्था (✓)	निश्चय

अनेकार्थक शब्द

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) एक से अधिक अर्थ रखने वाले शब्द अनेकार्थी शब्द कहलाते हैं।

(ख) 'दल' शब्द के अनेक अर्थ हैं; जैसे–सेना, समूह, पत्ता, हिस्सा आदि।

सेना – युद्ध में भारतीय **सेना** वीरता से लड़ी।

समूह – नेता के विवादास्पद भाषण का समस्त जन-**समूह** ने विरोध किया।

हिस्सा – बांग्लादेश का अधिकतर **हिस्सा** समुद्र की सतह से बहुत कम ऊँचाई पर स्थित है।

पत्ता – पेड़ से **पत्ता** गिरा।

2. खाली स्थानों में वे शब्द लिखिए, जिनके अर्थ दिए गए हैं–

(क)	**वर्ण**	अक्षर	रंग	जाति
(ख)	**पानी**	जल	मान	चमक
(ग)	**हरि**	विष्णु	शेर	सर्प
(घ)	**विधि**	कानून	रीति	ब्रह्मा

3. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो अर्थ लिखिए–

(क)	लाल	**एक रंग**	**पुत्र**
(ख)	अर्थ	**मतलब**	**धन**
(ग)	जड़	**वृक्ष का मूल**	**मूर्ख**
(घ)	अवकाश	**छुट्टी**	**अंतराल**

(ङ) हार **पराजय** **पुष्पमाला**
(च) अरुण **सूर्य** **सिंदूर**
(छ) फल **परिणाम** **भाले की नोंक**
(ज) हरि **विष्णु** **साँप**

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) कम-से-कम शब्दों में अपने भावों को अभिव्यक्त करने के लिए अर्थात् भाषा के क्षेत्र में संक्षिप्तता और प्रभाव-वृद्धि के लिए अनेक शब्दों अर्थात् वाक्यांशों के लिए एक शब्द का प्रयोग करते हैं।

(ख) सभी धर्मों को समान महत्व देने वाला — धर्मनिरपेक्ष
जो दूसरों के अधीन हो — पराधीन
रास्ता दिखाने वाला — पथ-प्रदर्शक, मार्गदर्शक
जो आँखों के सामने हो — प्रत्यक्ष

2. निम्नलिखित अनेक शब्दों के लिए एक-एक शब्द लिखिए–

(क) अल्पायु (ख) निर्बल (ग) पराधीन
(घ) साकार (ङ) कृतघ्न

समरूपी भिन्नार्थक शब्द

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) वे शब्द जिनके उच्चारण या वर्तनी में समानता प्रतीत होती है परंतु उनके अर्थ भिन्न होते हैं, उन्हें समरूपी भिन्नार्थक शब्द कहते हैं।

(ख) आदी = **अभ्यस्त** – सुरेंद्र मद्यपान का **आदी** है।
आदि = **आरंभ** – महाकवि वाल्मीकि **आदि** कवि के रूप में प्रसिद्ध हैं।

2. सही विकल्प से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) **सूत** कातकर खादी तैयार की जाती है।
(ख) डॉक्टर ने घायल को **रक्त** चढ़ाया।
(ग) पूरियों के साथ **अचार** खाना अच्छा लगता है।
(घ) सभी **ग्रह** सूर्य के चारों ओर घूमते हैं।

3. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कर अंतर स्पष्ट कीजिए–

(क) अंतर — रीमा और रोशनी की उम्र में दो वर्ष का **अंतर** है।
अंदर — साँप बिल के **अंदर** घुस गया।

(ख) अनिल — **अनिल** अपनी कक्षा में प्रथम आया है।
अनल — **अनल** की प्रचंड ज्वाला से समूचा गाँव क्षणभर में जलकर राख हो गया।

(ग) अवधि — गिलहरी के जीवन की **अवधि** लगभग दो वर्ष होती है।
अवधी — गोस्वामी तुलसीदास ने श्रीरामचरितमानस की रचना **अवधी** भाषा में की।

एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्द

1. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (i) घने (ख) (iii) कामना

(ग) (ii) अपराध (घ) (i) उपहार

2. निम्नलिखित वाक्यों में कुछ गलत शब्दों का प्रयोग हो गया है। उनके स्थान पर सही शब्दों का प्रयोग कर वाक्य पुनः लिखिए–

(क) रावण को अपनी शक्ति पर झूठा अहंकार था।

(ख) छोटा बच्चा अपनी परछाईं देखकर डर गया।

(ग) हाथियों का झुंड इसी ओर आ रहा है।

(घ) कर्मचारियों के सहयोग से ही कंपनी को मुनाफा हुआ है।

(ङ) समय अमूल्य है, उसका महत्व समझने का प्रयत्न करो।

6. संधि

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) दो वर्णों के परस्पर मेल से उनके मूल रूप में जो परिवर्तन या विकार आ जाता है, उसे संधि कहते हैं; जैसे–परम + आत्मा = परमात्मा आदि।

(ख) संधि के नियमों द्वारा मिले हुए वर्णों को अलग-अलग करना संधि-विच्छेद कहलाता है; जैसे–महोत्सव (संधि) = महा + उत्सव (संधि-विच्छेद)।

2. निम्नलिखित शब्दों में संधि कीजिए–

(क) दुः + जन = **दुर्जन** (ख) सम् + हार = **संहार**

(ग) गिरि + ईश = **गिरीश** (घ) पो + इत्र = **पवित्र**

(ङ) एक + एक = **एकैक** (च) ने + अन = **नयन**

(छ) सम् + राट = **सम्राट** (ज) वाक् + दान = **वाग्दान**

(झ) मनः + रथ = **मनोरथ** (ञ) जगत् + ईश = **जगदीश**

(ट) उत् + चारण = **उच्चारण** (ठ) उत् + लेख = **उल्लेख**

3. निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए–

(क)	उज्ज्वल	**उत् + ज्वल**	(ख)	महर्षि	**महा + ऋषि**
(ग)	सत्याग्रह	**सत्य + आग्रह**	(घ)	नीरोग	**निः + रोग**
(ङ)	संसार	**सम् + सार**	(च)	क्रोधाग्नि	**क्रोध + अग्नि**
(छ)	दुस्साहस	**दुः + साहस**	(ज)	दिग्गज	**दिक् + गज**
(झ)	लघूत्तर	**लघु + उत्तर**	(ञ)	पित्रनुमति	**पितृ + अनुमति**

4. स्वर संधि के भेदों के अनुसार अलग-अलग करके लिखिए–

(क) दीर्घ संधि **कपीश, सूक्ति, रेखांकित**

(ख) गुण संधि **धर्मेंद्र, जलोर्मि**

(ग) वृद्धि संधि **एकैक, वनौषधि, सदैव**

(घ) यण् संधि **स्वच्छ, अत्यधिक**

(ङ) अयादि संधि **पवन, गायिका**

5. स्वर संधि, व्यंजन संधि तथा विसर्ग संधि के चार-चार उदाहरण लिखिए–

स्वर संधि	व्यंजन संधि	विसर्ग संधि
हिमालय	जगदीश	निराशा
परीक्षा	सज्जन	मनोहर
परोपकार	अनुच्छेद	दुर्बल
पवित्र	उज्जवल	नमस्ते

6. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (iv) (ख) (iv) (ग) (ii)

(घ) (ii) (ङ) (iv)

7. समास

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) जब दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से एक नया शब्द बनाया जाता है, तो शब्द-रचना की इस विधि को समास कहा जाता है; जैसे–नगर में वास = नगरवास, जीवन रहने तक = आजीवन आदि।

(ख) समास के छह भेद होते हैं–

(i) अव्ययीभाव समास – यथाशक्ति, प्रतिदिन।
(ii) तत्पुरुष समास – गंगाजल, देशभक्ति।
(iii) कर्मधारय समास – नीलाकाश, चंद्रमुख।
(iv) बहुव्रीहि समास – दशानन, नीलकंठ।
(v) द्विगु समास – पंचवटी, चौराहा।
(vi) द्वंद्व समास – राधा-कृष्ण, सुख-दुख।

(ग) **समास व संधि में अंतर**–समास व संधि में निम्नलिखित अंतर हैं–

समास शब्दों के मेल को कहते हैं, जबकि संधि वर्णों के मेल को।

संधि में वर्णों में वर्ण-परिवर्तन भी होता है, जबकि समास में प्रायः ऐसा नहीं होता।

संधि में विभक्ति या शब्दों का लोप नहीं होता, जबकि समास में विभक्ति या शब्दों का लोप होता है।

2. निम्नलिखित में समास कीजिए–

	समास-विग्रह	समास		समास-विग्रह	समास
(क)	जन्म से अंधा	**जन्मांध**	(ख)	हाथ से लिखा	**हस्तलिखित**
(ग)	मृग जैसे नयन	**मृगनयन**	(घ)	देव का आलय	**देवालय**
(ङ)	सब को प्रिय	**सर्वप्रिय**	(च)	नौ ग्रहों का समूह	**नवग्रह**
(छ)	राजा और रंक	**राजा-रंक**	(ज)	सूर्य का उदय	**सूर्योदय**

3. निम्नलिखित समस्तपदों का विग्रह कीजिए–

	समस्तपद	समास-विग्रह
(क)	तिरंगा	**तीन रंगों का समूह**

(ख) दशानन — **दश हैं आनन (मुख) जिसके (रावण)**
(ग) रेखांकित — **रेखा से अंकित**
(घ) यथाशक्ति — **शक्ति के अनुसार**
(ङ) सुख-दुःख — **सुख और दुख**
(च) चतुर्भुज — **चार भुजाएँ हैं जिसकी (विष्णु)**
(छ) चंद्रशेखर — **चंद्र (चंद्रमा) है जिसके शेखर (सिर) पर (शंकर)**
(ज) नर-नारी — **नर और नारी**
(झ) भरपेट — **पेट भरकर**
(ञ) रातोंरात — **रात ही रात में**
(ट) नगरवास — **नगर में वास**
(ठ) तुलसीकृत — **तुलसी द्वारा कृत**

4. निम्नलिखित वाक्यों में आए रंगीन पदों को समास में बदलकर वाक्य पुनः लिखिए–

(क) हमें **माता-पिता** का सम्मान करना चाहिए।
(ख) **गंगातट** पर सबने दीप जलाए।
(ग) उसने यह घटना **आजीवन** याद रखी।
(घ) राजा का पत्र **हस्तलिखित** है।

5. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (iii) (ख) (iii) (ग) (ii) (घ) (iii) (ङ) (ii)

8. उपसर्ग

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) जो शब्दांश मूल शब्दों के आरंभ में जुड़कर उनके अर्थ में विशेषता या परिवर्तन ला देते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते हैं।
(ख) उपसर्गों को चार वर्गों में रखा गया है–
(i) संस्कृत के उपसर्ग, (ii) हिंदी के उपसर्ग, (iii) उर्दू-फारसी के उपसर्ग (iv) संस्कृत के अव्यय संबंधी उपसर्ग।

2. निम्नलिखित शब्दों में से उपसर्ग और मूल शब्द अलग-अलग लिखिए–

	शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द
(क)	निर्दोष	**निर्**	**दोष**
(ख)	उद्घाटन	**उत्**	**घाटन**
(ग)	परिक्रमा	**परि**	**क्रमा**
(घ)	निकम्मा	**निक**	**अम्मा**
(ङ)	अंतर्जातीय	**अंतर**	**जातीय**
(च)	लापरवाह	**ला**	**परवाह**

3. निम्नलिखित उपसर्गों को जोड़कर दो-दो नए शब्द बनाइए–

(क) वि — **विपक्ष** **विदेश**

(ख)	अनु	**अनुरोध**	**अनुराग**
(ग)	अधि	**अधिनायक**	**अधिपति**
(घ)	दुर्	**दुर्बल**	**दुर्भाग्य**
(ङ)	उप	**उपवन**	**उपकार**
(च)	अव	**अवगुण**	**अवनति**

4. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (iii) (ख) (ii) (ग) (iv)

9. प्रत्यय

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) शब्द के अंत में जुड़कर उसके अर्थ में विशेषता लाने वाले शब्दांश प्रत्यय कहलाते हैं।

(ख) प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं–

(i) कृत् प्रत्यय–उड़ान, पढ़ाई।

(ii) तद्धित प्रत्यय–भारतीय, मिठास।

2. निम्नलिखित शब्दों में उचित प्रत्यय लगाकर नए शब्दों की रचना कीजिए–

(क)	मीठा + **आस**	=	**मिठास**	(ख)	लाचार + **ई**	=	**लाचारी**
(ग)	घिस + **आवट**	=	**घिसावट**	(घ)	सुंदर + **ता**	=	**सुंदरता**
(ङ)	झूल + **आ**	=	**झूला**	(च)	सख्त + **ई**	=	**सख्ती**
(छ)	रंग + **ईला**	=	**रँगीला**	(ज)	शाकाहार + **ई**	=	**शाकाहारी**
(झ)	शास्त्र + **ईय**	=	**शास्त्रीय**	(ञ)	चाचा + **एरा**	=	**चचेरा**
(ट)	पूजा + **आपा**	=	**पुजापा**	(ठ)	दया + **आलु**	=	**दयालु**
(ड)	गिर + **आवट**	=	**गिरावट**	(ढ)	पढ़ + **आई**	=	**पढ़ाई**
(ण)	दुख + **ई**	=	**दुखी**	(त)	बंगाल + **ई**	=	**बंगाली**

3. निम्नलिखित में से मूल शब्द व प्रत्यय अलग-अलग कीजिए–

		मूल शब्द	**प्रत्यय**
(क)	अनुकरणीय	**अनुकरण**	**ईय**
(ख)	ईर्ष्यालु	**ईर्ष्या**	**आलु**
(ग)	शर्मनाक	**शर्म**	**नाक**
(घ)	कश्मीरी	**कश्मीर**	**ई**
(ङ)	घनत्व	**घन**	**त्व**
(च)	सजावट	**सजा**	**आवट**

4. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (i) (ख) (iv) (ग) (ii) (घ) (i)

10. लिंग

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) जिस शब्द के द्वारा पुरुष या स्त्री जाति का बोध हो, उसे लिंग कहते हैं।

(ख) पुल्लिग शब्दों से स्त्रीलिंग बनाने के दो नियम इस प्रकार हैं–

(i) कुछ अकारांत पुल्लिग शब्दों के अंतिम अ को आ कर देने पर स्त्रीलिंग शब्द बन जाते हैं; जैसे–

पुल्लिग	स्त्रीलिंग	पुल्लिग	स्त्रीलिंग
अनुज	अनुजा	सदस्य	सदस्या
पूज्य	पूज्या	सुत	सुता

(ii) कुछ अकारांत तथा आकारांत शब्दों के अंतिम अ तथा आ को ई कर देने पर स्त्रीलिंग शब्द बन जाते हैं; जैसे–

देव	देवी	पुत्र	पुत्री
दास	दासी	लड़का	लड़की

2. रंगीन शब्दों का लिंग-परिवर्तन करके रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) **नारी** को **नर** के समान अधिकार मिलने चाहिए।

(ख) सलमान खान **अभिनेता** है और कैटरीना कैफ **अभिनेत्री**।

(ग) मैंने उपवन में **मोर** व **मोरनी** को देखा।

(घ) उसके पास एक **गाय** और एक **बैल** है।

3. निम्नलिखित शब्दों के लिंग बदलकर लिखिए–

(क)	लेखक	**लेखिका**	(ख)	श्रीमान	**श्रीमती**
(ग)	छात्रा	**छात्र**	(घ)	पाठक	**पाठिका**
(ङ)	पत्नी	**पति**	(च)	निवेदक	**निवेदिका**

4. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (iii) (ख) (i)

11. वचन

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) संज्ञा, सर्वनाम तथा क्रिया शब्द के जिस रूप से उसकी संख्या का पता चले, उसे वचन कहते हैं; जैसे–लड़का-लड़के, रात-रातें आदि।

(ख) आदमी, शेर, दादा, चाकू और राजा शब्द एकवचन तथा बहुवचन में समान रहते हैं।

2. निम्नलिखित शब्दों को एकवचन में लिखिए–

(क)	धेनुएँ	**धेनु**	(ख)	चोटियाँ	**चोटी**
(ग)	मालाएँ	**माला**	(घ)	दर्शकगण	**दर्शक**

(ङ) सभाएँ **सभा** (च) ऋतुएँ **ऋतु**
(छ) रुपये **रुपया** (ज) तोते **तोता**
(झ) चट्टानें **चट्टान** (ञ) शाखाएँ **शाखा**
(ट) रातें **रात** (ठ) पुस्तकें **पुस्तक**

3. निम्नलिखित शब्दों को बहुवचन में लिखिए–

(क) पत्रिका **पत्रिकाएँ** (ख) वस्तु **वस्तुएँ**
(ग) कली **कलियाँ** (घ) बहू **बहुएँ**
(ङ) मजदूर **मजदूर वर्ग** (च) लू **लुएँ**
(छ) गुरु **गुरुजन** (ज) लता **लताएँ**
(झ) विद्यार्थी **विद्यार्थीगण** (ञ) पहिया **पहिये**
(ट) वह **वे** (ठ) अध्यापक **अध्यापकगण**

4. निम्नलिखित वाक्यों में रंगीन छपे शब्दों के वचन बदलकर वाक्य पुनः लिखिए–

(क) वह **चूड़ियाँ** लाया। (ख) कवि मंच पर **बैठे हैं**।
(ग) धोबी **कपड़े** धो रहा है। (घ) मिठाई पर **मक्खियाँ** भिनभिना रही थीं।

5. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (iii) (ख) (i) (ग) (ii)

12. विशेषण

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) संज्ञा या सर्वनाम के रूप, गुण, उनकी संख्या, मात्रा आदि की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं; जैसे–अच्छा, खट्टा, तीन, चार मीटर आदि।

(ख) जिन शब्दों की विशेषता बताई जाती है, वे विशेष्य कहलाते हैं।

(ग) **परिमाणवाचक तथा संख्यावाचक विशेषण में अंतर–**

परिमाणवाचक विशेषण संज्ञा और सर्वनाम की निश्चित और अनिश्चित नाप-तौल का बोध कराता है, जबकि संख्यावाचक विशेषण संज्ञा और सर्वनाम की निश्चित और अनिश्चित गिनती का बोध कराते हैं; जैसे–

चार मीटर कपड़ा दे दो। (परिमाणवाचक विशेषण)
कमरे में तीन कुरसियाँ हैं। (संख्यावाचक विशेषण)

2. उचित विशेषणों की सहायता से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) गिलास में **थोड़ा-सा** दूध है। (ख) मेरे घर में **पाँच** कमरे हैं।
(ग) सविता **बहुत** बोलती है। (घ) भीम बहुत **बलशाली** थे।

3. निम्नलिखित वाक्यों में से विशेषण छाँटिए और उसके भेद भी बताइए–

	विशेषण	**भेद**
(क)	थोड़े	अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण
(ख)	चार	निश्चित संख्यावाचक विशेषण
(ग)	लाल-लाल	गुणवाचक विशेषण

(घ) सभी — सार्वनामिक विशेषण

(ङ) 65 — निश्चित संख्यावाचक विशेषण

4. विशेषण को विशेष्य से मिलाइए–

(क) (iv) (ख) (iii)

(ग) (ii) (घ) (i)

5. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (iii) (ख) (iii) (ग) (ii)

13. कारक

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध क्रिया से जाना जाता है, उसे कारक कहते हैं; जैसे–राम ने रावण को मारा।

इस वाक्य में 'राम ने' कारक है।

(ख) कारक के आठ भेद होते हैं–कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, संबंध, अधिकरण तथा संबोधन कारक।

(ग) **करण कारक व अपादान कारक में अंतर–**

करण कारक व अपादान कारक, दोनों का विभक्ति-चिह्न 'से' है, परंतु करण कारक में 'से' कर्ता द्वारा क्रिया करने के साधन का सूचक होता है जबकि अपादान कारक में 'से' एक वस्तु का दूसरी वस्तु से अलग होने का सूचक होता है; जैसे–

- प्रिया ने पेन से पत्र लिखा। (करण कारक)
- वृक्ष से फल गिरते हैं। (अपादान कारक)

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति उपयुक्त कारक-चिह्नों के द्वारा कीजिए–

(क) निर्धन **को** दान दो। (ख) प्राची बस **से** उतरी।

(ग) नौकरानी **ने** कमरा साफ कर दिया। (घ) बच्चा बोतल **से** दूध पी रहा है।

(ङ) सेठ जी **ने** भिखारी **को** रोटी दी।

3. उचित विभक्ति लगाकर शुद्ध रूप में लिखिए–

(क) राम **ने** रोटी खाई।

(ख) शेखर अपने भाई **के लिए** पुस्तक लाया।

(ग) राम **ने** रावण **को** मारा।

(घ) वह भूख **से** बेचैन है।

(ङ) माता **ने** पुत्र **को** प्यार किया।

4. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (i) (ख) (i) (ग) (iii)

14. सर्वनाम

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं।

(ख) सर्वनाम के मुख्य छह भेद होते हैं–

(i) पुरुषवाचक सर्वनाम–जिन सर्वनामों का प्रयोग बोलने वाला अपने लिए, सुनने वाले या जिसके विषय में बातें कर रहा हो, उसके लिए प्रयोग करता है, उसे पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे–मैं, हम, तुम, वह, उसने आदि।

(ii) निश्चयवाचक सर्वनाम–जिस सर्वनाम शब्द से दूर या पास की वस्तुओं या व्यक्तियों का निश्चयपूर्वक बोध होता है, उसे निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे–यह, वह आदि।

(iii) अनिश्चयवाचक सर्वनाम–जिस सर्वनाम शब्द से किसी निश्चित वस्तु या व्यक्ति का बोध नहीं होता है, उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे–कुछ, कोई आदि।

(iv) संबंधवाचक सर्वनाम–जो सर्वनाम शब्द परस्पर संबंध बताते हैं, उन्हें संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे–जैसी-वैसी, जिसका-उसका आदि।

(v) प्रश्नवाचक सर्वनाम–जिस सर्वनाम शब्द से किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, दशा आदि के विषय में प्रश्न किया जाता है, उसे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे–कौन, क्या आदि।

(vi) निजवाचक सर्वनाम–जो सर्वनाम निजत्व का बोध कराने के लिए प्रयुक्त होते हैं, वे निजवाचक सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे–खुद, स्वयं, अपने आप आदि।

2. सर्वनाम के उचित रूप द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) मैं बहुत थक गया हूँ, अब **मुझसे** चला नहीं जाता।

(ख) मैं यह उपहार **आपके** लिए लाया हूँ।

(ग) मैं भी **तुम्हारे** साथ चलूँगा।

(घ) मुझे लगता है **उन्हें** कुछ भी नहीं आता।

(ङ) मेरे भाई ने यह पुस्तक **तुम्हारे** लिए भिजवाई है।

3. निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त रेखांकित सर्वनाम शब्दों के भेद लिखिए–

(क) अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम
(ख) प्रश्नवाचक सर्वनाम
(ग) अनिश्चयवाचक सर्वनाम
(घ) अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम
(ङ) निजवाचक सर्वनाम
(च) मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम
(छ) संबंधवाचक सर्वनाम

4. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (iii) (ख) (i) (ग) (i) (घ) (ii)

15. क्रिया

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) जिन शब्दों से किसी कार्य के करने या होने का बोध होता है, उन्हें क्रिया कहते हैं।

कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद हैं–

(i) सकर्मक क्रिया–जिन क्रियाओं का फल कर्ता को छोड़कर कर्म पर पड़ता है, वे सकर्मक क्रिया कहलाती हैं।

(ii) अकर्मक क्रिया–जिन क्रियाओं के साथ कर्म नहीं लगा होता है तथा क्रिया का फल कर्ता पर ही पड़ता है, उन्हें अकर्मक क्रिया कहते हैं।

(ख) **सकर्मक क्रिया की पहचान**–क्रिया के साथ 'क्या', 'किस' और 'किसको' प्रश्न करने पर यदि उचित उत्तर मिले। वह सकर्मक क्रिया कहलाएगी; जैसे–

वाक्य	प्रश्न	उत्तर
नेहा पुस्तक पढ़ती है। भारत मैच जीतेगा।	क्या पढ़ती है? क्या जीतेगा?	पुस्तक मैच

अतः ये सकर्मक क्रियाएँ हैं।

2. हाँ अथवा नहीं में उत्तर दीजिए–

(क) नहीं (ख) हाँ (ग) नहीं (घ) नहीं

3. निम्नलिखित शब्दों से नामधातु क्रियाएँ बनाइए–

(क)	बात	**बतियाना**	(ख)	हाथ	**हथियाना**
(ग)	थप-थप	**थपथपाना**	(घ)	जगमग	**जगमगाना**
(ङ)	टर्र	**टर्राना**	(च)	गरम	**गरमाना**
(छ)	थर-थर	**थरथराना**	(झ)	फटकार	**फटकारना**

4. निम्नलिखित वाक्यों के रिक्त स्थान कोष्ठक में दी गई धातुओं के उचित क्रिया रूप से भरिए–

(क) जंगल में मोर **नाचता** है। (ख) क्या तुमने चोर को **देखा**?

(ग) सोहन अच्छा **खेलता** है। (घ) नानी ने बच्चों को कहानी **सुनाई**।

(ङ) वह पढ़कर **सो गया**। (च) तुम कहाँ से **आए हो**?

5. निम्नलिखित क्रिया शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) हँसना – **हँसना** स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है।

(ख) पढ़ूँगा – मैं चंपक बाल-पत्रिका **पढ़ूँगा**।

(ग) खाओ – उतना ही **खाओ** जितना पचा सको।

(घ) जाऊँगा – मैं आज क्रिकेट खेलने **जाऊँगा**।

6. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (i) (ख) (iii) (ग) (iii) (घ) (iv)

16. काल

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि क्रिया किस समय हुई है, उसे क्रिया का काल कहते हैं।

(ख) काल के तीन भेद होते हैं–(i) भूतकाल, (ii) वर्तमान काल, (iii) भविष्यत् काल।

(i) भूतकाल – (अ) नीलम ने खाना खाया।
(ब) वह खेल रहा था।

(ii) वर्तमान काल – (अ) स्नेहा रोती है।
(ब) गाय घास चर रही है।

(iii) भविष्यत् काल – (अ) लता सितार बजाएगी।
(ब) शायद कल धूप निकले।

(ग) **भूतकाल व भविष्यत् काल में अंतर–**

भूतकाल की क्रिया से कार्य के बीते हुए समय में होने का बोध होता है, जबकि भविष्यत् काल की क्रिया से कार्य के आगे आने वाले समय में होने का बोध होता है; जैसे–

- राम ने रावण को मारा। (भूतकाल)
- सोनू कल नैनीताल जाएगा। (भविष्यत् काल)

2. निम्नलिखित वाक्यों को कोष्ठक में दिए गए काल-भेदों के अनुसार परिवर्तित कर पुनः लिखिए–

(क) बिजली चमक रही है। (ख) शायद कल स्कूल बंद रहे।
(ग) मुझे ऑफिस जाना था। (घ) लगता है आज वर्षा हो रही होगी।
(ङ) गरिमा भोजन कर चुकी थी।

3. निम्नलिखित वाक्यों के काल बताइए–

(क) सामान्य भविष्यत् काल (ख) सामान्य भूतकाल
(ग) अपूर्ण वर्तमान काल (घ) सामान्य भूतकाल
(ङ) पूर्ण भूतकाल

4. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (i) (ख) (iii) (ग) (iii) (घ) (ii)

17. अविकारी शब्द

अभ्यास-कार्य

क्रियाविशेषण

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द क्रियाविशेषण कहलाते हैं।

(ख) **विशेषण व क्रियाविशेषण में अंतर–**

संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं; जैसे–राम अच्छा लड़का है। राधा सुंदर चित्र बनाती है।

उपर्युक्त वाक्यों में आए 'अच्छा' और 'सुंदर' शब्द 'राम' तथा 'चित्र' की विशेषता बता रहे हैं; अतः ये विशेषण हैं।

जो शब्द किसी क्रिया की विशेषता बताता है, उसे क्रियाविशेषण कहते हैं; जैसे–करण सुंदर लिखता है। रेशमा अच्छा नाचती है।

इन वाक्यों में आए 'सुंदर' तथा 'अच्छा' शब्द क्रमशः 'लिखता है' तथा 'नाचती है' क्रिया शब्दों की विशेषता बता रहे हैं; अतः ये क्रियाविशेषण शब्द हैं। इस प्रकार संज्ञा व सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं, जबकि क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द क्रियाविशेषण कहलाते हैं।

2. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (iii) (ख) (ii) (ग) (i)

संबंधबोधक

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के साथ आकर उनका संबंध वाक्य के दूसरे शब्दों के साथ बताते हैं, उन्हें संबंधबोधक कहते हैं।

(ख) संबंधबोधक अव्यय के भेद दो आधारों पर किए गए हैं–

(अ) प्रयोग के अनुसार (ब) अर्थ के अनुसार।

(अ) प्रयोग के अनुसार संबंधबोधक के दो भेद होते हैं–

(i) परसर्गयुक्त संबंधबोधक, (ii) परसर्गरहित संबंधबोधक।

(ब) अर्थ के अनुसार संबंधबोधक के छह भेद होते हैं–

(i) कालवाचक, (ii) स्थानवाचक, (iii) समानतावाचक,
(iv) विरोधवाचक, (v) संबंधबोधक, (vi) साधनवाचक।

2. उचित संबंधबोधक लिखकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) मैं अपने मित्र **के साथ** घूमने गया।

(ख) बीमारी **के कारण** वह कमजोर हो गया।

(ग) छत **के ऊपर** बच्चे खेल रहे हैं।

(घ) दीवार **के सहारे** सीढ़ी खड़ी है।

3. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) से दूर मेरा विद्यालय घर **से दूर** है।

(ख) के पीछे राम पेड़ **के पीछे** छिपा है।

(ग) हेतु पिता जी आवश्यक कार्य **हेतु** मुंबई गए हैं।

(घ) की ओर वह नदी **की ओर** गया है।

4. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (iv) (ख) (iii)

समुच्चयबोधक

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) दो या दो से अधिक शब्दों, वाक्यांशों अथवा वाक्यों को जोड़ने वाले शब्द समुच्चयबोधक कहलाते हैं।

(ख) समुच्चयबोधक के मुख्य तीन भेद हैं।

2. उचित समुच्चयबोधक लिखकर वाक्य पूरे कीजिए–

(क) अंगूर खट्टे थे **अतः** मैंने नहीं खरीदे।

(ख) अभिनव ने दिन-रात परिश्रम किया **लेकिन** वह सफल नहीं हो सका।

(ग) नेहा **और** आरुषि सगी बहनें हैं।

(घ) प्रीति को घड़ी मिली **इसलिए** वह बहुत खुश है।

3. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) इसलिए — उसने कठोर परिश्रम किया था, **इसलिए** परीक्षा में प्रथम आया।

(ख) यदि — **यदि** ओले बरस जाते, तो फसल तहस-नहस हो जाती।

(ग) अन्यथा — बुरे काम छोड़ दो, **अन्यथा** जिंदगी नरक कर लोगे।

(घ) परंतु — रोहन तो आया, **परंतु** श्याम नहीं आया।

(ङ) ताकि — दिन-रात परिश्रम करो **ताकि** सफलता प्राप्त कर सको।

4. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (ii) (ख) (ii) (ग) (ii)

विस्मयादिबोधक

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) विस्मयादिबोधक शब्दों से तात्पर्य है हर्ष, शोक, घृणा, विस्मय, लज्जा, आश्चर्य, चेतावनी आदि भावों को प्रकट करने वाले शब्द।

(ख) विस्मयादिबोधक शब्दों का प्रयोग वाक्य के आरंभ में किया जाता है।

2. उचित विस्मयादिबोधक शब्द लिखकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) **अरे!** तुम कहाँ जा रहे हो?

(ख) **बाप रे बाप!** कितना बड़ा जानवर है?

(ग) **छिः छिः!** कितनी गंदगी है।

(घ) **हाय!** मैं मर गया।

(ङ) **अहा!** कितना स्वादिष्ट भोजन बना है।

3. निम्नलिखित विस्मयादिबोधक शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) खबरदार — **खबरदार!** मेरी बहन के खिलाफ एक शब्द भी बोला।

(ख) धत् — **धत्!** ऐसी बात कहने में तुम्हें लज्जा नहीं आई।

(ग) हा-हा — **हा-हा!** इतना मजेदार नाटक कभी नहीं देखा।

(घ) अजी — **अजी!** थोड़ी देर और रुक जाइए।

(ङ) जी — **जी!** मैं समय पर स्टेशन पहुँच जाऊँगा।

4. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (i) (ख) (ii) (ग) (i)

18. विराम-चिह्न

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) वाक्य के बीच-बीच में तथा अंत में विराम को प्रकट करने के लिए निर्धारित चिह्नों को विराम-चिह्न कहते हैं।

(ख) कथन का आशय स्पष्ट करने के लिए विराम-चिह्नों का प्रयोग किया जाता है।

(ग) जब एक साधारण वाक्य समाप्त हो जाता है अर्थात् कही जाने वाली बात पूर्ण हो जाती है, तब पूर्ण विराम का प्रयोग किया जाता है।

(घ) अर्ध विराम और अल्प विराम का प्रयोग अलग-अलग स्थितियों में इसलिए किया जाता है, क्योंकि अल्प विराम एक से अधिक वस्तुओं या व्यक्तियों को अलग-अलग दर्शाता है तथा अर्ध विराम एक वाक्य या वाक्यांश के साथ दूसरे वाक्य या वाक्यांश का संबंध दर्शाता है।

2. उपयुक्त विराम-चिह्न लगाकर वाक्य दोबारा लिखिए–

(क) हे ईश्वर! मेरी रक्षा करो।

(ख) सुनील ने कहा–"मैं थक गया हूँ।"

(ग) तुम कौन-से विद्यालय में पढ़ते हो?

(घ) रेणू, गीता व पायल पढ़ रही हैं।

(ङ) वह ईमानदार, मेहनती और सज्जन है।

(च) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' हिंदी के प्रसिद्ध कवि हैं।

3. निम्नलिखित विराम-चिह्नों को पहचानकर उनके नाम लिखिए–

(क)	?	**प्रश्नवाचक चिह्न**	(ख)	;	**अर्ध विराम**
(ग)	।	**पूर्ण विराम**	(घ)	-	**योजक चिह्न**
(ङ)	,	**अल्प विराम**	(च)	!	**विस्मयसूचक चिह्न**
(छ)	०	**लाघव चिह्न**	(ज)	‸	**हंसपद चिह्न**
(झ)	()	**कोष्ठक चिह्न**	(ञ)	' '	**इकहरा अवतरण चिह्न**

4. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (iv) (ख) (iii) (ग) (i) (घ) (i) (ङ) (i)

19. मुहावरे और लोकोक्तियाँ

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) मुहावरा एक वाक्यांश है, जो सामान्य अर्थ का बोध न कराकर किसी विशेष अर्थ का बोध कराता है।

(ख) स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त होने वाली, लोगों द्वारा कही गई उक्ति लोकोक्ति कहलाती है।

2. उचित मुहावरा लिखकर रिक्त स्थान भरिए–

(क) उसके छोटे भाई को बच्चा मत समझो, वह तो बड़ों-बड़ों के **कान कतरता** है।

(ख) बच्चों ने तो **घर सिर पर उठा** रखा है।

(ग) मैंने जो कह दिया, उसे **पत्थर की लकीर** समझो।

(घ) हम अपने दुश्मनों को **खाक में मिलाकर** दम लेंगे।

(ङ) पुलिस को आते देख चोर **नौ-दो ग्यारह हो** गए।

(च) चॉकलेट देखकर बच्चों के **मुँह में पानी** आ जाता है।

3. नीचे अधूरी लिखी हुई लोकोक्तियों को स्वयं लिखकर पूरा कीजिए–

(क) जल में रहकर **मगर से बैर**

(ख) अंधों में **काना राजा**

(ग) कंगाली में **आटा गीला**

(घ) कोयले की दलाली में **हाथ काले**

(ङ) अधजल गगरी **छलकत जाए**

(च) एक तो करेला **दूजे नीम चढ़ा**

4. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) काम तमाम करना — **मार डालना**
नेवले ने साँप का **काम तमाम कर दिया**।

(ख) ईद का चाँद होना — **बहुत दिनों बाद दिखाई देना**
अरे संजू भाई! कंपनी में तुम्हारी नौकरी क्या लगी, तुम तो बिलकुल **ईद का चाँद हो गए हो**।

(ग) अपना उल्लू सीधा करना — **अपना स्वार्थ सिद्ध करना**
आजकल हर कोई **अपना उल्लू सीधा करने** के लिए चापलूसी करता है।

(घ) भीगी बिल्ली बनना — **सामना करने से डरना**
पिता जी के घर आते ही दीपक **भीगी बिल्ली बन जाता है**।

5. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (i) (ख) (ii) (ग) (iv)

खंड 'ख' : रचना

20. पत्र-लेखन

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) लिखित रूप में अपने मन के भावों एवं विचारों को प्रकट करके मित्रों और परिचितों तक पहुँचाने का साधन पत्र-लेखन कहलाता है।

(ख) पत्र मुख्य रूप से तीन प्रकार के होते हैं1. व्यक्तिगत या घरेलू पत्र 2. व्यावसायिक पत्र 3. सरकारी या अधिकारिक पत्र।

(ग) पत्र के मुख्यतः छह अंग होते हैं

(i) स्थान तथा तिथि–पत्र में दाईं ओर सबसे ऊपर भेजने वाले का पता तथा पत्र लिखने की तिथि अंकित रहती है।

(ii) **संबोधन तथा प्रशस्ति**–पत्र के आरंभ में, जिसे पत्र लिखा जा रहा है उसके लिए संबंध-विशेष, आयु अथवा पद के अनुसार संबोधन शब्द लिखा जाता है।

(iii) **शिष्टाचार**–संबोधन या प्रशस्ति के बाद पदानुसार नमस्कार, प्रणाम, आशीर्वाद आदि लिखा जाता है।

(iv) **मुख्य विषय**–इसमें मुख्य सामग्री होती है।

(v) **समाप्ति**–पत्र के समाप्त होने पर इति, शुभम्, धन्यवाद आदि लिखने के बाद लिखने वाले का नाम अंकित होता है।

(vi) **पता**–कार्ड या लिफाफे पर पाने वाले का पूरा नाम व पता लिखा जाना चाहिए।

2. निम्नलिखित विषयों पर पत्र लिखिए–

(क) कक्षा में चोरी की घटनाओं की सूचना देने के लिए प्रधानाचार्य को प्रार्थना-पत्र।

सेवा में,
श्रीमान प्रधानाचार्य महोदय,
नेहरू पब्लिक स्कूल
मुरादाबाद।
महोदय,

निवेदन पूर्वक सूचित करना है कि हम कक्षा 6 बी के विद्यार्थी हैं। हमारी कक्षा में दिन-प्रतिदिन होने वाली चोरी की घटनाओं से आपको अवगत कराना है। हमारी कक्षा में पिछले कुछ दिनों से चोरी की घटनाओं में तेजी आ गयी है। रुपयों के साथ पुस्तकें, कॉपियाँ, महँगी कलमें, बस्ते, टिफिन बॉक्स आदि चोरी होने लगे हैं। यदि कोई छात्र फीस जमा करने के लिए पैसे लेकर आता है। वह यदि खेलकूद या शौचालय के लिए बाहर जाता है तभी उसके पैसे गायब हो जाते हैं। चोरी की घटनाओं से कक्षा के सभी छात्र बहुत दुखी हैं। हमने इस संबंध में कक्षाध्यापक को भी लिखित सूचना दी है। तब भी अभी तक चोरी की घटनाओं को नियंत्रित नहीं किया जा सका है।

अतः महोदय, आपसे निवेदन है कि चोरी की घटनाओं पर उचित लगाम लगाते हुए चोर छात्रों पर उचित कार्यवाही करें, जिससे कक्षा के छात्रों का नुकसान न हो। संभव हो तो कक्षा में और कक्षा के बाहर सीसीटीवी कैमरा लगवाया जाए, जिससे चोरों को रंगे हाथ पकड़ा जा सके।

सधन्यवाद
आपका आज्ञाकारी छात्र
आलोक कुमार (कक्षा मॉनिटर)
कक्षा-6 बी
दिनांक .....

(ख) छोटे भाई को परीक्षा में सफलता पर बधाई पत्र।

मदन महाजन

सी-444
शांति कुंज, नई दिल्ली।
15-7-20.....
प्रिय अनुज,
शुभाशीष!
तुम्हारा पत्र मिला, जिसे पढ़कर मन आनंदित हो उठा। परीक्षा में शानदार सफलता पर तुम्हें हार्दिक बधाई। तुमने वर्ष-भर खूब मन लगाकर पढ़ाई की थी, यह उसी का परिणाम है। तुम भविष्य में भी इसी प्रकार परिश्रम करते रहना तथा अपने गुरुजनों एवं बड़ों के शुभाशीर्वाद से सदा इसी प्रकार अच्छे अंक प्राप्त करते रहना।
तुम्हारा अग्रज
रमेश कौशिक

(ग) पिता की ओर से पुत्र को अध्ययन में मन लगाकर परिश्रम करने के लिए पत्र।

प्रिय निखिल
अपर बाजार, मेरठ
दिनांक .....
चिरंजीव
आशा है, तुम छात्रावास में आनंदपूर्वक होंगे। हम यहाँ सदा तुम्हारी चिंता में रहते हैं। तुम्हारी माता जी भी तुम्हारी पढ़ाई के बारे में पूछती रहती हैं। मैं उनको भी सदा यही कहता हूँ कि अपना निखिल पढ़ने में तेज है। इसलिए उसकी पढ़ाई की चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है।
प्रिय पुत्र निखिल! मेरी तुमसे सलाह है कि छात्रावास के ये दिन दुर्लभ हैं। ये दिन लौटकर नहीं आएँगे। अतः तुम अध्ययन का कोई अवसर नहीं चूकना। मन लगाकर पढ़ना। अध्ययन में अधिक-से-अधिक परिश्रम करना। किसी प्रकार की कोई आवश्यकता हो तो मुझे बताना। किसी विषय में कठिनाई आ रही हो तो ट्यूशन रखने में संकोच न करना। अपने स्वास्थ्य का भी ध्यान रखना।
तुम्हारे पिता

(ङ) अपने मित्र को बड़े भाई की शादी में सम्मिलित होने के लिए पत्र।

प्रिय मित्र देवेंद्र,
नमस्कार!
तुम्हें यह जानकार बहुत प्रसन्नता होगी कि मेरे बड़े भाई रजनीश का शुभ-विवाह 3 मार्च, 20..... को होना निश्चित हुआ है। बारात उसी दिन दोपहर 2.00 बजे बस द्वारा पानीपत जाएगी। मेरी हार्दिक इच्छा है कि इस शुभ बेला पर तुम यहाँ पधारो। कृपया निश्चित दिन से एक-दो दिन पूर्व ही आने का प्रयास करना, जिससे कि विवाह के अवसर पर आयोजित तैयारियों तथा अन्य कार्यक्रमों का आनंद भी उठाया जा सके।
पत्र के साथ विवाहोत्सव का कार्यक्रम भी संलग्न है।
तुम्हारा अभिन्न मित्र,
सुमित

(च) मित्र की माता जी की मृत्यु पर सांत्वना पत्र।

48/26 गली न0 32, शालीमार बाग
दिनांक .....
प्रिय विनय,
तुम्हारी माता जी का आकस्मिक निधन का समाचार सुनकर मैं स्तब्ध रह गया। उनके निधन से हम सभी शोक संतप्त हैं। हमारी ईश्वर से प्रार्थना है कि वह उनकी आत्मा को शांति दें और परिवार को इस कष्ट से उबरने का साहस दें।
तुम्हारा मित्र
अमित

21. अनुच्छेद-लेखन

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित विषयों पर अनुच्छेद लिखिए–

(क) दीपों का त्योहार : दीपावली

दीपावली दीपों का त्योहार है। यह अंधकार पर प्रकाश की विजय का प्रतीक है। यह त्योहार कार्तिक मास की अमावस्या को मनाया जाता है। कहा जाता है कि इस दिन भगवान राम रावण का वध करके अयोध्या लौटे थे। इसी खुशी में समस्त अयोध्यावासियों ने पूरे नगर को दीपों से सजाकर खुशियाँ मनाईं। तब से ही इस त्योहार को मनाने की परंपरा चली आ रही है। इसकी तैयारी लगभग पंद्रह दिन पहले ही शुरू हो जाती है। सभी लोग अपने घरों की सफाई करते हैं। व्यापारी दुकानों को सजाते हैं। बाजारों की रौनक देखते ही बनती है। दीपावली के दिन सर्वत्र उमंग और उत्साह का वातावरण होता है। घर तथा आस-पास के क्षेत्र को साफ किया जाता है। रात्रि के समय दीपक, बिजली की झालरें और मोमबत्तियाँ जलाते हैं। लोग लक्ष्मी-गणेश की पूजा करते हैं। बच्चे पटाखे छोड़ते हैं तथा फुलझड़ियाँ जलाते हैं। फिर सब मिलकर एक-दूसरे को बधाई देते हैं तथा मिठाई खाते हैं। दीपावली वास्तव में हर्षोल्लास का त्योहार है; अतः इसे आपस में प्रेमपूर्वक मिल-जुलकर मनाना चाहिए।

(ख) वृक्ष : हमारे सच्चे मित्र

वृक्ष हमारे जीवन का आधार हैं। वे हमें प्राण-वायु और शीतल छाया देते हैं। वृक्ष वर्षा लाने में भी सहायक होते हैं। इनसे हमें फल-फूल तथा दैनिक उपयोग की अनेक लाभदायक वस्तुएँ प्राप्त होती हैं। वृक्ष हमारे स्वास्थ्य की भी रक्षा करते हैं। इनसे विभिन्न प्रकार की औषधियाँ निर्मित की जाती हैं। वृक्ष हमारे लिए इतने उपयोगी हैं, किंतु हम इनका अंधाधुंध विनाश कर रहे हैं। पेड़ों को काटकर हम अपने जीवन की सुरक्षा दाँव पर लगा रहे हैं। अतः हमारे लिए यह आवश्यक है कि हम वृक्षों की रक्षा करें तथा अधिक-से-अधिक संख्या में नए वृक्ष लगाएँ। पर्यावरण में संतुलन बनाने वाले ये वृक्ष हमारे सच्चे मित्र हैं; इनकी रक्षा करना वास्तव में अपनी रक्षा करना है।

(च) सत्संगति

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहने के कारण वह अच्छे-बुरे सभी प्रकार के लोगों के संपर्क में आता है। अच्छे लोगों के साथ उठने-बैठने से मनुष्य में अच्छे गुण तथा बुरों के साथ बैठने से बुरे गुण आते हैं। संगति का प्रभाव मनुष्य पर बहुत अधिक पड़ता है। शराब बेचने वाले के कलश में यदि दूध भी हो तो लोग उसे शराब ही समझते हैं। मनुष्य जैसे लोगों के साथ बैठता है, वैसा ही प्रभाव उस पर पड़ता है। दुर्जन और साधु के घर पले तोते संगति के महत्व को स्पष्ट कर देते हैं। साधु के घर पला तोता राम-राम तथा भजन बोलता है, सत्संग के सागर में वचनों के मोती हैं। ''जिन खोजाँ तिन पाइयाँ, गहरे पानी पैठ।'' जबकि दुर्जन के घर पला तोता सदा गालियाँ देता रहता है। सत्संग के बिना मनुष्य को विवेक प्राप्त नहीं होता। जिस मनुष्य में विवेक नहीं, उसमें और पशु में कोई अंतर दिखाई नहीं देता। अतः मनुष्य को कुसंगति से दूर रहने तथा सत्संगति प्राप्त करने का प्रयास करते रहना चाहिए।

(ज) अगर मैं चिड़िया होता

मैं बारह वर्ष का एक लड़का हूँ। मेरे कहीं भी आने-जाने पर मुझे घरवालों के कई प्रश्नों के उत्तर देने पड़ते हैं। कई बार मेरा मन करता है कि घर के सभी बंधनों को तोड़कर चिड़िया बनकर आकाश में आजादी से विचरण करूँ। यदि मैं चिड़िया होता, तो मुझ पर कोई पाबंदी नहीं होती। मैं स्वतंत्रता से खुले आकाश में घूमता, प्रकृति के सौंदर्य का आनंद लेता। भूख लगने पर वृक्षों से मीठे फल खाता और प्यास लगने पर झरने का ठंडा-ठंडा पानी पीता। चिड़िया का जीवन मौज-मस्ती भरा होता है। न कोई पढ़ाई, न कोई चिंता, न कोई डर और न कोई पाबंदी। बस सारा दिन मस्ती से आसमान की सैर करता। चिड़िया बनकर मैं पेड़ की डाली पर बैठकर झूला झूलता और मुक्ति के गीत गाता रहता। शाम को घोंसले में आकर आराम करता। वास्तव में चिड़िया का जीवन कितना आनंददायक और सुखद होता है, जिसकी कल्पना ही हृदय को रोमांचित कर देती है।

(झ) मेरी रेलयात्रा

एक दिन हमने मिलकर जयपुर जाने का निश्चय किया। मैं बहुत उत्साहित था, क्योंकि हम रेलगाड़ी से जयपुर जा रहे थे। मैं पहली बार रेल से यात्रा करने जा रहा था। मैंने माता-पिता जी के साथ मिलकर जाने की तैयारी की और फिर रेलगाड़ी पकड़ने के लिए रेलवे स्टेशन पहुँच गए। टिकट-काउंटर पर बहुत भीड़ थी। टिकट लेने के बाद रेल के आने का इंतजार करने लगे। कुछ देर बार रेलगाड़ी स्टेशन पर आ गई। हम जल्दी-से एक डिब्बे में चढ़ गए। सीट आसानी से मिल गई। थोड़ी ही देर में रेल चल पड़ी। मेरे लिए यह एक अनोखा अनुभव था। पेड़-पौधे, घर-द्वार, पशु-पक्षी आदि सब पीछे की ओर छूटते दिखाई दे रहे थे। जैसे ही कोई स्टेशन आता, रेलगाड़ी रुक जाती थी। कुछ घंटों में हम अपने गंतव्य पर पहुँच गए। मैं बहुत खुश था, क्योंकि मेरे लिए यह एक अविस्मरणीय अनुभव था।

22. कहानी-लेखन

अभ्यास-कार्य

1. दिए गए चित्रों के आधार पर कहानी लिखिए–

गर्मी का मौसम था। चारों तरफ भीषण गर्मी पड़ रही थी। जहाँ सभी प्राणी गर्मी से राहत पाने की कोशिश कर रहे थे, वहीं एक प्यासा कौआ पानी की खोज में इधर-उधर भटक रहा था। पानी खोजते-खोजते वह एक बाग में पहुँचा। वहाँ उसने एक पेड़ के नीचे पानी का घड़ा देखा। इसे देखकर वह बहुत प्रसन्न हुआ और पानी पीने के लिए उसके पास पहुँचा। घड़े में पानी बहुत कम था। कौए की चोंच पानी तक नहीं पहुँच सकी। परंतु कौआ बहुत समझदार था। उसने निराश होने की बजाए आस-पास के कंकड़ चुनकर घड़े में डालने शुरू कर दिए। जैसे-जैसे कौआ कंकड़ घड़े में डालता गया, घड़े का पानी ऊपर आता गया। जब पानी घड़े के मुँह तक आ गया, तब कौए ने पानी पीकर अपनी प्यास बुझाई।

शिक्षा–मनुष्य को कठिनाई में सदा धैर्य और बुद्धिमानी से काम लेना चाहिए।

2. दिए गए संकेत के आधार पर कहानी लिखिए–

किसी जंगल में एक गरीब लकड़हारा अपनी पत्नी व बच्चों के साथ झोंपड़ी में रहता था। वह जंगल से लकड़ियाँ काटकर शहर में बेचता और जो भी पैसे मिलते उनसे अपने परिवार का गुजारा चलाता था।

एक दिन वह नदी के किनारे एक वृक्ष की डाल काट रहा था कि अचानक उसकी कुल्हाड़ी नदी में गिर गई। लकड़हारा नीचे उतरा परंतु पानी में उसकी कुल्हाड़ी न दिखाई दी। वह जल देवता को याद करके जोर-जोर से रोने लगा। तभी नदी से जल देवता प्रकट हुए और लकड़हारे से उसके रोने का कारण पूछा तो लकड़हारा बोला, "मेरी कुल्हाड़ी नदी में गिर गई है। यदि वह नहीं मिली तो मैं अपने परिवार सहित भूखा मर जाऊँगा। जल देवता को उस पर दया आई और वे उसे सोने की कुल्हाड़ी देने लगे, लेकिन लकड़हारे ने उसे लेने से मना कर दिया। फिर जल देवता ने उसे चाँदी की कुल्हाड़ी दी, लकड़हारे ने फिर मना करते हुए कहा, "यह भी मेरी नहीं है।" फिर जल देवता ने उसे लोहे की कुल्हाड़ी दी, तो लकड़हारे ने प्रसन्नतापूर्वक कहा, "हाँ, यही मेरी कुल्हाड़ी है।"

लकड़हारे की ईमानदारी से प्रसन्न होकर जल देवता ने उसे लोहे के साथ-साथ सोने व चाँदी की कुल्हाड़ियाँ भी उपहार में दे दीं।

23. निबंध-लेखन

अभ्यास-कार्य

- **निम्नलिखित विषयों पर निबंध लिखिए–**

(क) भारत देश महान

भारत हमारा प्रिय देश है। यह प्राचीन देश है। इसकी महानता पर हमें गर्व है। देश-प्रेम के भावों से अपने देश को देखते हैं तो इसकी संपदा पर आश्चर्य होता है।

भारत देश में प्रकृति की छटा देखते ही बनती है। उत्तर में बर्फ से ढके पर्वत शिखरों पर

सूर्य की किरणें कितने रंग बिखेर देती हैं। हिमालय के हिम-शिखरों से निकलने वाली नदियाँ मैदान में आती हैं। खेतों, उद्यानों और मैदान को हरा-भरा बनाती हैं। अन्न-धन से और फलों से मालामाल कर देती हैं। पर्वत और नदियाँ देश की दौलत में चार चाँद लगाती हैं।

भारत के वन और वन्य प्राणी प्रकृति की शोभा बढ़ाते हैं। इसके पर्यावरण की सुरक्षा में इनका योगदान रहता है। वनों से इमारत की लकड़ी मिलती है। वनों के अंधाधुंध कटाव का पर्यावरण पर कुप्रभाव पड़ता है, उसे रोकने के प्रयास हो रहे हैं। प्रदूषण से बचाव के प्रयास भी बड़े पैमाने पर हो रहे हैं। इससे देश महान बनता है।

भारत महापुरुषों का देश है। रामायण और महाभारत जैसे ग्रंथों की भूमि है। वेदों की रचना इसी देश में हुई है। ज्ञान-विज्ञान का केंद्र है अपना देश। इसकी महानता के सामने कोई देश नहीं टिक सकता।

भारत शांतिप्रिय देश है। इतिहास साक्षी है भारत ने किसी देश पर कभी आक्रमण नहीं किया। कुछ हमलावर देश में आए। यहाँ आकर बस गए। उनके साथ प्रेम-भाव और भाईचारा बना हुआ है। यह भी भारत की शांतिप्रिय जनता की महानता है।

भारत में अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं। पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण में रीति-रिवाज और खानपान भिन्न है। यह भिन्नता अलगाव प्रकट नहीं करती। एकता प्रकट करती है। भिन्नता में एकता एक महान भारत की विशेषता है।

हम धन्य हैं कि हमारा इस महान देश में जन्म हुआ। भारत देश की महानता यहाँ के कण-कण में है। हर प्राणी में है। प्रकृति और शस्य-श्यामला धरती इसकी गवाह है। आओ ऐसे महान देश को प्रणाम करें।

(घ) होली

होली का त्योहार रंगों का पर्व है। यह खुशी का और मस्ती का त्योहार है। रंगों की वर्षा में कोई छोटा-बड़ा नहीं होता। होली के दिन सब भेदभाव मिट जाते हैं, सबमें प्रेम का भाव होता है। होली फाल्गुन महीने की पूर्णिमा की रात को मनायी जाती है। अगले दिन रंगों का खेल होता है। उसे फाग खेलना कहते हैं।

होली मनाने के कई कारण बताए जाते हैं। पुराण की एक कथा के अनुसार पुराने जमाने में एक राजा था हिरण्यकश्यप। उसने तपस्या करके शिव जी से कई वरदान प्राप्त कर लिए। वह किसी अस्त्र-शस्त्र से नहीं मर सकता था। किसी मनुष्य से नहीं मारा जा सकता था। वगैरह-वगैरह। वह राजा अभिमानी हो गया। उसने ईश्वर की भक्ति समाप्त कर दी और अपनी भक्ति कराने लगा। उसके पुत्र प्रह्लाद ने इसका विरोध किया। उसने अपने बेटे को मारने की कई कोशिशें की लेकिन उसे न मार सका। राजा की बहन होलिका को वरदान मिला था कि वह आग में नहीं जल सकती। होलिका की गोदी में प्रह्लाद को बिठाकर उसमें आग लगा दी गई। प्रह्लाद का कुछ नहीं बिगड़ा लेकिन होलिका जलकर राख हो गई। अंत में नरसिंह अवतार ने हिरण्यकश्यप का वध किया। होलिका दहन उसी की स्मृति में होता है।

होली वसंत ऋतु का पर्व है। रात को होलिका-दहन के समय लोग उसकी परिक्रमा करते हैं। नाचते हैं, होली गाते हैं और शंख बजाते हैं। कच्चे जौ की बालों को इस आग में भूनते

हैं। जौओं को आपस में बाँटते हैं। गले मिलते हैं और अगले दिन फाग मनाते हैं। इस दिन को दुल्हेंडी कहते हैं। दल्हेंडी के दिन सुबह से ही गलियों में गुलाल उड़ता है। पिचकारी से एक दूसरे पर रंग फेंकते हैं। मस्ती, उल्लास और आनंद से फाग खेलते हैं। प्राचीन समय में पलाश के फूलों का रंग और शुद्ध गुलाल प्रयोग करते थे परंतु उसका स्थान आज रासायनिक रंगों और गुलाल ने ले लिया है।

इन दिनों फसल पक जाती है। किसान इस फसल का पर्व भी मनाते हैं। आजकल होली के खेल में बहुत बुराइयाँ आ गई हैं। बच्चे पानी भरे गुब्बारे मारते हैं। कुछ लोग कीचड़, गोबर और तारकोल आदि का प्रयोग करते हैं। शराब पीकर गालियाँ बकते हैं। पवित्र पर्व अश्लील हो जाता है। खुशी दुख में बदल जाती है।

पर्व हमें प्रेरणा देता है कि हम सभ्य बनें और आचरण में पवित्रता बनाए रखें। होली भी हमें शिक्षा देती है कि बुरी भावनाओं को जलाकर राख कर दें और प्रेम, भाईचारा और मानवता के गुणों से अपने तन-मन को रंग लें। हमारा कर्तव्य है कि ये रंग उतरे नहीं।

(ङ) रेलयात्रा

दशहरे की छुट्टियों में दिल्ली से देहरादून जाने का निश्चय किया। 20 अक्टूबर, 2023 को देहरादून शताब्दी से रेलयात्रा के लिए नई दिल्ली स्टेशन पर पहुँचे। मेरे साथ मेरे दादा जी और छोटी बहन थी। टिकट खिड़की की भीड़ से बच गए, क्योंकि पिता जी ने पहले ही आरक्षित टिकट ले लिया था। रेलगाड़ी के प्लेटफार्म पर आने में देर थी। हम भीड़ भरे प्लेटफार्म पर गाड़ी की प्रतीक्षा करने लगे।

टिकट खिड़की की भीड़ में एक व्यक्ति चीख रहा था। उसकी जेब कट गई थी। वह बार-बार अपनी कमीज, पैंट और कोट की जेबों में हाथ डाल रहा था। मानों कटी हुई जेब का पर्स और पैसे किसी जेब में मिल जाएँगे। आरक्षण के कारण हम ऐसी दुर्घटना से बच गए।

प्लेटफॉर्म पर भीड़ का दृश्य देखा तो दंग रह गए। इसी प्लेटफार्म पर 15 मिनट, 20 मिनट और 30 मिनट के अंतर से कई शताब्दी रेलें छूट रही थीं। देहरादून शताब्दी 7 बजे प्रातः प्रस्थान करती है। हमने आधा घंटा भीड़ और शताब्दियों के छूटने का मजा लिया। हॉकरों की चलती-फिरती दुकानें अचल खड़ी थी। मेरी बहन ने पेप्सी की जिद की। दादाजी ने मुझे पेप्सी लेने भेज दिया। तीन मीटर की दूरी 10 मिनट में तय की। जब लौटा तो खाली हाथ। अच्छा हुआ कि मेरी बहन ने देख लिया कि पेप्सी का गिलास भीड़ के पैरों में कुचल गया। लेकिन इस दुर्घटना के बाद सौम्या ने पेप्सी की जिद नहीं की।

थोड़ी देर में देहरादून शताब्दी स्टेशन पर आ गई। डिब्बे में हम तीनों अपनी सीटों पर जम गए। सामान ऊपर बनी जगह पर रख दिया। डिब्बा साफ-सुथरा था। हमारे सामने सीट के पीछे बने बैग में समाचार-पत्र रखे थे। दादाजी हिंदुस्तान टाइम्स पढ़ने लगे। मैंने नवभारत टाइम्स में चुटकुले पढ़े और सौम्या को सुनाए। एक बैरा आया हमको मिनरल वाटर की एक-एक बोतल और गिलास दे गया। दूसरे फेरे में बैरे ने दो-दो बिस्कुट, तीन-चार टॉफियाँ दे दीं। अब क्या था? हमारे मजे हो गए। चाय भी दी गई लेकिन हमने चाय नहीं पी। दादा जी चाय के दो प्याले मजे-मजे में पी गए। हमें पता भी नहीं चला और गाड़ी गाजियाबाद पार करके मेरठ आ पहुँची।

वातानुकूलित डिब्बे में शीशे के बाहर झाँकने पर गाड़ी रुकी हुई मालूम होती थी और वृक्ष और घर-गाँव पीछे दौड़ते नजर आते थे। हरे-भरे खेत और बाग भी इस दौड़ में शामिल थे। एक के बाद एक स्टेशन आते हम बिना रुके उन स्टेशनों को पार कर जाते। स्टेशन पर खड़े लोग कुछ कहते, कुछ मुस्कुराते मैं भी हाथ हिला देता। पता नहीं मेरा हाथ उन्हें दिख पाता था या नहीं। उसी बीच डिब्बे में घोषणा हुई। कृपया कुर्सी सीधी कर लीजिए, अब नाश्ता परोसा जाएगा। मजेदार नाश्ता आया। मजे-मजे में हमने उसे खाया। थोड़ी देर बाद गाड़ी सहारनपुर स्टेशन पर रुकी। वहाँ हम 20 मिनट तक ठहरे। गाड़ी चली तो उलटी जैसे लौट रही हो। वहाँ से ऐसे ही रास्ता बदलता है।

हरिद्वार रुके और पहुँच गए देहरादून। वहाँ मेरी बुआ और फूफाजी आए। नई दिल्ली से देहरादून तक की रेलयात्रा का सुहावना सफर अकसर याद आता है। हरे-भरे खेतों के दृश्य और डिब्बे की शांति मन में बसी रहती है। नाश्ता भी याद आता है।

(छ) योग और स्वास्थ्य

स्वस्थ शरीर सुखी जीवन का आधार है। यदि हम स्वस्थ हैं तो सुखी रहेंगे। अस्वस्थ व्यक्ति कभी सुखी नहीं रह सकता। स्वस्थ रहने के लिए योग एक लाभप्रद साधन है। स्वास्थ्य और व्यायाम का घनिष्ठ संबंध है। स्वास्थ्य व्यायाम पर निर्भर करता है।

खेल-कूद के लाभ सब जानते हैं। खेल-कूद भी स्वस्थ रहने का साधन है। खेल-कूद के लिए मैदान चाहिए। खेल-सामग्री भी जरूरी है। खेल-कूद खर्चीला सौदा है। व्यायाम में व्यक्ति को नित्य समय पर अभ्यास आवश्यक है।

दंड-बैठक और पी०टी० की कसरत सब व्यायाम के प्रकार हैं। व्यायाम अंग-अंग और संपूर्ण शरीर को पुष्ट और निरोगी बनाता है। योग के आसन भी एक प्रकार का व्यायाम है। व्यायाम से शरीर चुस्त रहता है। चुस्त शरीर में मन-मस्तिष्क भी चुस्त रहते हैं। व्यायाम के प्रति असावधानी तन, मन और मस्तिष्क के विकास में अवरोध बन सकती है। हमारे देश में विद्यालयों के पास खेल के मैदान कम हैं। स्कूल का टाइम टेबल विभिन्न विषयों की पढ़ाई-लिखाई के लिए समर्पित है। पी०टी० के पीरियड में व्यायाम लाभदायक नहीं होते। विद्यार्थियों को सुबह और शाम व्यायाम करना चाहिए। खुला मैदान हो। वहाँ स्वच्छ हवा हो। व्यायाम करते समय व्यक्ति आनंद का अनुभव करे। तब व्यायाम का लाभ मिलता है।

हमारा दुर्भाग्य कहिए या अज्ञानता अभिभावक, अध्यापक और सामान्य नागरिक खेल-कूद और व्यायाम का विरोध करते हैं। इन विद्यार्थियों को पुस्तक-पठन के उपदेश पर उपदेश दिए जाते हैं। व्यायाम पर पाबंदी लगाने के आदेश मिलते हैं। सबको समझना चाहिए कि अच्छे स्वास्थ्य के लिए व्यायाम जरूरी शर्त है।

सारांश में हम कह सकते हैं कि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है। व्यायाम तन और मन के स्वास्थ्य को शक्तिवान बनाता है। अतः नित्य नियम से खुले मैदान में व्यायाम करना चाहिए।

(ज) गणतंत्र दिवस

15 अगस्त, 1947 को भारत स्वतंत्र हो गया था यद्यपि कुछ समय तक शासन चलाने के लिए वही पुराना अंग्रेजी कानून लागू रहा। दिसंबर, 1949 में संविधान सभा ने भारत का नया संविधान तैयार किया। 26 जनवरी, सन् 1950 से यह कानून लागू किया गया जिसमें भारत को एक गणराज्य घोषित किया गया था। इसलिए इस दिन को गणतंत्र दिवस कहा जाता है। भारत में स्वतंत्रता का संग्राम काफी लंबा चला था। 26 जनवरी के दिन का हमारे स्वतंत्रता संग्राम में एक विशेष महत्व है। इसी दिन सन् 1929 में रावी नदी के किनारे संपन्न अधिवेशन में पूर्ण स्वराज्य के लक्ष्य की घोषणा की थी। पं० जवाहरलाल नेहरू जी ने इसके पश्चात प्रथम बार पूरे देश में लोगों ने स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा दोहराई। इसलिए संविधान लागू करने के लिए यही दिन चुना गया।

गणतंत्र दिवस एक राष्ट्रीय पर्व है। जिसे पूरे भारतवर्ष में उल्लासपूर्वक मनाया जाता है। इसी दिन डॉ० राजेंद्र प्रसाद ने प्रथम राष्ट्रपति का पद भार ग्रहण किया था। इस दिन सभी शासकीय भवनों पर तिरंगा झंडा फहराया जाता है। राज्य तथा जिले के मुख्यालय में पुलिस की परेड होती है। इस दिन सार्वजनिक अवकाश रहता है। इस अवसर पर अनेक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। वर्ष भर में भारत के विभिन्न भागों में असाधारण वीरता दिखाने वाले बालकों को राष्ट्रपति पुरस्कार प्रदान करते हैं। वीर सैनिकों को उल्लेखनीय सेवाओं के लिए पुरस्कार दिए जाते हैं। अनेक शिक्षण संस्थाएँ और सरकारी विभाग आकर्षक झाँकियाँ भी निकालते हैं। विद्यालयों में भी राष्ट्रीय पर्व को उत्साह से मनाते हैं। प्रातः काल विद्यालयों में प्रभात फेरी होती है और उसके बाद राष्ट्रगान गाया जाता है। प्रधानाचार्य जी विद्यालय भवन पर राष्ट्रीय ध्वज फहराते हैं।

राजधानी दिल्ली में इस राष्ट्रीय पर्व का भव्य आयोजन होता है। जिसे देखने के लिए देश-विदेश से अनेक व्यक्ति आते हैं। इस अवसर पर भव्य परेड का आयोजन होता है। इनमें सेना के तीनों अंग अपने आधुनिक अस्त्रों से सुसज्जित होकर विजय चौक पर राष्ट्रपति को सलामी देते हैं। इन टुकड़ियों के पीछे एन०सी०सी० कैडेटस और छात्र-छात्राओं के दल होते हैं। अंत में राज्यों की झाँकियाँ और लोक नर्तकों के दल निकलते हैं। दिल्ली की प्रमुख सड़कों से होता हुआ यह जुलूस लाल किले पर समाप्त होता है। कार्यक्रम के अंत में वायु सेना के जहाज अपना करतब दिखाते हैं। गणतंत्र दिवस पर हर भारतीय का हृदय उमंग, उल्लास से भरा रहता है। गणतंत्र दिवस हमें उन शहीदों एवं स्वतंत्रता सेनानियों का स्मरण कराता है, जिनके बलिदान से हम आज स्वतंत्र हवा में साँस ले रहे हैं। किंतु इन शहीदों की कुर्बानी तभी सार्थक होगी, जब हम अपने कर्तव्यों का पूरी ईमानदारी से पालन करें।

1. भाषा, बोली, लिपि और व्याकरण

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) भाषा वह साधन है जिसके द्वारा हम अपने भाव या विचार लिखकर या बोलकर दूसरों के सामने प्रकट करते हैं तथा दूसरों के भाव या विचार स्वयं समझते हैं।

भाषा के दो रूप होते हैं–1. मौखिक भाषा 2. लिखित भाषा।

(ख) जिस भाषा को बच्चे की माँ बोलती है उसी भाषा को बच्चा सीख लेता है। जैसे–यदि बच्चे की माँ पंजाबी बोलती है, तो बच्चा भी पंजाबी सीख लेता है और यही उसकी मातृभाषा बन जाती है। अतः वह भाषा जिसे बच्चा अपने परिवार से सीखता है, उसे मातृभाषा कहते हैं।

(ग) क्षेत्र विशेष में बोली जाने वाली भाषा का रूप बोली कहलाता है।

(घ) भारत की राजभाषा हिंदी और अंग्रेजी हैं।

(ङ) व्याकरण वह शास्त्र है जो भाषा के वर्णों, शब्दों और वाक्यों को शुद्ध बोलना, पढ़ना और प्रयोग करना सिखाता है।

व्याकरण के तीन अंग माने गए हैं–

1. वर्ण-विचार 2. शब्द विचार 3. वाक्य विचार।

1. **वर्ण-विचार**–व्याकरण के इस अंग में वर्णोंके स्वरूप, भेद, आकार, उच्चारण, उत्पत्ति आदि पर विचार किया जाता है।
2. **शब्द विचार**–व्याकरण के इस अंग में शब्द के स्वरूप, भेद, प्रकार, लिंग वचन, विराम-चिह्न आदि का वर्णन किया जाता है।
3. **वाक्य विचार**–वाक्य-विचार व्याकरण का वह अंग है जिसमें वाक्य रचना, वाक्य-विश्लेषण, भेद, विराम-चिह्न आदि का वर्णन किया जाता है।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) भारत की राजभाषा **हिंदी और अंग्रेजी** है।

(ख) भाषा शब्द **भाष्** धातु से बना है।

(ग) **बोलना** भाषा का आरंभिक रूप है।

(घ) बोली का क्षेत्र **सीमित** होता है।

(ङ) व्याकरण का शब्दार्थ है– **विश्लेषण**।

3. हाँ अथवा नहीं में उत्तर दीजिए–

(क) नहीं (ख) नहीं (ग) नहीं

(घ) नहीं (ङ) हाँ

4. निम्नलिखित देशों की भाषा का नाम लिखिए–

(क)	फ्रांस	**फ्रांसीसी**	(ख)	पाकिस्तान	**उर्दू**
(ग)	चीन	**चीनी**	(घ)	रूस	**रूसी**
(ङ)	ईरान	**पार्शियन**	(च)	सऊदी अरब	**अरबी**

5. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (iii) पत्र लिखना (ख) (ii) राजभाषा

(ग) (iv) बोली (घ) (i) देवनागरी

2. वर्ण-विचार

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) **वर्ण**–लिखित भाषा की सबसे छोटी ध्वनि जिसके टुकड़े नहीं किए जा सकते, उसे वर्ण कहते हैं।

वर्णमाला–वर्णों के व्यवस्थित तथा क्रमबद्ध समूह को 'वर्णमाला' कहते हैं।

(ख) जिन वर्णों का उच्चारण करते समय वायु मुख से बिना किसी अवरोध के बाहर आ जाती है, उसे स्वर कहते हैं। हिंदी में निम्नलिखित 11 स्वर हैं– अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ।

स्वर के तीन भेद होते हैं–

1. ह्रस्व स्वर 2. दीर्घ स्वर 3. प्लुत स्वर

1. **ह्रस्व स्वर**–जिन स्वरों का उच्चारण करते समय सबसे कम समय लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। ह्रस्व स्वर चार हैं–अ, इ, उ, ऋ।
2. **दीर्घ स्वर**–जिन स्वरों का उच्चारण करने में ह्रस्व स्वरों से दोगुना समय लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। ये सात वर्ण दीर्घ स्वर हैं–आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।
3. **प्लुत स्वर**–जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वरों से तीन गुना अधिक समय लगता है, उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं। प्लुत स्वर को लिखते समय स्वर के आगे हिंदी की गिनती का ३ लिखा जाता है। जैसे–ओ३म्।

(ग) जो वर्ण दो भिन्न-भिन्न व्यंजनों के परस्पर जुड़ाव से निर्मित होता है, उसे संयुक्त व्यंजन कहते हैं; जैसे– क्ष = क् + ष् त्र = त् + र

जब एक व्यंजन-ध्वनि अपने समान अन्य व्यंजन ध्वनि से जुड़ती है, तो द्वित्व व्यंजन बनता है; जैसे–

क् + क = क्क (पक्का) च् + च = च (सच्चा)

(घ) अयोगवाह के तीन भेद होते हैं–1. अनुस्वार 2. अनुनासिक 3. विसर्ग।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) सभी व्यंजन **स्वरों** की सहायता से बोले जाते हैं।

(ख) दीर्घ स्वर में ह्रस्व स्वर से **दुगुना** समय लगता है।

(ग) दो भिन्न व्यंजनों के योग से बने वर्ण **संयुक्त** व्यंजन कहलाते हैं।

(घ) अनुस्वार और विसर्ग को **अयोगवाह** कहते हैं।

(ङ) ऑ एक **आगत** ध्वनि है।

3. अनुस्वार (ं), अनुनासिक (ँ) या विसर्ग (:) के चिह्न का प्रयोग करते हुए शब्द बनाइए–

(क) प्रात **प्रातः** (ख) अतिम **अंतिम**

(ग) माद **माँद** (घ) खासी **खाँसी**

(ङ) अनत **अनंत** (च) चादनी **चाँदनी**

4. दिए गए वर्णों के उच्चारण-स्थान लिखिए–

(क) ख **कंठ्य** (ख) झ **तालव्य**

(ग) ठ **मूर्धन्य** (घ) ल **दंत्य**

(ङ) म **ओष्ठ्य** (च) ञ **नासिक्य**

(छ) अँ **नासिक्य** (ज) श **तालव्य**

5. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (i) तीन

(ख) (iii) वर्णमाला

(ग) (ii) व्यंजन

3. शब्द-विचार

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) वर्णों का वह समूह जिसका कोई अर्थ होता है, शब्द कहलाता है।

(ख) शब्द-भेद के चार आधार हैं–

(अ) उत्पत्ति के आधार पर

(ब) रचना के आधार पर

(स) अर्थ के आधार पर

(द) प्रयोग के आधार पर

(ग) **तत्सम और तद्भव शब्दों में भेद–**

तत्सम शब्द संस्कृत भाषा के वे शब्द हैं जो हिंदी भाषा में बिना किसी परिवर्तन के प्रयोग किए जाते हैं; जैसे–रात्रि, हस्त, अग्नि आदि। जबकि तद्भव शब्द संस्कृत भाषा के वे शब्द हैं जो हिंदी भाषा में रूप बदलकर प्रयोग किए जाते हैं; जैसे–रात, हाथ, आग आदि।

(घ) **विकारी व अविकारी शब्दों में अंतर–**

वाक्यों में प्रयुक्त होने पर विकारी शब्दों पर लिंग, वचन, कारक का प्रभाव पड़ता है, जबकि अविकारी शब्दों पर लिंग, वचन, कारक का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है; जैसे–

- लड़का दौड़ रहा है।
- लड़की दौड़ रही है।

→ 'लड़का-लड़की' विकारी शब्द।

- लड़का तेज दौड़ रहा है।
- लड़की तेज दौड़ रही है।

→ 'तेज' अविकारी शब्द।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) 'माँग-पत्र' शब्द एक **संकर** शब्द है।

(ख) 'उलूक' का तद्भव रूप **उल्लू** है।

(ग) उत्पत्ति के आधार पर शब्दों को **पाँच** भागों में बाँटा गया है।

(घ) दो या दो से अधिक वर्णों के सार्थक समूह को **शब्द** कहा जाता है।

(ङ) अर्थ के आधार पर शब्दों को **चार** भागों में बाँटा जाता है।

3. हाँ अथवा नहीं में उत्तर दीजिए–

(क) नहीं (ख) हाँ (ग) हाँ

(घ) नहीं (ङ) हाँ

4. निम्नलिखित के तद्भव रूप लिखिए–

(क)	मयूर	**मोर**	(ख)	कूप	**कुआँ**
(ग)	स्वर्ण	**सोना**	(घ)	पत्र	**पत्ता**
(ङ)	दुग्ध	**दूध**	(च)	उष्ट्र	**ऊँट**

5. निम्नलिखित के तीन-तीन उदाहरण लिखिए–

(क)	रूढ़ शब्द	**कमरा**	**घड़ी**	**सेना**
(ख)	यौगिक शब्द	**प्रधानमंत्री**	**पाठशाला**	**सेनापति**
(ग)	योगरूढ़ शब्द	**नीलकंठ**	**दशानन**	**गजानन**
(घ)	देशज शब्द	**खटिया**	**पगड़ी**	**लोटा**

6. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (i) (ख) (iv) (ग) (iii)

(घ) (i) (ङ) (i)

4. उपसर्ग

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) जो शब्दांश मूल शब्दों के आरंभ में जुड़कर उनके अर्थ में विशेषता या परिवर्तन ला देते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते हैं; जैसे–अ + भाव = अभाव, प्र + बल = प्रबल, वि + देश = विदेश, अप + मान = अपमान आदि।
यहाँ मूल शब्दों में जुड़े 'अ', 'प्र', 'वि', 'अप' शब्दांश उपसर्ग हैं।

(ख) उपसर्ग चार प्रकार के होते हैं–(i) संस्कृत के उपसर्ग (ii) हिंदी के उपसर्ग (iii) उर्दू के उपसर्ग (iv) उपसर्ग की तरह प्रयोग किए जाने वाले संस्कृत के अव्यय।

(ग) संस्कृत के उपसर्गों के पाँच शब्द हैं–स्वतंत्र, उत्थान, तत्काल, निर्बल, अनादर।

2. निम्नलिखित शब्दों में से उपसर्ग अलग करके लिखिए–

(क)	प्रबंध	**प्र**	(ख)	सम्मान	**सम्**
(ग)	भरमार	**भर**	(घ)	अत्याचार	**अति**
(ङ)	निवास	**नि**	(च)	अभिनव	**अभि**

3. निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग लगाकर दो-दो नए शब्द बनाइए–

(क)	मान	**अपमान**	**सम्मान**	(ख)	जय	**पराजय**	**विजय**
(ग)	गुण	**अवगुण**	**निर्गुण**	(घ)	कार	**उपकार**	**प्रतिकार**
(ङ)	जान	**अनजान**	**सुजान**	(च)	फल	**सफल**	**निष्फल**

4. निम्नलिखित उपसर्गों से दो-दो शब्द बनाइए–

(क) अभि **अभिलाषा अभिनय** (ख) अनु **अनुगमन अनुरूप**
(ग) प्रति **प्रतिकूल प्रतिबिंब** (घ) गैर **गैरकानूनी गैरमुल्क**
(ङ) कु **कुसंगति कुकर्म**

5. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (i) (ख) (iii) (ग) (iii) (घ) (iii)

5. प्रत्यय

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) जो शब्दांश मूल शब्द के अंत में जुड़कर नए शब्दों का निर्माण करते हैं, उन्हें प्रत्यय कहते हैं।

(ख) प्रत्यय के दो भेद हैं–

(i) कृत् प्रत्यय–क्रिया के धातु रूप के अंत में लगने वाले प्रत्ययों को कृत् प्रत्यय कहते हैं। कृत् प्रत्ययों के योग से बने शब्दों को कृदंत (कृत् + अंत) कहते हैं।

(ii) तद्धित प्रत्यय–जो प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि में जुड़कर नए शब्द बनाते हैं, उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते हैं।

(ग) **कृत् प्रत्यय**–क्रिया के धातु रूप के अंत में लगने वाले प्रत्ययों को कृत् प्रत्यय कहते हैं; जैसे–लिख + आवट = लिखावट, पढ़ + आई = पढ़ाई आदि।
यहाँ 'लिख' और 'पढ़' क्रिया के धातु रूप हैं; अतः लिखावट, पढ़ाई शब्द कृत् प्रत्यय के उदाहरण हैं।

2. हाँ अथवा नहीं में उत्तर दीजिए–

(क) हाँ (ख) हाँ (ग) हाँ (घ) नहीं (ङ) हाँ

3. 'त्व' प्रत्यय जोड़कर भाववाचक संज्ञाएँ बनाइए–

(क) पुरुष **पुरुषत्व** (ख) निज **निजत्व**
(ग) मम **ममत्व** (घ) वीर **वीरत्व**
(ङ) देव **देवत्व** (च) बंधु **बंधुत्व**

4. निम्नलिखित प्रत्ययों से दो-दो शब्द बनाइए–

(क) ईय **भारतीय राष्ट्रीय** (ख) हरा **सुनहरा इकहरा**
(ग) नी **सूँघनी सुमरनी** (घ) वान **बलवान धनवान**
(ङ) आऊ **बिकाऊ टिकाऊ**

5. निम्नलिखित शब्दों में से मूल शब्द और प्रत्यय अलग-अलग करके लिखिए–

(क) चिकनाहट – **चिकना** + **आहट** (ख) बिछौना – **बिछ** + **औना**
(ग) सुरीला – **सुर** + **ईला** (घ) घराना – **घर** + **आना**
(ङ) स्वर्गीय – **स्वर्ग** + **ईय** (च) मार्मिक – **मर्म** + **इक**
(छ) श्रीमती – **श्री** + **मती** (ज) आदरणीय – **आदर** + **नीय**

6. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (i) (ख) (i) (ग) (i)

6. संधि

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) दो वर्णों के परस्पर मेल से जो विकार या परिवर्तन होता है, उसे संधि कहते हैं; जैसे–छात्र + आवास = छात्रावास।

यहाँ 'छात्र' शब्द के अंतिम वर्ण 'अ' का 'आवास' शब्द के प्रथम वर्ण 'आ' से मेल होने पर छात्रावास शब्द बना है। यह विकार या परिवर्तन ही संधि है।

(ख) संधि के मुख्यतः तीन भेद होते हैं–

(i) स्वर संधि–स्वरों के आपस में मिलने से जो परिवर्तन होता है, उसे स्वर संधि कहते हैं।

(ii) व्यंजन संधि–व्यंजन का व्यंजन अथवा किसी स्वर से मेल होने पर जो विकार उत्पन्न होता है, उसे व्यंजन संधि कहते हैं।

(iii) विसर्ग संधि–विसर्ग का किसी स्वर या व्यंजन से मेल होने पर विसर्ग में उत्पन्न होने वाले विकार को विसर्ग संधि कहते हैं।

(ग) स्वरों के आपस में मिलने से जो परिवर्तन होता है, उसे स्वर संधि कहते हैं।

(घ) व्यंजन का व्यंजन अथवा किसी स्वर से मेल होने पर उत्पन्न होने वाला विकार व्यंजन संधि है; जैसे–

वाक् + दान = वाग्दान, उत् + चारण = उच्चारण आदि।

(ङ) विसर्ग का किसी स्वर या व्यंजन से मेल होने पर विसर्ग में उत्पन्न होने वाले विकार को विसर्ग संधि कहते हैं; जैसे–

तपः + वन = तपोवन, नमः + ते = नमस्ते, निः + कलंक = निष्कलंक।

2. हाँ अथवा नहीं में उत्तर दीजिए–

(क) हाँ (ख) हाँ (ग) हाँ

(घ) नहीं (ङ) नहीं

3. निम्नलिखित शब्दों में संधि कीजिए तथा भेद बताइए–

(क)	धर्म + आत्मा	**धर्मात्मा**	**दीर्घ स्वर संधि**
(ख)	पुस्तक + आलय	**पुस्तकालय**	**दीर्घ स्वर संधि**
(ग)	जगत् + ईश्वर	**जगदीश्वर**	**व्यंजन संधि**
(घ)	सु + अच्छ	**स्वच्छ**	**यण् स्वर संधि**
(ङ)	महा + उदय	**महोदय**	**गुण स्वर संधि**
(च)	सूर्य + उदय	**सूर्योदय**	**गुण स्वर संधि**

4. निम्नलिखित शब्दों में संधि-विच्छेद कीजिए–

(क)	संसार	**सम् + सार**	(ख)	निरोग	**निः + रोग**
(ग)	महर्षि	**महा + ऋषि**	(घ)	भारतेंदु	**भारत + इंदु**
(ङ)	उज्ज्वल	**उत् + ज्वल**	(च)	सज्जन	**सत् + जन**

5. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (ii) (ख) (ii) (ग) (iv)

(घ) (ii) (ङ) (iv)

7. समास

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) परस्पर संबंध रखने वाले दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से नया शब्द बनाने की प्रक्रिया को समास कहते हैं।

(ख) समास के मुख्य छह भेद होते हैं–

(i) तत्पुरुष समास (ii) अव्ययीभाव समास

(iii) कर्मधारय समास (iv) बहुव्रीहि समास

(v) द्विगु समास (vi) द्वंद्व समास

(ग) **संधि और समास में अंतर–**

संधि दो वर्णों का मेल है। संधि में उच्चारण करने के नियमों के अनुसार कहीं एक वर्ण में तो कहीं दोनों वर्णों में परिवर्तन होता है; जैसे–विद्या + अर्थी = विद्यार्थी। जबकि समास दो या दो से अधिक शब्दों का मेल है।

समास में दो या दो से अधिक शब्दों का रूप नहीं बदलता, बल्कि उनके बीच की विभक्तियों तथा अन्य शब्दों का लोप हो जाता है; जैसे–पाठ के लिए शाला = पाठशाला।

संधि का शब्दों के अर्थ पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, लेकिन समास का शब्दों के अर्थों पर कुछ-न-कुछ प्रभाव जरूर पड़ता है क्योंकि समास के कारण एक नया शब्द बन जाता है।

यदि + अपि = यद्यपि (अर्थ पर कोई प्रभाव नहीं)

दश + मुख = दशमुख (अर्थ में परिवर्तन)

(घ) समास-विग्रह का अर्थ है–सामासिक शब्दों के बीच के संबंध को स्पष्ट करना।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) **तत्पुरुष** समास में दूसरा पद प्रधान होता है।

(ख) द्विगु समास में **पूर्व** पद संख्यावाची होता है।

(ग) अव्ययीभाव समास में **पहला** पद अव्यय होता है।

(घ) तत्पुरुष समास में दोनों शब्दों के मध्य आने वाले **परसर्गों** का लोप हो जाता है।

(ङ) **द्वंद्व** समास का विग्रह करने पर 'और', 'तथा', 'एवं', 'व' आदि लग जाते हैं।

3. हाँ अथवा नहीं में उत्तर दीजिए–

(क) नहीं (ख) नहीं (ग) हाँ

4. दिए गए विग्रह से समस्तपद और समास लिखिए–

(क)	काली है मिर्च	**कालीमिर्च**	**कर्मधारय समास**
(ख)	दूध और दही	**दूध-दही**	**द्वंद्व समास**
(ग)	चार हैं मुख जिसके	**चतुर्मुख**	**बहुव्रीहि समास**
(घ)	मद से अंधा	**मदांध**	**करण तत्पुरुष समास**
(ङ)	रात ही रात में	**रातोंरात**	**अव्ययीभाव समास**

5. दिए गए समस्तपदों का विग्रह कीजिए तथा समास का नाम भी लिखिए–

(क)	यथाशक्ति	**शक्ति के अनुसार**	**अव्ययीभाव समास**
(ख)	मृगनयनी	**मृग के समान नयनों वाली है जो (स्त्री विशेष)**	**बहुव्रीहि समास**
(ग)	तुलसीकृत	**तुलसी द्वारा कृत**	**करण तत्पुरुष समास**
(घ)	महाराजा	**महान है जो राजा**	**कर्मधारय समास**
(ङ)	हृदयहीन	**हृदय से हीन**	**अपादान तत्पुरुष समास**

6. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (i) (ख) (iv) (ग) (ii) (घ) (iii)

8. शब्द-भंडार

अभ्यास-कार्य

पर्यायवाची शब्द

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) जो शब्द एक समान अर्थ प्रकट करते हैं, उन्हें पर्यायवाची शब्द कहते हैं।

(ख) पर्यायवाची शब्द को समानार्थी शब्द के नाम से भी पुकारते हैं।

2. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए–

(क)	दिन	**दिवस**	(ख)	गंगा	**भागीरथी**
(ग)	आनंद	**प्रसन्नता**	(घ)	अग्नि	**आग**
(ङ)	मेघ	**जलद**	(च)	मित्र	**दोस्त**
(छ)	अलि	**भौंरा**	(ज)	सोना	**स्वर्ण**

3. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (ii) (ख) (iv) (ग) (i) (घ) (ii)

विलोम शब्द

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) एक-दूसरे का विपरीत अर्थ देने वाले शब्द विलोम शब्द कहलाते हैं।

(ख) सुख-**दुख** = सुख-दुख तो जीवन में आते-जाते रहते हैं।

लाभ-**हानि** = व्यापार में लाभ-हानि का जोखिम उठाने वाला व्यक्ति ही सफल होता है।

प्राचीन-**नवीन** = प्राचीन और नवीन इमारतों की बनावट में जमीन आसमान का अंतर है।

2. निम्नलिखित वाक्यों में रंगीन शब्दों के विलोम शब्द लिखकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) आज देश के **रक्षक** ही **भक्षक** बन गए हैं।

(ख) व्यापार में कभी **लाभ** होता है तो कभी **हानि**।

(ग) हमें बड़ों का हमेशा **आदर** करना चाहिए न कि **निरादर**।

(घ) **सज्जन** व्यक्तियों की सभी प्रशंसा करते हैं, जबकि **दुर्जन** व्यक्तियों की निंदा।

(ङ) सूर्य **पूरब** में **उदय** होता है और **पश्चिम** में **अस्त**।

3. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–

	शब्द	**विलोम**		**शब्द**	**विलोम**
(क)	इष्ट	**अनिष्ट**	(ख)	आदि	**अंत**
(ग)	स्वर्ग	**नरक**	(घ)	कठोर	**कोमल**
(ङ)	अनुज	**अग्रज**	(च)	चतुर	**मूर्ख/मूढ़**
(छ)	स्वदेश	**विदेश**	(ज)	घृणा	**प्रेम**

4. उचित विलोम शब्द पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (iv) (ख) (i) (ग) (ii) (घ) (iii) (ङ) (iii)

अनेकार्थक शब्द

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) कुछ शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं, उन्हें अनेकार्थक शब्द कहते हैं।

(ख) **बल**–बुद्धि बल के द्वारा कठिन-से-कठिन समस्याओं को सुलझाया जा सकता है। क्रूर कंस में दस हजार हाथियों का बल था।

2. निम्नलिखित अनेकार्थक शब्दों के विभिन्न अर्थ लिखिए–

(क)	अमृत	**दूध**	**जल**	**सुधा**
(ख)	अंक	**निशान**	**संख्या**	**गोद**
(ग)	कर	**हाथ**	**सूँड़**	**टैक्स**
(घ)	पट	**कपड़ा**	**परदा**	**किवाड़**
(ङ)	फल	**परिणाम**	**खाने वाला फल**	**लाभ**

3. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (ii) (ख) (i) (ग) (iii) (घ) (iii)

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) भाषा में संक्षिप्तता, गंभीरता तथा प्रभावशीलता लाने हेतु अनेक शब्दों के लिए एक शब्द का प्रयोग किया जाता है।

(ख) 'क्षण भर में नष्ट होने वाला' के लिए एक शब्द 'क्षणभंगुर' है।

2. कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से सही शब्द चुनकर लिखिए–

(क) चित्रकार (ख) निम्नलिखित (ग) नागरिक

(घ) सदाचारी (ङ) आस्तिक (च) अजर

3. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (ii) (ख) (i) (ग) (i) (घ) (iv)

श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द

1. श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द से क्या आशय है? लिखिए।

श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द वे शब्द कहलाते हैं, जो सुनने में एक समान प्रतीत होते हैं, परंतु उनके अर्थ परस्पर भिन्न होते हैं।

2. कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से उचित शब्द का प्रयोग करते हुए रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) बृहस्पति एक बड़ा **ग्रह** है।

(ख) मेरा घर नदी के इस **ओर** है।

(ग) प्रार्थना सभा में सभी विद्यार्थी **क्रम** में खड़े हैं।

(घ) किसान खेतों में **अन्न** उगाता है।

(ङ) चाँदनी रात में समुद्र की **तरंग** ऊँची उठती है।

3. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ स्पष्ट करने के लिए इन्हें वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) शस्त्र – दानवीर कर्ण **शस्त्र**-विद्या में निपुण थे।

शास्त्र – ज्योतिष **शास्त्र** में शनि को न्याय का देवता माना गया है।

(ख) वसन – सुंदर **वसन** और आभूषण स्त्री के सौंदर्य में वृद्धि करते हैं।

व्यसन – हिमांशु झूठ बोलने और नशा करने के **व्यसन** का आदी है।

एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्द

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) ऐसे शब्द जो प्रायः मिलते-जुलते अर्थ वाले होते हैं, परंतु उनके अर्थ में थोड़ा-सा अंतर अवश्य होता है, उन्हें एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्द कहते हैं।

(ख) (i) स्नेह (बराबर वालों के प्रति प्रेम)–छात्र-छात्राओं में परस्पर स्नेह होना चाहिए।

वात्सल्य (माता-पिता का बच्चों के प्रति प्रेम)–माता यशोदा का कृष्ण के प्रति वात्सल्य अद्वितीय था।

(ii) संतोष (जितना मिले उसी में खुश रहना)–सज्जन संतोषी स्वभाव के होते हैं।

तृप्ति (इच्छा की पूर्ति होना)–कई दिनों के बाद घर का भोजन खाने पर तृप्ति मिली।

2. वाक्यों में प्रयोग करते हुए निम्नलिखित शब्दों के अर्थ-भेद स्पष्ट कीजिए–

(क) अमूल्य तुम्हारी व्यर्थ की बातों में मेरा **अमूल्य** समय नष्ट हो गया।

बहुमूल्य सोना एक **बहुमूल्य** धातु है।

(ख) श्रम श्रमिक **श्रम** करके अपने परिवार का पालन-पोषण करते हैं।

परिश्रम **परिश्रम** ही सफलता की कुंजी है।

(ग) समीर — प्रातःकालीन **समीर** में भ्रमण करना स्वास्थ्य के लिए अच्छा होता है।
पवन — बसंत ऋतु में **पवन** के झोंकों से सभी झूम उठते हैं।
(घ) ग्रंथ — 'रामचरितमानस' तुलसीदास जी द्वारा रचित **ग्रंथ** है।
पुस्तक — यह **पुस्तक** संजना ने मुझे उपहार में दी है।

9. संज्ञा

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) किसी प्राणी, व्यक्ति, वस्तु, स्थान अथवा भाव का बोध कराने वाले शब्दों को संज्ञा कहते हैं; जैसे–शेर, नीलम, सागर, रामायण, दिल्ली, विद्यालय, फल, सुंदरता, बचपन आदि।

(ख) संज्ञा के पाँच भेद होते हैं–(i) व्यक्तिवाचक संज्ञा (ii) जातिवाचक संज्ञा (iii) भाववाचक संज्ञा (iv) समूहवाचक संज्ञा (v) द्रव्यवाचक संज्ञा।

(ग) जो शब्द किसी प्राणी, वस्तु अथवा स्थान की पूरी जाति का बोध कराते हैं, वे जातिवाचक संज्ञा कहलाते हैं।

(घ) जिन शब्दों से वस्तुओं, स्थानों व प्राणियों आदि के गुण-दोष, अवस्था, भाव का ज्ञान होता है, वे भाववाचक संज्ञा कहलाते हैं; जैसे–

उसे नौकरी नहीं मिली। कृष्ण बचपन में बहुत शरारती थे।
महँगाई दिन पर दिन बढ़ती जा रही है।

उपर्युक्त वाक्यों में प्रयुक्त नौकरी, बचपन और महँगाई शब्द प्राणियों आदि के गुण-दोष आदि का बोध करा रहे हैं। ये सभी भाववाचक संज्ञा के उदाहरण हैं।

(ङ) जिस संज्ञा शब्द से किसी द्रव्य का बोध होता है, उसे द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं।

2. दिए गए शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) साहस **सफलता** की कुंजी है।
(ख) **खेल-कूद** में मैं प्रथम आया हूँ।
(ग) वे उसकी **उड़ान** देखकर चकित हो गए।
(घ) सच ही कहा है **एकता** में बड़ी शक्ति होती है।
(ङ) नदी का **बहाव** बहुत तेज था।

3. निम्नलिखित शब्दों में से व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक संज्ञाएँ छाँटकर लिखिए–

(क) व्यक्तिवाचक – **ताजमहल, महात्मा गांधी, नितिन, शंकराचार्य, विजय, डॉ० राजेंद्र प्रसाद**
(ख) जातिवाचक – **फूल, गाय, बर्तन, नदी, पर्वत, स्त्री**

(ग) भाववाचक – **लड़कपन** **सुंदरता** **मिठास**
वीरता **मित्रता** **बुढ़ापा**

4. निम्नलिखित शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाइए–

(क)	नौकर	**नौकरी**	(ख)	बच्चा	**बचपन**
(ग)	पशु	**पशुता**	(घ)	मीठा	**मिठास**
(ङ)	पढ़ना	**पढ़ाई**	(च)	माता	**मातृत्व**
(छ)	भक्त	**भक्ति**	(ज)	मित्र	**मित्रता**

5. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (i) (ख) (iv) (ग) (iv) (घ) (i) (ङ) (i)

10. लिंग

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) शब्द के जिस रूप से यह पता चलता है कि वह पुरुष जाति का है अथवा स्त्री जाति का, उसे लिंग कहते हैं।

(ख) लिंग के दो भेद होते हैं–

(i) पुल्लिंग–जो शब्द पुरुष जाति का बोध कराते हैं, उन्हें पुल्लिंग कहते हैं।

(ii) स्त्रीलिंग–जो शब्द स्त्री जाति का बोध कराते हैं, उन्हें स्त्रीलिंग कहते हैं।

(ग) जो शब्द स्त्री जाति का बोध कराते हैं, उन्हें स्त्रीलिंग कहते हैं; जैसे–लड़की, मोरनी, दादी, शेरनी, तितली आदि।

2. रंगीन शब्दों का लिंग परिवर्तन करके रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) कक्षा में **छात्र** और **छात्रा** पढ़ रहे हैं।

(ख) उसके पास एक **गाय** और एक **बैल** है।

(ग) **नारी** को **नर** के समान अधिकार मिलना चाहिए।

(घ) हमारे देश में अनेक **विद्वान** हैं तो अनेक **विदुषी** भी हैं।

(ङ) रणबीर कपूर **अभिनेता** है तो रानी मुखर्जी **अभिनेत्री** है।

3. नित्य पुल्लिंग रहने वाले छह शब्द लिखिए–

कछुआ	खटमल	उल्लू
बाज	कौआ	खरगोश

4. निम्नलिखित शब्दों के लिंग निर्धारित कीजिए–

(क)	वर	**पुल्लिंग**	(ख)	पंडित	**पुल्लिंग**
(ग)	कवयित्री	**स्त्रीलिंग**	(घ)	माली	**पुल्लिंग**
(ङ)	वक्ता	**पुल्लिंग**	(च)	बगिया	**स्त्रीलिंग**

5. निम्नलिखित शब्दों के लिंग बदलकर लिखिए–

(क)	कोयल	**नर कोयल**	(ख)	बूढ़ा	**बुढ़िया**
(ग)	लेखिका	**लेखक**	(घ)	लुटिया	**लोटा**

(ङ) नायिका **नायक** (च) स्वामी **स्वामिनी**

(छ) भक्त **भक्तिन** (ज) पुजारिन **पुजारी**

6. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए–

(क) कनिका का भाई लिखता है। (ख) लड़के झूल रहे हैं।

(ग) राघव का माली चला गया है। (घ) रमेश का शिष्य पढ़ रहा है।

(ङ) लीची मीठी है। (च) गाय घास खाती है।

7. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (iii) (ख) (i) (ग) (i) (घ) (iii)

11. वचन

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) जिस शब्द से एक या एक से अधिक संख्या का बोध होता है, उसे वचन कहते हैं; जैसे–पुस्तक-पुस्तकें, चूहा-चूहे, जाति-जातियाँ आदि।

(ख) **एकवचन**–जिस शब्द से किसी एक वस्तु, पदार्थ, व्यक्ति आदि का बोध हो, उसे एकवचन कहते हैं।

बहुवचन–जिस शब्द से एक से अधिक वस्तुओं, पदार्थों, व्यक्तियों आदि का बोध हो, उसे बहुवचन कहते हैं।

2. रंगीन शब्दों का वचन बदलकर वाक्यों को पुनः लिखिए–

(क) **छात्रवृंद** पढ़ रहे हैं। (ख) **गमलों** में पानी दो।

(ग) **विद्यार्थी** शांत बैठा है। (घ) हमारी **अध्यापिकाएँ** अच्छा पढ़ाती हैं।

3. निम्नलिखित शब्दों के वचन लिखिए–

(क) वस्तुएँ **बहुवचन** (ख) पुस्तकें **बहुवचन**

(ग) कविता **एकवचन** (घ) कौआ **एकवचन**

(ङ) दवाइयाँ **बहुवचन** (च) शाखा **एकवचन**

4. निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन लिखिए–

(क) नदी **नदियाँ** (ख) माता **माताएँ**

(ग) बेटा **बेटे** (घ) योजना **योजनाएँ**

(ङ) गुड़िया **गुड़ियाँ** (च) साड़ी **साड़ियाँ**

5. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (i) (ख) (ii) (ग) (i)

(घ) (i) (ङ) (ii)

12. कारक

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य के अन्य शब्दों से जाना जाता है, उसे कारक कहते हैं।

(ख) कारक के आठ भेद होते हैं–

(i) कर्ता कारक (ii) कर्म कारक
(iii) करण कारक (iv) संप्रदान कारक
(v) अपादान कारक (vi) संबंध कारक
(vii) अधिकरण कारक (viii) संबोधन कारक

(ग) संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से कार्य करने वाले का बोध हो, उसे कर्ता कारक कहते हैं; जैसे–शारदा ने पत्र लिखा।
इस वाक्य में 'लिखने' का कार्य (क्रिया) 'शारदा' कर रही है। अतः 'शारदा ने' कर्ता कारक है।

(घ) संज्ञा अथवा सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के आधार का बोध हो, उसे अधिकरण कारक कहते हैं।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित कारक-चिह्नों से कीजिए–

(क) कंस मथुरा **का** राजा था।
(ख) शिष्य **को** अपने गुरु **की** आज्ञा माननी चाहिए।
(ग) चित्रकार पेंसिल **से** चित्र बनाते हैं।
(घ) मेज **पर** पुस्तक रख दो।
(ङ) परीक्षार्थी परीक्षा उत्तीर्ण करके अगली कक्षा **में** जाएगा।

3. निम्नलिखित कारक-चिह्नों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) को अध्यापक ने विद्यार्थी **को** डाँटा।
(ख) अरे **अरे** बच्चो! यहाँ मत खेलो।
(ग) से नितिन हॉकी **से** खेल रहा है।
(घ) के लिए नाना जी रिंकी **के लिए** उपहार लाए।
(ङ) पर कोयल पेड़ **पर** बैठी कूक रही है।
(च) की नीता **की** मौसी जी आई हैं।

4. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (i) (ख) (iv) (ग) (iv) (घ) (iv) (ङ) (iii)

13. सर्वनाम

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) संज्ञा के स्थान पर आने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं।

(ख) सर्वनाम के छह भेद होते हैं–

(i) पुरुषवाचक सर्वनाम (ii) निश्चयवाचक सर्वनाम
(iii) अनिश्चयवाचक सर्वनाम (iv) प्रश्नवाचक सर्वनाम
(v) संबंधवाचक सर्वनाम (vi) निजवाचक सर्वनाम

(ग) पुरुषवाचक सर्वनाम तीन प्रकार के होते हैं।

(घ) जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग कर्ता के निजत्व (अपनेपन) के लिए होता है, उन्हें निजवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे–हमें अपना काम खुद करना चाहिए। मैं स्वयं चला जाऊँगा। इन वाक्यों में 'खुद' व 'स्वयं' निजवाचक सर्वनाम हैं।

(ङ) जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया जाता है, उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं।

2. कोष्ठक में दिए सर्वनाम के उचित रूप द्वारा वाक्यों को पूर्ण कीजिए–

(क) महात्मा गांधी बहुत लोकप्रिय नेता थे। नेताओं की भीड़ तो **उन्हें** घेरे ही रहती थी।

(ख) जब तक **हमारे** शरीर में जान है, **हमें** झूठ बोलने की क्या जरूरत है।

(ग) **जिसे** अवसर मिला वह गद्दी पर चढ़ बैठा।

(घ) **किसी** में सत्य बोलने का साहस नहीं है।

3. हाँ अथवा नहीं में उत्तर दीजिए–

(क) नहीं (ख) नहीं (ग) नहीं (घ) हाँ (ङ) हाँ

4. निम्नलिखित वाक्यों में आए सर्वनाम शब्दों को छाँटकर सामने लिखिए–

(क) उसने (ख) जैसी, वैसी

(ग) मैं, खुद (घ) हमें (ङ) वह

5. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (i) (ख) (iv) (ग) (iii) (घ) (i) (ङ) (ii)

14. विशेषण

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं।

(ख) जिस शब्द की विशेषता बताई जाती है, उसे विशेष्य कहते हैं।

(ग) विशेषण चार प्रकार के होते हैं–

(i) गुणवाचक विशेषण
(ii) संख्यावाचक विशेषण
(iii) परिमाणवाचक विशेषण
(iv) सार्वनामिक विशेषण

(घ) जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम के गुण, दोष, दशा, अवस्था, रंग, आकार आदि का बोध कराते हैं, उन्हें गुणवाचक विशेषण कहते हैं।

(ङ) संख्यावाचक विशेषण दो प्रकार के होते हैं।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) **प्राचीन** इमारतें पुरानी समृद्धि का प्रतीक हैं।

(ख) आकाश में **रंग-बिरंगी** पतंग उड़ रही है।

(ग) **मूसलाधार** वर्षा हो रही है।

(घ) इस सेब का स्वाद बहुत **मीठा** है।

3. निम्नलिखित वाक्यों में से विशेषण छाँटकर उनके भेद लिखिए–

	विशेषण	भेद
(क)	कुछ	अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण
(ख)	अशुद्ध	गुणवाचक विशेषण
(ग)	दो	निश्चित संख्यावाचक विशेषण
(घ)	पवित्र	गुणवाचक विशेषण

4. निम्नलिखित वाक्यों में से विशेष्य व विशेषण छाँटकर लिखिए–

	विशेष्य	विशेषण
(क)	बाल	लंबे
(ख)	अंकुर	ईमानदार
(ग)	लोग	कुछ
(घ)	पशु	उपयोगी
(ङ)	दर्शक	तीस

5. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (i) (ख) (iv) (ग) (i) (घ) (i)

15. क्रिया

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) वे शब्द जिनसे किसी कार्य के करने अथवा होने का बोध होता है, उन्हें क्रिया कहते हैं।

(ख) क्रिया के दो भेद हैं–

(i) सकर्मक क्रिया

(ii) अकर्मक क्रिया

(ग) क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं।

(घ) रचना के आधार पर क्रिया के पाँच भेद हैं–

(i) सामान्य क्रिया

(ii) संयुक्त क्रिया

(iii) नामधातु क्रिया

(iv) प्रेरणार्थक क्रिया

(v) पूर्वकालिक क्रिया

(ङ) संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण शब्दों से बनी क्रियाएँ नामधातु क्रिया कहलाती हैं; जैसे–अर्जुन दरवाजा रँगने लगा है।

2. दी गई उचित क्रियाओं द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) सुधा और शांति बाजार **जाएँगी**।

(ख) गौरव ऊँचा **सुनता** है।

(ग) डॉक्टर ने रोगी को इंजेक्शन **लगाया**।

(घ) जरा मनोहर को **बुला** दीजिए।

(ङ) रमेश ने कॉपी में **लिखा**।

3. हाँ अथवा नहीं में उत्तर दीजिए–

(क) हाँ (ख) हाँ (ग) नहीं (घ) नहीं

4. निम्नलिखित वाक्यों में रचना के आधार पर क्रिया के भेद बताइए–

(क) प्रेरणार्थक क्रिया

(ख) पूर्वकालिक क्रिया

(ग) नामधातु क्रिया

(घ) नामधातु क्रिया

5. निम्नलिखित वाक्यों की क्रियाएँ अकर्मक हैं या सकर्मक, लिखिए–

(क) सकर्मक (ख) सकर्मक

(ग) अकर्मक (घ) सकर्मक

6. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (ii) (ख) (i) (ग) (iii) (घ) (i) (ङ) (iii)

16. काल

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) क्रिया के जिस रूप से उसके होने के समय का पता चले, उसे काल कहते हैं।

(ख) काल तीन प्रकार के होते हैं।

(ग) क्रिया के जिस रूप से आने वाले समय में कार्य के करने या होने का बोध हो, उसे भविष्यत् काल कहते हैं। इसमें क्रिया का अंत 'गा', 'गी', 'गे' आदि से होता है; जैसे–

हम सब मैच जीतेंगे। हम नाटक में भाग लेंगे।

(घ) वर्तमान काल के तीन भेद होते हैं–

(i) सामान्य वर्तमान काल

(ii) अपूर्ण वर्तमान काल

(iii) संदिग्ध वर्तमान काल

2. उचित शब्दों द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) बच्चा रो **रहा है**।

(ख) अधिकांश पक्षी आकाश में **उड़ते हैं**।

(ग) मेरे दादा जी मसूरी **गए**।

(घ) गौतम को प्रथम पुरस्कार **मिला**।

(ङ) तुम बैठो, मैं अभी **आया**।

3. हाँ अथवा नहीं में उत्तर दीजिए–

(क) हाँ (ख) नहीं (ग) हाँ (घ) हाँ (ङ) हाँ

4. निम्नलिखित वाक्यों को कोष्ठक में दिए गए संकेत के अनुसार बदलिए–

(क) विकास इलाहाबाद जा रहा है।

(ख) शिवानी इतिहास पढ़ेगी।

(ग) प्रभात कहानी लिखता था।

(घ) हम यहाँ आ रहे हैं।

(ङ) पिता जी छत पर जाएँगे।

5. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (i) (ख) (iii) (ग) (iii) (घ) (i)

17. अव्यय शब्द

अभ्यास-कार्य

1. क्रियाविशेषण

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) जो शब्द लिंग, वचन, कारक, काल आदि के कारण परिवर्तित नहीं होते अपितु ज्यों-के-त्यों रहते हैं, उन्हें अव्यय शब्द कहते हैं।

(ख) जो शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं, उन्हें क्रियाविशेषण कहते हैं; जैसे–कम, वहाँ, तेज आदि।

(ग) क्रियाविशेषण के चार भेद होते हैं–

(i) स्थानवाचक क्रियाविशेषण–वहाँ, इधर।

(ii) कालवाचक क्रियाविशेषण–प्रतिदिन, आज।

(iii) रीतिवाचक क्रियाविशेषण–धीरे-धीरे, तेज।

(iv) परिमाणवाचक क्रियाविशेषण–पर्याप्त, अधिक।

2. निम्नलिखित वाक्यों में आए क्रियाविशेषण शब्द रेखांकित कीजिए–

(क) प्रेरणा फटाफट दौड़ गई।

(ख) स्वाति अधिक बोलती है।

(ग) प्रकाश धीरे चलता है।

(घ) वह उस तरफ गया है।

3. निम्नलिखित वाक्यों में से क्रियाविशेषण छाँटकर उनके भेदों के नाम भी लिखिए–

	क्रियाविशेषण	भेद का नाम
(क)	तत्काल	कालवाचक क्रियाविशेषण
(ख)	उतना, जितना	परिमाणवाचक क्रियाविशेषण
(ग)	आस-पास	स्थानवाचक क्रियाविशेषण
(घ)	धीरे-धीरे	रीतिवाचक क्रियाविशेषण
(ङ)	बहुत	परिमाणवाचक क्रियाविशेषण

4. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (ii) (ख) (i) (ग) (i) (घ) (iii)

2. संबंधबोधक

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के साथ आकर उनका संबंध वाक्य के दूसरे शब्दों के साथ बताते हैं, उन्हें संबंधबोधक कहते हैं।

(ख) संबंधबोधक के भेद दो आधारों पर किए जाते हैं–

(अ) प्रयोग के आधार पर–प्रयोग के आधार पर संबंधबोधक के दो भेद हैं–

(i) संज्ञा या सर्वनाम के बाद आने वाले परसर्गसहित संबंधबोधक।

(ii) संज्ञा या सर्वनाम के आगे आने वाले परसर्गरहित संबंधबोधक।

(ब) अर्थ के आधार पर–अर्थ के आधार पर संबंधबोधक के छह भेद होते हैं–

(i) कालवाचक, (ii) स्थानवाचक, (iii) समानतावाचक, (iv) विरोधवाचक, (v) संबंधवाचक, (vi) साधनवाचक।

(ग) **संबंधबोधक और क्रियाविशेषण में अंतर–**

कुछ स्थानवाचक और कालवाचक अव्यय संबंधबोधक भी हैं और क्रियाविशेषण भी। जब इनका प्रयोग संज्ञा या सर्वनाम के साथ होता है, तब ये संबंधबोधक कहलाते हैं और जब ये क्रिया की विशेषता प्रकट करते हैं, तब ये क्रियाविशेषण कहे जाते हैं; जैसे–

- वासु यहाँ पढ़ता था। (क्रियाविशेषण)
- तुम अपने गुरु जी के यहाँ पढ़ते थे। (संबंधबोधक)
- अंदर मत आओ। (क्रियाविशेषण)
- घर के अंदर कोई है। (संबंधबोधक)

2. निम्नलिखित संबंधबोधक शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) वह नव्या **की तरह** नाचती है।

(ख) राम, श्याम **सहित** वन में है।

(ग) राधे **की जगह** भानु खेलेगा।

(घ) बच्चा माँ **के बिना** नहीं रह सकता।

(ङ) वह उच्च शिक्षा **के लिए** विदेश गया।

3. निम्नलिखित संबंधबोधक शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) के पीछे शुभम पेड़ **के पीछे** छिपा है।

(ख) की ओर सीमा नदी **की ओर** गई है।

(ग) हेतु पिता जी को आवश्यक कार्य **हेतु** मुंबई जाना पड़ा।

(घ) के बीच उपवन **के बीच** बहुत बड़ा तालाब है।

(ङ) से दूर वह गाँव **से दूर** जंगल में झोंपड़ी बनाकर रहता है।

4. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (i) (ख) (i) (ग) (i)

3. समुच्चयबोधक

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) जो शब्द दो या दो से अधिक शब्दों, वाक्यांशों या वाक्यों को जोड़ते हैं, उन्हें समुच्चयबोधक कहते हैं।

(ख) समुच्चयबोधक के तीन भेद होते हैं–

(i) समानाधिकरण समुच्चयबोधक

(ii) व्यधिकरण समुच्चयबोधक

(iii) विकल्पसूचक समुच्चयबोधक

(ग) जो शब्द आश्रित उपवाक्यों को जोड़ते हैं, वे व्यधिकरण समुच्चयबोधक कहलाते हैं।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति समुच्चयबोधक शब्दों से कीजिए–

(क) कॉपियाँ निकाल लीजिए **जिससे** कि शब्दार्थ लिख सकें।

(ख) विभीषण ने रावण को बहुत समझाया **परंतु** रावण नहीं समझा।

(ग) कम खाओ **अन्यथा** मोटे हो जाओगे।

(घ) मजदूर ने काम किया **इसलिए** उसे मजदूरी मिली।

3. निम्नलिखित अलग-अलग वाक्यों को उचित समुच्चयबोधक शब्दों से जोड़िए–

(क) परीक्षा नजदीक हैं, **इसलिए** छात्र मेहनत कर रहे हैं।

(ख) सभी जानते हैं **कि** सूरज पश्चिम में छिपता है।

(ग) तुलसीदास ने राम की भक्ति की **तथा** सूरदास ने कृष्ण की भक्ति की।

(घ) उसे स्कूल से निकाल दिया गया, **क्योंकि** उसने अनुशासनहीनता की थी।

4. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (iv) (ख) (ii) (ग) (i) (घ) (i)

4. विस्मयादिबोधक

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) जो शब्द हर्ष, घृणा, शोक, आश्चर्य, भय, दुःख या उत्साह आदि भावों को प्रकट करता है, उसे विस्मयादिबोधक कहते हैं।

(ख) छिः-छिः!, दुर्!, धिक्!, थू! आदि घृणासूचक शब्द हैं।

2. रिक्त स्थानों में विस्मयादिबोधक शब्द भरकर इनकी पूर्ति कीजिए–

(क) **वाह!** कितना सुंदर दृश्य है।

(ख) **उफ!** कितना ठंडा है।

(ग) **छिः-छिः!** कितने गंदे कपड़े हैं।

(घ) **ओह!** यह तुमने क्या कर डाला।

(ङ) **अरे!** आप आ गए।

3. निम्नलिखित विस्मयादिबोधक शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) छिः छिः! **छिः छिः!** कितनी गंदगी पड़ी है।

(ख) बाप रे! **बाप रे!** कितना बड़ा अजगर है।

(ग) वाह! **वाह!** क्या छक्का मारा।
(घ) अजी! **अजी!** सुनिए तो।
(ङ) होशियार! **होशियार!** यह स्थान निर्जन है।

18. वाक्य-विचार

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) अपनी बात या विचारों को दूसरों तक पहुँचाने के लिए क्रमबद्ध सार्थक शब्द-समूह की आवश्यकता होती है, जिसे वाक्य कहते हैं।

(ख) वाक्य के प्रकारों को दो आधारों पर बाँटा गया है–

(i) रचना के आधार पर–रचना के आधार पर वाक्य तीन प्रकार के होते हैं– (i) सरल वाक्य (ii) संयुक्त वाक्य (iii) मिश्रित वाक्य

(ii) अर्थ के आधार पर–अर्थ के आधार पर वाक्य आठ प्रकार के होते हैं–

(i) विधानवाचक (ii) निषेधवाचक
(iii) प्रश्नवाचक (iv) संदेहवाचक
(v) संकेतवाचक (vi) आज्ञावाचक
(vii) इच्छावाचक (viii) विस्मयवाचक

2. निम्नलिखित वाक्यों में से उद्देश्य और विधेय अलग-अलग कीजिए–

	उद्देश्य	**विधेय**
(क)	निखिल ने	शानदार शतक लगाया।
(ख)	नौकर ने	घर साफ कर दिया।
(ग)	उसने	सफेद हाथी देखा।
(घ)	मैं	गोवा नहीं जा सकूँगा।
(ङ)	उसने	परीक्षा दी।

3. निम्नलिखित वाक्यों के भेद रचना के आधार पर लिखिए–

(क) संयुक्त वाक्य (ख) सरल वाक्य
(ग) संयुक्त वाक्य (घ) संयुक्त वाक्य

4. निम्नलिखित वाक्यों को निर्देशानुसार बदलकर लिखिए–

(क) वह बाजार जाएगा।
(ख) क्या उसने परीक्षा दी?
(ग) पुलिस को देखकर भी चोर नहीं भागा।
(घ) तुम कक्षा से बाहर जाओ।
(ङ) संभवतः ताजमहल सबसे सुंदर इमारत है।

5. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (iv) (ख) (ii) (ग) (iv)

19. विराम-चिह्न

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) विराम-चिह्न वे चिह्न हैं, जो शब्दों, वाक्यांशों या वाक्यों के बीच या अंत में विराम को प्रकट करने के लिए प्रयोग किए जाते हैं।

(ख) जब किसी वाक्यांश को स्पष्ट किया जाता है, किसी वाक्य के भीतर आए किसी शब्द को स्पष्ट किया जाता है अथवा क्रमसूचक अंकों या अक्षरों को लिखा जाता है, तब वहाँ कोष्ठक चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

(ग) किसी बात को ब्यौरेवार बताने के लिए विवरण-चिह्न (:–) का प्रयोग किया जाता है; जैसे–

क्रिया दो प्रकार की होती है :– (i) सकर्मक क्रिया, (ii) अकर्मक क्रिया।

(घ) लाघव चिह्न वह विराम-चिह्न है, जो शब्दों का संक्षिप्त रूप लिखने के लिए प्रत्येक शब्द के प्रथम अक्षर के पश्चात शून्य (०) के रूप में प्रयुक्त होता है।

2. निम्नलिखित चिह्नों के नाम लिखिए तथा उनका वाक्य में प्रयोग भी कीजिए–

(क) (!) **विस्मयसूचक चिह्न** = हाय! शीला गिर पड़ी।

(ख) (?) **प्रश्नवाचक चिह्न** = तुम्हारे पिता जी का क्या नाम है?

(ग) (–) **निर्देशक चिह्न** = स्वतंत्रता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है–लोकमान्य तिलक।

(घ) (-) **योजक चिह्न** = माता-पिता की आज्ञा का पालन करना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है।

(ङ) (,) **अल्प-विराम** = निधि, प्रिया और स्वाति झूला झूल रही हैं।

3. निम्नलिखित वाक्यों में विराम-चिह्नों का उचित प्रयोग करके पुनः लिखिए–

(क) राजेश नाच रहा है।

(ख) राम, सीता व लक्ष्मण वन गए।

(ग) तुम कहाँ रहते हो?

(घ) वाह! क्या फूल हैं।

(ङ) वनों के निम्नलिखित लाभ हैं–

4. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (iii) (ख) (ii) (ग) (i)

20. मुहावरे और लोकोक्तियाँ

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) सामान्य अर्थात् शाब्दिक अर्थ को छोड़कर विशेष अर्थ को प्रकट करने वाले पदबंध या वाक्यांश मुहावरे कहलाते हैं।

(ख) लोक में प्रचलित उक्ति या कथन को लोकोक्ति कहते हैं।

(ग) **मुहावरे व लोकोक्ति में अंतर–**

मुहावरा एक वाक्यांश या पदबंध है, जिसका अर्थ वाक्य में प्रयोग करने से ही स्पष्ट होता है, परंतु लोकोक्ति अपने आप में पूर्ण वाक्य है। वाक्य में प्रयोग करने पर मुहावरा उस वाक्य का अंश बन जाता है, जबकि लोकोक्ति वाक्य से अलग रहती है; जैसे–

"पुलिस को देखते ही चोर नौ-दो ग्यारह हो गए।" इस वाक्य में 'नौ-दो ग्यारह होना' मुहावरा वाक्य का अंश बन गया है। यदि हम केवल नौ-दो ग्यारह होना कहें तो इसका अर्थ स्पष्ट नहीं होता।

"घर में एक पैसा भी नहीं है, कृपया कुछ रुपये उधार दे दीजिए क्योंकि डूबते को तिनके का सहारा।" इस वाक्य में प्रयुक्त लोकोक्ति वाक्य का अंश नहीं बनी। स्वतंत्र रूप से कहने पर भी इसका अर्थ समझ में आ जाता है।

2. निम्नलिखित वाक्यों को उचित मुहावरों अथवा लोकोक्तियों द्वारा पूरा कीजिए–

(क) मैं तुझे इतना मारूँगा कि छठी **का दूध याद आ जाएगा।**

(ख) नौजवान बेटे के मरते ही बूढ़े बाप पर विपत्तियों का पहाड़ **टूट पड़ा।**

(ग) बड़े दिनों के बाद मिले हो भाई। तुम तो बस ईद **का चाँद हो गए।**

(घ) एक तो मेरी कमीज फाड़ दी, ऊपर से आँख **दिखा रहे हो।**

(ङ) सब ईश्वर की कृपा है। चैन **की बंसी बजा रहे हो।**

(च) उन दोनों को एक कोने में बातें करते देख मैं पहले ही समझ गया था कि दाल में **कुछ काला है।**

(छ) काम निकलते ही उसने आँखें **फेर लीं।**

3. मुहावरों को उनके अर्थों से मिलाइए–

(क) (iv) (ख) (iii) (ग) (ii) (घ) (v)

(ङ) (vi) (च) (vii) (छ) (i)

4. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (iii) (ख) (i) (ग) (iv) (घ) (ii)

21. पत्र-लेखन

अभ्यास

निम्नलिखित विषयों पर पत्र लिखिए–

2. अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को खेलों के सामान की समुचित व्यवस्था करने का आग्रह करते हुए एक पत्र लिखिए।

सेवा में

प्रधानाचार्य महोदय

केंद्रीय विद्यालय
पीतमपुरा, नई दिल्ली
दिनांक 12.8.20 .....
महोदय
सविनय निवेदन यह है कि मैं आपका ध्यान विद्यालय में अपर्याप्त खेल-सामग्री की ओर दिलाना चाहता हूँ। अगले माह 14 सितंबर को हमारे विद्यालय का हॉकी मैच सेंट थॉमस स्कूल से है। इसके लिए विद्यार्थियों को अभ्यास करने हेतु खेल-सामग्री की आवश्यकता होगी। विद्यालय में उपलब्ध खेल-सामग्री खिलाड़ियों के लिए पर्याप्त नहीं है।
विद्यालय का खेल सचिव होने के कारण मैं आपसे विनती करता हूँ कि हमारे विद्यालय में विभिन्न खेलों की समुचित सामग्री उपलब्ध करवाने की कृपा करें, जिससे विद्यार्थियों को खेल के अभ्यास करने में परेशानी न हो तथा वे खेलों में अच्छा प्रदर्शन कर विद्यालय का नाम ऊँचा कर सकें। आशा है आप इस दिशा में उचित कार्यवाही करेंगे।
धन्यवाद।
आपका आज्ञाकारी शिष्य
राकेश
खेल सचिव
कक्षा : सात 'ब'

3. अपने छोटे भाई को कुसंगति से बचने के लिए पत्र लिखिए।

19, जीवन भवन,
आदर्श नगर,
करनाल
18 मई, 20 .....
प्रिय अनिल,
प्रसन्न रहो।
अभी-अभी तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारे पास होने का समाचार पाकर बड़ी प्रसन्नता हुई। अगली कक्षा की पढ़ाई शीघ्र ही आरंभ हो जाएगी। उच्च कक्षाओं में बहुत सावधान रहने की जरूरत है। पिछले दिनों मुझे तुम्हारे मित्र से पता चला कि तुम बुरे लड़कों की संगति में पड़ गए हो, यह सुनकर मुझे अत्यंत दुख हुआ। अतः इसके लिए तुम्हें कुसंगति से बचने का प्रयत्न करना चाहिए। काँजी का थोड़ा-सा जल जैसे सारे दूध को बिगाड़ देता है, ऐसे ही एक गंदा लड़का सब भले लड़कों को बिगाड़ देता है। तुमने खराब सेब का हाल तो पढ़ा ही होगा। एक खराब सेब ने सब अच्छे सेबों को खराब कर दिया था। उसी प्रकार बुरे लड़कों की संगति से सारा समाज बिगड़ जाता है और इससे जीवन अंधकारमय बन जाता है। मुझे आशा है कि तुम मेरी बात पर अवश्य अमल करोगे और अच्छे लड़कों की संगति में रहोगे।
किसी वस्तु की आवश्यकता हो तो लिखो। तुम्हारी भाभी की ओर से आशीर्वाद।
तुम्हारा हितैषी भाई,
वंश कुमार

4. बड़ी बहन द्वारा भाई को रक्षाबंधन के अवसर पर राखी भेजते हुए पत्र।

कमल निवास
7वाँ ब्लॉक, वसंत नगर
कानपुर।
दिनांक : .....
प्रिय अनंत
शुभाशीर्वाद।

कल, तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारे पत्र से ज्ञात हुआ कि तुम इस वर्ष रक्षाबंधन पर घर नहीं आ पाओंगे। पढ़कर थोड़ा मन उदास हो आया। तुमने लिखा इस वर्ष तुम्हें छुट्टी नहीं मिलेगी। मैं तुम्हारे उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हुई इस पत्र के साथ राखी भेज रही हूँ। मैं अपने हाथ से तुम्हें राखी नहीं बाँध पाऊँगी। फिर भी मुझे संतोष रहेगा कि मेरी भेजी राखी तुमने बँधवा ली होगी।

यहाँ सभी कुशल मंगल हैं। माता-पिता तुम्हें याद करते हैं। शुभकामनाओं सहित।

तुम्हारी बहन
आराध्या

22. संवाद-लेखन

अभ्यास

निम्नलिखित विषयों पर संवाद लिखिए–

(क) दो मित्रों के मध्य संवाद-बढ़ते प्रदूषण के बारे में।

रजत – अरे मित्र! आजकल प्रदूषण कितना बढ़ गया है।

पंकज – हाँ मित्र! आज के समय में प्रदूषण एक विकट समस्या बन गया है।

रजत – बढ़ते प्रदूषण का मुख्य कारण बढ़ता औद्योगीकरण है। इसकी वजह से संपूर्ण विश्व का प्राकृतिक संतुलन बिगड़ गया है।

पंकज – हाँ, प्रदूषण का मुख्य कारण वनों की अंधाधुंध कटाई है। वृक्षों के अत्यधिक कटान से ऑक्सीजन जैसी शुद्ध गैस की वातावरण में निरंतर कमी होती जा रही है।

रजत – इस समस्या से निपटने के लिए हमें क्या करना चाहिए?

पंकज – इस स्थिति से निपटने के लिए हमें उचित समाधान ढूँढ़ना होगा। हमें अत्यधिक मात्रा में वृक्षारोपण करना होगा। हमें उत्सर्जित किए जाने वाले धुएँ की मात्रा को नियंत्रित करना होगा। हमें पेट्रोल और कोयले जैसे जीवाश्म ईंधनों के उपभोग को कम करना होगा। इसके स्थान पर हमें वैकल्पिक ईंधन; जैसे– सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, जलीय ऊर्जा के विकास पर ध्यान देना होगा।

(ग) डॉक्टर तथा रोगी के मध्य संवाद-सुबह की सैर की उपयोगिता के विषय में।

रोगी – नमस्ते, डॉक्टर साहब!

डॉक्टर – नमस्ते, अब आपकी तबीयत कैसी है?

रोगी – तबीयत में पहले से काफी सुधार आया है, किंतु पूरे शरीर में दर्द होता है और मन भी चिड़चिड़ा-सा रहता है।
डॉक्टर – क्या तुम सुबह की सैर करने जाते हो?
रोगी – नहीं, मैं सुबह सैर करने नहीं जाता बल्कि घर में ही थोड़ा-बहुत टहल लेता हूँ।
डॉक्टर – आपको प्रतिदिन सुबह की सैर करने जाना चाहिए।
रोगी – अच्छा, उससे मुझे क्या फायदा होगा?
डॉक्टर – सुबह के समय वातावरण शांत और मन को आनंद देने वाला होता है। शुद्ध ऑक्सीजन अधिक मात्रा में उपलब्ध रहती है। अतः ऐसे वातावरण में सैर करने से हमारा स्वास्थ्य ठीक रहता है, शरीर स्फूर्तिवान होता है तथा शरीर के साथ-साथ मन भी ताजगी से भर उठता है।
रोगी – धन्यवाद डॉक्टर साहब! आपने मुझे बहुत उपयोगी बात बताई है। मैं आपके कहे अनुसार ही कार्य करूँगा।
डॉक्टर – बहुत अच्छी बात है।
रोगी – एक बार पुनः आपका धन्यवाद।

(घ) अध्यापक और विद्यार्थी के मध्य संवाद-मासिक परीक्षा की उपयोगिता के विषय में।

विद्यार्थी – नमस्कार, अध्यापक जी।
अध्यापक – नमस्कार, तुम्हारी पढ़ाई कैसी चल रही है?
विद्यार्थी – अच्छी चल रही है, अध्यापक जी।
अध्यापक – देखो, एक सप्ताह बाद तुम्हारी मासिक परीक्षा शुरू हो रही है। मासिक परीक्षा एक विद्यार्थी के लिए बहुत उपयोगी है। यदि तुम इन परीक्षाओं में अच्छे अंक प्राप्त करते हो, तो वार्षिक परीक्षा में अच्छे अंकों से सफलता प्राप्त करोंगे। मासिक परीक्षा, वार्षिक परीक्षा का आधार है।
विद्यार्थी – जी अध्यापक, मैं मासिक परीक्षा की उपयोगिता के विषय में समझ गई हूँ, कि यह परीक्षा हमारे लिए कितनी उपयोगी है।
अध्यापक – यदि किसी विषय में कोई समस्या हो तो उसे बार-बार दोहराना चाहिए।
विद्यार्थी – हाँ, अध्यापक जी मैं मेहनत करूँगी।

23. कहानी-लेखन

अभ्यास

1. अपनी पढ़ी हुई अथवा सुनी हुई ऐसी कहानियाँ लिखिए, जिनसे नीचे लिखी शिक्षाएँ मिलती हों

(क) बुद्धि ही बल है।

किसी गाँव में एक दर्जी रहता था। वह टोपियाँ बनाकर आस-पास के गाँवों में बेचने के लिए जाया करता था। एक दिन की बात है वह प्रतिदिन की भाँति टोपियाँ बेचने जा रहा था। उस दिन बहुत गर्मी थी। वह रास्ते में एक पेड़ के नीचे आराम करने लगा। वह थका हुआ था, इसलिए उसे नींद आ गई।

उस पेड़ पर बहुत सारे बंदर रहते थे। जब दर्जी सो गया तो वे नीचे उतरे। टोपियों को गठरी से निकालकर सिरों पर पहन लिया और फिर पेड़ पर चढ़ गए।

थोड़ी देर बाद दर्जी की नींद खुली तो उसने देखा कि गठरी में एक भी टोपी नहीं है। वह बड़ा दुखी हुआ और इधर-उधर देखने लगा। तभी उसने ऊपर देखा कि उसकी टोपियाँ तो बंदरों के सिरों पर हैं। वह टोपियों को वापस पाने के लिए उपाय सोचने लगा। उसे याद आया कि बंदर नकलची होते हैं। उसने गुस्से में अपनी टोपी उतार कर जमीन पर फेंक दी। यह देखकर बंदरों ने भी अपनी-अपनी टोपियाँ उतारकर जमीन पर फेंक दीं। दर्जी उन्हें इकट्ठा करके प्रसन्नतापूर्वक अपने मार्ग पर चल दिया।

शिक्षा–बुद्धि ही बल है।

(ख) एकता में बल है।

एक गाँव में एक बूढ़ा किसान रहता था। उसके पाँच पुत्र थे। वे बड़े स्वस्थ और ताकतवर थे। वे कभी मिलकर नहीं रहते थे। सदा आपस में लड़ते-झगड़ते रहते थे। वे बहुत आलसी भी थे। किसान उनके विषय में बहुत चिंतित रहता था। उसने उन्हें कई बार समझाने की कोशिश की परंतु सब बेकार ही गया।

एक दिन किसान बहुत बीमार पड़ गया। उसने महसूस किया कि उसका अंत निकट आ गया है। मरने से पहले वह अपने पुत्रों को सुधारना चाहता था। उसने एक उपाय सोचा। उसने अपने पुत्रों से पतली-पतली लकड़ियों का एक गट्ठर मँगवाया और उसे तोड़ने को कहा। बारी-बारी सभी लड़कों ने उसे तोड़ने का प्रयत्न किया, किंतु वे उसे नहीं तोड़ सके। वे पाँचों मिलकर भी गट्ठर को नहीं तोड़ सके।अब किसान ने गट्ठर को खोलने के लिए कहा। लड़कों ने गट्ठर खोल दिया। फिर किसान ने उनसे एक-एक लकड़ी तोड़ने को कहा। प्रत्येक ने आसानी से एक-एक लकड़ी तोड़ डाली। अब किसान ने उन्हें समझाया कि यदि तुम गट्ठर की तरह मिलकर रहोगे तो तुम्हें कोई भी हानि नहीं पहुँचा सकता है और अगर इनके समान ही तुम भी बिखर गए तो तुम्हें कोई भी हानि पहुँचा सकता है। लड़कों को शिक्षा मिल गई। वे मिलकर रहने लगे और परिश्रम करने लगे।

शिक्षा–एकता में बल है।

(ग) लालची ब्राह्मण

बहुत समय की बात है। गंगा के किनारे जंगल में एक शेर रहता था। वह बहुत चालाक था। सभी जानवर उसकी चालाकी से बहुत दुखी थे।

वह अब बूढ़ा हो गया था, परंतु चालाकी से किसी न किसी तरह वह पशुओं को अपने जाल में फाँस लेता था और उन्हें खा जाता था।

एक बार की बात है। शेर काफी दिनों से भूखा था और इस बार उसकी कोई चाल कामयाब न हो सकी। अंत में उसे एक चाल सूझी।

वह गंगा किनारे दलदल में जाकर बैठ गया और उसने एक हाथ में माला और दूसरे हाथ में सोने का कंगन ले लिया। उसी समय एक ब्राह्मण प्रातः स्नान के लिए गंगा की ओर आता दिखाई दिया। ब्राह्मण को आते देखकर शेर जोर-जोर से हरे राम, हरे राम कहने लगा। ब्राह्मण को अपने सामने खड़े देखकर शेर बोला, ''ब्राह्मण देवता! प्रणाम।'' शेर की बात सुनकर ब्राह्मण को आश्चर्य हुआ। ब्राह्मण कहने लगा कि तुम्हारी यह स्थिति कैसे हो गई।

शेर कहने लगा, ''ब्राह्मण देवता! मैंने जीवनभर पाप किए हैं और अब मैं मुक्ति पाना

चाहता हूँ।''

यह सुनकर ब्राह्मण बोला, ''इसके लिए तुम्हें दान-पुण्य करना चाहिए।''

शेर ने ब्राह्मण के मन का लोभ समझ लिया और बोला,''मैंने अपना सब-कुछ दान कर दिया और अब यह कंगन बचा है। इसे मैं किसी श्रेष्ठ ब्राह्मण को देना चाहता हूँ।''

यह सुनकर ब्राह्मण बोला, ''मुझसे श्रेष्ठ ब्राह्मण तुम्हें और कौन मिलेगा? इसलिए यह सोने का कंगन मुझे दे दीजिए।''

ब्राह्मण की बातों को सुनकर शेर प्रसन्न हो गया और बोला, ''मैं बूढ़ा होने के कारण तुम्हारे पास नहीं आ सकता, इसलिए तुम ही मेरे पास आ जाओ ताकि मैं तुम्हें यह सोने का कंगन दे सकूँ।''

यह सुनकर लालची ब्राह्मण ने जैसे ही शेर के पास जाने के लिए पैर बढ़ाया, तो वह दलदल में फँस गया। ब्राह्मण चिल्लाने लगा कि बचाओ, बचाओ! शेर यह सुनकर हँसा और आराम से उसका मांस खाने लगा तथा अपनी कई दिनों की भूख शांत की।

शिक्षा–लालच बुरी बला है।

2. संकेत के आधार पर कहानी लिखिए–

एक राजा था। वह ईमानदारी और प्रसन्नतापूर्वक अपनी प्रजा का पालन-पोषण करता था। धीरे-धीरे उसके पास बहुत अधिक धन-संपत्ति इकट्ठी हो गई। अत्यधिक धन-संपन्न होने के बावजूद भी उसके मन में और अधिक धन कमाने का लालच आने लगा। इस प्रकार वह लालची बन गया और हर क्षण अधिक धन कमाने की युक्ति सोचता रहता।

एक दिन राजा अपने दरबार में बैठा हुआ था, तभी वहाँ एक साधु आए। राजा ने उनका आदरपूर्वक अतिथि-सत्कार किया। उसकी सेवा से प्रसन्न होकर साधु ने उससे इच्छित वर माँगने के लिए कहा। यह सुनकर राजा ने कहा, ''महात्मन्! मुझे ऐसा वरदान दीजिए कि मैं जिस वस्तु को स्पर्श करूँ वह सोना बन जाए।'' साधु उसे वरदान देकर चले गए। वरदान पाकर राजा अत्यंत प्रसन्न हुआ।

राजा अपने आस-पास की प्रत्येक वस्तु को छूकर देखता गया और वे सभी सोना बनती गईं। इतना सारा सोना देखकर वह फूला न समाया।

थोड़ी देर पश्चात राजा को बहुत तेज भूख लगी तो उसने अपने नौकरों को भोजन लाने का आदेश दिया। जैसे ही उसने खाने को छुआ तो वह भी सोना बन गया। यह देखकर राजा दुखी हो गया। तभी राजा की बेटी दौड़ती हुई वहाँ आई। उसने जब अपनी बेटी को गले से लगाने के लिए उसे छुआ तो वह भी सोने में बदल गई। अपनी बेटी को सोने में परिवर्तित देखकर राजा फूट-फूटकर रोने लगा। जब वह रो रहा था तो तभी वही साधु पुनः वहाँ आए। उन्हें अपने सामने खड़ा देखकर राजा ने क्षमा माँगते हुए उनसे कहा, ''महात्मन्! मुझे क्षमा कर दीजिए। मैं अत्यधिक धन कमाने के लालच में अपना ही अहित कर बैठा। मेरी बेटी को जीवित कर दीजिए, मैं उसके बिना जीवित नहीं रह सकता। आज मैं जीवन में कभी भी लालच न करने की प्रतिज्ञा लेता हूँ।''

राजा के मुख से पश्चाताप की बातें सुनकर साधु जी मन ही मन मुसकुराने लगे। उन्होंने राजा की बेटी को जीवित कर दिया। अन्य सभी चीजें भी पहले जैसी स्थिति में आ गईं।

24. निबंध-लेखन

अभ्यास

निम्नलिखित शीर्षकों पर निबंध लिखिए–

2. जीवन में खेलों का महत्व

खेल हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। चाहे वह बच्चा हो या जवान या बुजुर्ग सभी को खेलना अच्छा लगता है। मन को एकाग्र करने या थके दिमाग को आराम देने के लिए खेल एक अच्छा साधन है। खेल मन को प्रसन्नता ही नहीं देता बल्कि खिलाड़ी कुछ देर के लिए अपनी सारी चिंताएँ भूल जाता है। मानो वह इस खेल में असीम आनंद का अनुभव कर रहा हो।

यही कारण है कि खेलने से उसे स्वास्थ्य लाभ तो मिलता ही है, उसका मन भी सदा प्रसन्न रहने लगता है। उसका स्वभाव मधुर बन जाता है। उसमें चुस्ती-फुर्ती आ जाती है। कई विद्यार्थी खेल को पढ़ाई में बाधक समझते हैं, परंतु यह उनकी गलती है। जो बच्चे खेल नहीं खेलते, वे कभी-कभी बीमार भी पड़ जाते हैं। पर इसका मतलब यह नहीं कि पढ़ाई को बिलकुल त्यागकर केवल खेल में ही जुट जाना चाहिए।

खेल अपनी जगह है, पढ़ाई अपनी जगह। अतः शरीर में स्फूर्ति उत्पन्न करने तथा मस्तिष्क को ताज़ा रखने के लिए नियमपूर्वक थोड़ा-सा अवश्य खेलना चाहिए। इससे खिलाड़ी शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रहेगा।

3. वन, पर्यावरण और हम

वृक्ष धरती के रक्षा-कवच हैं। मानव जीवन के प्राणाधार हैं। शुद्ध पर्यावरण के लिए वरदान हैं; अतः हमारा इनसे सदैव निकटता का संबंध रहा है। सृष्टिकर्ता ने जब संसार रचा, तो सबसे पहले प्रकृति का निर्माण किया। प्रकृति के कण-कण में उसका अस्तित्व निहित है।

हमारे पूर्वज वृक्षों के महत्व से परिचित थे इसलिए वे इन्हें ईश्वर का सर्वोत्तम उपहार मानकर उनमें देवत्व का दर्शन करते थे। पीपल, वट, आँवला, तुलसी आदि की पूजा करना यही दर्शाता है। निस्संदेह जो वस्तु हमारे लिए 'संजीवनी' का कार्य करती है, उसके प्रति आस्था भाव रखना ही चाहिए।

पेड़ ही हैं, जो कार्बन डाइऑक्साइड तथा वातावरण में फैली अन्य प्रदूषित गैसों को आत्मसात् करके ऑक्सीजन छोड़ते हैं, जो पर्यावरण को शुद्ध रखते हैं। पेड़-पौधे वर्षा-निमत्रण में सहायक तथा आँधियाँ रोकने, बाढ़ रोकने में अवरोधक का कार्य करते हैं। इनसे हमें खाद्य-पदार्थ, दवाएँ, गोंद, लकड़ी आदि अनेक महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ होती हैं। सच तो यह है कि पेड़ की जड़, तना, पत्तियाँ हर चीज मनुष्य के काम आती हैं इसीलिए वृक्षों की महत्ता मानकर उन्हें लगाने को धार्मिक कृत्य माना जाता है। 'पदम् पुराण' में लिखा है''जो मनुष्य सड़क के किनारे पेड़ लगाता है, वह उतने वर्षों तक स्वर्ग में सुख पाता है। जितने वर्षों तक वह वृक्ष फलता-फूलता है।''

वर्तमान युग में जीवन शैली इस प्रकार की हो गई है कि संयुक्त परिवार टूटने लगे हैं। एकल परिवार को रहने के लिए घर चाहिए; अतः स्थानाभाव की पूर्ति वन काटकर की जा रही है। कल-कारखाने स्थापित करने के लिए जंगल कट रहे हैं। यातायात के साधनों से

उठता धुआँ पर्यावरण को प्रदूषित कर रहा है जिससे पेड़-पोधे भी प्रभावित होते हैं। पानी में कचरा फेंकने से जल-प्रदूषण होता है। यदि ये प्रदूषित जल वृक्षों में डाला जाए, तो उनका हरा-भरा रूप खत्म होने लगता है। वृक्षों के सूखने या न रहने पर हम उनसे मिलने वाले लाभों से वंचित रह जाएँगे। पर्यावरण दूषित हो जाएगा। प्रदूषण का साम्राज्य फैलने लगेगा, जो मानव जाति के लिए घातक है।

यदि हम पर्यावरण शुद्ध रखना चाहते हैं, तो अधिकाधिक वृक्षारोपण करना होगा। लगे हुए वृक्षों की देखभाल भी करनी होगी। अपने जन्म-दिवस या ऐसे अन्य अवसरों पर भी पौधारोपण का पुनीत कार्य किया जा सकता है। 'मत्स्य पुराण' में लिखा है''एक वृक्ष का आरोपण दस पुत्रों के जन्म के समान है।'' संत कवि मलूकदास का दोहा आज भी जीवंत है

''हरी डारि ना तोड़िए, लागै छूरा बान।

दास मूलका यों कहै, अपना-सा जिव जान।।''

4. सादा जीवन उच्च विचार

संपूर्ण विश्व में सिर्फ मनुष्य जाति ही है, जो समय के साथ इतनी अधिक विकसित हुई है। मनुष्य का समय के साथ लगातार विकास हुआ है। इसका सबसे बड़ा कारण उसके विचार या आसान शब्दों में कहे तो उसकी सोच है।

एकमात्र मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है, जिसके मस्तिष्क में विचार आते हैं व इन विचारों पर ज्यादा देर तक स्थिर रह सकता है। जहाँ अधिकतर जानवर सिर्फ वर्तमान का सोच पाते हैं। जबकि मनुष्य भूतकाल व भविष्यत् काल दोनों के बारे में सोच सकता है। सोचने व समझने की शक्ति ही मनुष्य को बाकी प्राणियों से अलग बनाती है।

मनुष्य के जीवन में उसके रहन-सहन का बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। वर्तमान समय में लोग दिखावटी दुनिया में रहते हैं। आज लोग सोशल मीडिया के युग में हैं। जहाँ लोग अपनी अच्छी जीवन-शैली को दिखाना पसंद करते हैं।

वे यह दिखाने की कोशिश करते हैं कि वे बहुत खुश व समृद्ध हैं। वे अपनी तस्वीरों के माध्यम से अपने सौंदर्य को दिखाने का प्रयास करते हैं व इसके साथ ही अपने खुशनुमा जीवन को लोगों को दिखाते हैं। लेकिन कई बार सच्चाई इससे कोसों दूर होती है। कई बार वे लोग, जो अन्य लोगों को अपनी खुशनुमा जिंदगी दिखाते हैं। वे अंदर से बहुत ही दुखी व अकेले होते हैं। लोगों को अपनी इच्छा जीवन शैली दिखाने के लिए कर्ज तक लेना पड़ता है। इसलिए, हमेशा से ही कहा जाता है कि मनुष्य को अपना जीवन हमेशा सादा ही रखना चाहिए व विचारों को हमेशा उच्च रखना चाहिए।

मनुष्य के विचार ही उसे दुनिया के इस जाल से बचा सकते हैं। मनुष्य के जीवन में उसके विचारों का बहुत बड़ा योगदान होता है। उसके विचार ही उसे उसके चुनाव करने की समझ देते हैं। विचार मनुष्य की सबसे बड़ी ताकत है, जो उसे बाकी सभी से अलग व खास बनाती है। मनुष्य की सोच अधिक मामलों में उसके भविष्य का निर्धारण करती है। संकीर्ण सोच वाले मनुष्य किसी भी बात को सिर्फ एक संकीर्ण तरीके से देखते हैं। 'सादा जीवन उच्च विचार' इस सूक्ति में मनुष्य को सादगी भरे जीवन व उच्च विचारों को अपने में अपनाने को कहा गया है। जो लोग इस जीवन शैली को अपना लेते हैं, उन्हें सफल होने

से कोई नहीं रोक सकता ऐसे मनुष्य सीमित साधनों मे हमेशा संतुष्ट रहते हैं। लेकिन, इसके साथ ही वे अधिक आगे बढ़ने के बारे में भी सोचते रहते हैं व लगातार इसके लिए कठिन कार्य व मेहनत करते रहते हैं। ऐसे सिद्धांत रखने वाला मनुष्य सफलता के लिए कभी भी गलत राह का चुनाव नहीं करता है।

5. दीपावली

भारतीय संस्कृति की झलक यहाँ के त्योहारों में दिखाई देती है। हमारे देश में अनेक धर्मों, संप्रदायों तथा संस्कृतियों का अद्भुत संगम है। इसीलिए विभिन्न धर्मों से जुड़े अनेक त्योहार यहाँ धूमधाम से मनाए जाते हैं। हिंदुओं के त्योहारों में दीपावली का विशेष महत्व है।

दीपावली का अर्थ है– दीपों की अवली या पंक्ति। दीपावली का त्योहार कोई एक त्योहार न होकर कई त्योहारों का समूह है, जो कार्तिक मास की अमावस्या को आता है। दीपावली से दो दिन पूर्व धन-तेरस वाले दिन लोग नए बर्तन खरीदते हैं तथा इन्हें खरीदना शुभ मानते हैं। इस दिन धन के देवता कुबेर की पूजा होती है तथा संध्या के समय दीप जलाकर यमराज की पूजा भी इसी दिन होती है।

अगले दिन चतुर्दशी को नरक चौदस या छोटी दीवाली मनाई जाती है। इसी दिन श्रीकृष्ण ने नरकासुर का वध किया था तथा उसके कारागार में बंदी सोलह हजार कन्याओं का उद्धार किया था।

अमावस्या के दिन दीपावली का पर्व मनाया जाता है। रात में घरों में रोशनी की जाती है तथा लक्ष्मी-पूजन होता है। घर-घर में रंग-बिरंगी कंदीलें लगाई जाती हैं तथा बच्चे आतिशबाजी करके आनंदित होते हैं। व्यापारीगण इसी दिन से अपना नया व्यापार शुरू करते हैं।

चौथे दिन गोवर्धन पूजा की जाती है। इसी दिन श्रीकृष्ण ने इंद्र के कोप से ब्रजवासियों की रक्षा करने के लिए गोवर्धन पर्वत उठाया था। इसी दिन अन्नकूट भी बनाया जाता है।

अंतिम दिन भैयादूज का पावन पर्व मनाया जाता है। इस दिन बहनें भाइयों को टीका लगाकर उनकी दीर्घायु की मंगलकामना करती हैं। भैयादूज को यम-द्वितीया भी कहा जाता है।

जगमगाती रोशनी के त्योहार दीपावली के साथ अनेक ऐतिहासिक तथा पौराणिक घटनाएँ जुड़ी हैं। इसी दिन श्रीराम चौदह वर्ष का वनवास काटकर रावण पर विजय प्राप्त करके सीता एवं लक्ष्मण के साथ अयोध्या लौटे थे। इसी दिन सिखों के छठे गुरु हरगोविंद सिंह जी को बंधन-मुक्ति मिली थी। आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानंद, जैनियों के चौबीसवें तीर्थंकर महावीर स्वामी और स्वामी रामतीर्थ ने इसी दिन मोक्ष प्राप्त किया था।

इस दिन लोग दीपक जलाते हैं जिससे कीटाणुओं का नाश होता है। दीपकों के प्रकाश से अमावस्या की रात्रि भी पूर्णिमा में बदल जाती है। बाजारों, घरों तथा दुकानों की सजावट अत्यंत आकर्षक होती है। लोग अपने इष्ट-मित्रों के यहाँ मिठाई आदि का आदान-प्रदान करते हैं, जिससे पारस्परिक सौहार्द बढ़ता है।

लोग मानते हैं कि इस दिन धन की देवी लक्ष्मी नंगे पैर संसार में चक्कर लगाती हैं तथा उसे जो घर प्रकाशमान मिलता है, वहीं निवास करने लगती हैं। कुछ लोग इस दिन जुआ

खेलकर अपनी किस्मत आजमाते हैं, परंतु इस कुरीति को हटाया जाना चाहिए। पटाखों तथा आतिशबाजी के अधिक प्रयोग से धन की हानि होती है तथा दुर्घटनाएँ भी होती हैं; अतः धन की अनावश्यक बर्बादी पर भी अंकुश लगाना हमारा कर्तव्य है।

दीपावली एक पवित्र त्योहार है; अतः हमें दीपक जलाकर यह प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि जिस प्रकार दीपक अंधकार को दूर करते हैं, उसी प्रकार हम भी अंधविश्वासों, घृणा और बुराइयों के अंधकार को दूर कर दें तथा इस त्योहार की पवित्रता को बनाए रखें।

6. गणतंत्र दिवस

जिस पर्व को राष्ट्र के सभी लोग हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं, उन्हें राष्ट्रीय पर्व कहते हैं। गणतंत्र दिवस भी हमारा राष्ट्रीय पर्व है। 26 जनवरी, 1930 को पंडित जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में हमारे देश के नेताओं ने पूर्ण स्वराज की माँग अंग्रेजों के समक्ष रखी थी। तब से भारत के नेता लोग पूर्ण स्वराज्य की माँग अंग्रेजों के सामने आजादी मिलने से पूर्व तक दोहराते रहे। 15 अगस्त, 1947 को हमारा देश स्वतंत्र हुआ परंतु उस समय देश को चलाने हेतु हमारा कोई संविधान नहीं था। 26 जनवरी, 1950 को हमारे देश का नया संविधान लागू हुआ और उसी दिन से भारत प्रभुतासंपन्न गणतंत्र बना। तभी से प्रतिवर्ष 26 जनवरी 'गणतंत्र दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

गणतंत्र दिवस पूरे देश में बड़े हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जाता है। इसी दिन सभी सरकारी, गैर-सरकारी कार्यालयों में राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाता है। रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते हैं। प्रत्येक राज्य में वहाँ के राज्यपाल ध्वज का अभिवादन करते हैं। सड़कों पर परेड निकाली जाती है तथा सरकारी भवनों को बिजली के बल्बों से सजाया जाता है। इस दिन पूरे देश में सार्वजनिक अवकाश रहता है।

26 जनवरी के दिन देश की राजधानी दिल्ली में विशेष समारोह आयोजित होता है। भारत के राष्ट्रपति सर्वप्रथम ध्वजारोहण करते हैं। इक्कीस तोपों की सलामी दी जाती है। तत्पश्चात जल, थल और वायु सेनाओं के जवान परेड करते हुए आगे बढ़ते हैं और राष्ट्रपति उन्हें सलामी देकर उनका अभिवादन स्वीकार करते हैं। इस अवसर पर विभिन्न प्रकार के अस्त्र-शस्त्र, मिसाइलों आदि का प्रदर्शन किया जाता है। विभिन्न राज्यों की मनमोहक झाँकियाँ प्रस्तुत की जाती हैं। विभिन्न स्कूलों के बच्चे और लोकनर्तक अपनी-अपनी कलाओं का प्रदर्शन करते हैं। वायुसेना के विमान आकाश में अपने करतब दिखाते हैं।

यह दिन हमें उन वीरों की याद दिलाता है जिन्होंने इस देश को आजाद कराने के लिए अनेक कष्टों को सहा और अपने प्राण भी न्यौछावर कर दिए। हमें उन अमर शहीदों को याद करते हुए देश की समता और अखंडता की रक्षा करने का संकल्प लेना चाहिए।

1. भाषा, बोली, लिपि और व्याकरण

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) मनुष्य द्वारा अपने विचारों के परस्पर आदान-प्रदान के माध्यम को भाषा कहते हैं।

(ख) भाषा के दो भेद हैं–

1. **मौखिक भाषा**–जो भाषा मुख से बोली जाती है, वह मौखिक भाषा कहलाती है। मनुष्य सबसे पहले मौखिक भाषा ही सीखता है। वार्तालाप, रेडियो, टेलीफोन पर बात करना आदि मौखिक भाषा के उदाहरण हैं।
2. **लिखित भाषा**–जो भाषा लिखकर प्रकट की जाती है, वह लिखित भाषा कहलाती है। इस भाषा के द्वारा ज्ञान-विज्ञान, साहित्य, संस्कृति आदि को सुरक्षित रखा जाता है। पत्र, समाचार-पत्र, पुस्तक, श्यामपट्ट पर लिखना आदि लिखित भाषा के उदाहरण हैं।

(ग) हिंदी उत्तर भारत के अधिकांश राज्यों की मातृभाषा है। देश के बाहर भी तेजी से हिंदी का प्रचार-प्रसार हो रहा है। विश्व के कई विश्वविद्यालयों में हिंदी शिक्षण की व्यवस्था है। हिंदी भाषा में एक करोड़ से भी अधिक शब्द हैं। यह अपनी सरल प्रकृति के कारण आसानी से सीखी, समझी एवं बोली जा सकती है। हिंदी का क्षेत्र बहुत विशाल है। यह विश्व की महत्वपूर्ण भाषाओं में से एक है।

(घ) व्याकरण के तीन अंग हैं

1. **वर्ण-विचार**–इस विभाग में वर्णों की बनावट, वर्णों के भेद, उनके उच्चारण, प्रयोग तथा संधि के विषय में जानकारी दी जाती है।
2. **शब्द-विचार**–इस विभाग में शब्द रचना, उसके भेद, शब्द-संपदा और उनके प्रयोग-व्यवहार का वर्णन किया जाता है।
3. **वाक्य-विचार**–इस विभाग में वाक्य और उसके अंग, पदबंध, बनावट, भेद, शुद्धता, विराम-चिह्न आदि का ज्ञान मिलता है।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) सार्थक ध्वनियाँ ही **भाषा** का आधार होती हैं।

(ख) **14** सितंबर को 'हिंदी दिवस' मनाया जाता है।

(ग) ज्ञान के संचित कोष को **साहित्य** कहते हैं।

(घ) बुल्गेरियन भाषा की लिपि **रूसी** है।

3. हाँ अथवा नहीं में उत्तर दीजिए–

(क) हाँ (ख) नहीं (ग) नहीं

(घ) हाँ (ङ) हाँ

4. मिलान कीजिए–

अ	ब
अंग्रेजी	रोमन
हिंदी	देवनागरी
अरबी	फारसी
पंजाबी	गुरुमुखी
उर्दू	फारसी

5. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (i) मौखिक (ख) (i) मराठी (ग) (iv) ये सभी

2. वर्ण-विचार

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) वह छोटी-से-छोटी ध्वनि जिसके टुकड़े न किए जा सकें, वर्ण कहलाती है।
वर्णों के दो भेद हैं–1. स्वर 2. व्यंजन।

(ख) जिन वर्णों के उच्चारण में मुख से निकलने वाली वायु बिना किसी रुकावट के बाहर निकल जाती है और जिनके उच्चारण में किसी अन्य वर्ण की सहायता नहीं ली जाती, उन्हें स्वर कहते हैं।

(ग) दो विभिन्न व्यंजनों के योग से बने व्यंजनों को संयुक्त व्यंजन कहते हैं। जैसे–क्ष = क् + ष
जब एक जैसे दो व्यंजन आपस में मिलते हैं, तो वे द्वित्व व्यंजन कहलाते हैं। इनमें पहला व्यंजन स्वर रहित तथा दूसरा व्यंजन स्वर सहित होता है। जैसे–क् + क क्क।

(घ) **स्वर तथा व्यंजन में अंतर**
स्वर वे स्वतंत्र ध्वनियाँ होती हैं, जिनका उच्चारण बिना किसी अन्य वर्ण की सहायता के किया जाता है तथा जिनका उच्चारण करते समय मुख से निकलने वाली वायु बिना किसी रुकावट के बाहर आती है; जैसे– अ, आ, इ, ऊ, ऐ आदि।
जबकि व्यंजन वे वर्ण हैं, जिनका उच्चारण स्वरों की सहायता से ही होता है तथा जिनका उच्चारण करते समय मुख से निकलने वाली वायु मुख के अलग-अलग स्थानों को छूकर बाहर आती है; जैसे– क, च, ट, त, प आदि।

2. हाँ अथवा नहीं में उत्तर दीजिए–

(क) हाँ (ख) नहीं (ग) नहीं
(घ) नहीं (ङ) नहीं

3. वर्ण-विच्छेद कीजिए–

ईर्ष्या = **ई + र् + ष् + य् + आ**
परिश्रम = **प् + अ + र् + इ + श् + र् + अ + म् + अ**
त्रिमूर्ति = **त्र् + र् + इ + म् + ऊ + र् + त् + इ**

विद्यार्थी	=	व्+इ+द्+य्+आ+र्+थ्+ई
कल्पना	=	क्+अ+ल्+प्+अ+न्+आ
व्यंजना	=	व्+य्+अ+ञ्+ज्+अ+न्+आ
स्पष्ट	=	स्+प्+अ+ष्+ट्+अ
परीक्षित	=	प्+अ+र्+ई+क्+श्+इ+त्
कवयित्री	=	क्+अ+व्+अ+य्+इ+त्+र्+ई
सार्थक	=	स्+आ+र्+थ्+अ+क्+अ
वीरांगना	=	व्+इ+र्+आ+अं+ग+न+आ
विज्ञान	=	व्+इ+ज्+ञ्+आ+न्+अ

4. 'र' के विभिन्न रूपों का प्रयोग करते हुए पाँच-पाँच शब्द लिखिए–

र	=	रक्त	राम	रमन	राग	रास
◌्	=	प्रसाद	प्रमोद	प्रभात	प्रदर्शिनी	प्रकार
◌	=	आदर्श	खर्च	बर्तन	पर्व	तर्क
◌	=	राष्ट्र	ड्रम	ट्रक	ड्रामा	ट्रेन

5. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (iii) 39 (ख) (i) वर्णों

(ग) (i) ह्रस्व स्वर (घ) (i) टवर्ग

3. शब्द-विचार

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) दो या दो से अधिक वर्णों के सार्थक समूह को शब्द कहते हैं।

(ख) शब्दों का वर्गीकरण उत्पत्ति, रचना, प्रयोग और अर्थ के आधार पर किया गया है।

(ग) **योगरूढ़ तथा रूढ़ शब्दों में अंतर–**

रूढ़ शब्द किसी सामान्य प्रचलित अर्थ को प्रकट करते हैं। इन शब्दों का अर्थ तो निश्चित होता है, किंतु यदि इन शब्दों के खंड कर दिए जाएँ तो इनका कोई भी अर्थ प्राप्त नहीं होता; जैसे–फल = फ + ल, राम = रा + म आदि। जबकि योगरूढ़ शब्द दो या दो से अधिक शब्दों या शब्दांशों के मेल से बने होते हैं और अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर परंपरा से किसी विशेष अर्थ को प्रकट करते हैं; जैसे–

जलद – जल + द = जल देने वाला अर्थात् बादल

दशानन – दश + आनन = दस मुखों वाला अर्थात् रावण।

2. हाँ अथवा नहीं में उत्तर दीजिए–

(क) हाँ (ख) नहीं (ग) हाँ (घ) हाँ (ङ) हाँ

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) वे शब्द जिनका **निश्चित अर्थ** होता है, सार्थक शब्द कहलाते हैं।

(ख) वाक्यों में प्रयोग करने पर जिन शब्दों के रूप में परिवर्तन आता है, उन्हें **विकारी** शब्द कहते हैं।

(ग) जिन शब्दों के खंडों का **अर्थ** नहीं होता, उन्हें रूढ़ शब्द कहते हैं।

(घ) हिंदी में विदेशी भाषाओं से लिए गए शब्द **विदेशी** शब्द कहलाते हैं।

(ङ) वर्णों के सार्थक समूह को **शब्द** कहते हैं।

4. निम्नलिखित शब्दों में से तत्सम, तद्भव, देशज व विदेशी शब्द अलग-अलग लिखिए–

तत्सम	**तद्भव**	**देशज**	**विदेशी**
वत्स	ऊँट	थैला	रेडियो
आश्रय	सिर	पगड़ी	पेन
दिवस	मुँह	झगड़ा	स्टेशन
बधिर	घर	पेट	इंजन

5. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए–

(क) मोर **मयूर** (ख) पीला **पीत** (ग) ब्याह **विवाह**

(घ) कान **कर्ण** (ङ) तिनका **तृण** (च) मीत **मित्र**

(छ) धीरज **धैर्य** (ज) दही **दधि** (झ) दिन **दिवस**

6. निम्नलिखित शब्दों में से रूढ़, यौगिक और योगरूढ़ शब्द अलग-अलग कीजिए–

रूढ़	**यौगिक**	**योगरूढ़**
सूर्य	हिमालय	चारपाई
पुस्तक	प्रधानमंत्री	जलद
हाथी	पुस्तकालय	लंबोदर
	रसोईघर	दशानन
	उपकार	

7. निम्नलिखित अलग-अलग शब्दों में प्रयुक्त शब्दों को लिखिए–

(क) रेलगाड़ी **रेल (अंग्रेजी)** + **गाड़ी (हिंदी)**

(ख) माँगपत्र **माँग (हिंदी)** + **पत्र (संस्कृत)**

(ग) टिकटघर **टिकट (अंग्रेजी)** + **घर (हिंदी)**

(घ) सीलबंद **सील (अंग्रेजी)** + **बंद (फारसी)**

(ङ) तहसीलदार **तहसील (अरबी)** + **दार (फारसी)**

(च) पानदान **पान (हिंदी)** + **दान (फारसी)**

8. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (iv) (ख) (iii) (ग) (iv) (घ) (iii)

4. संधि

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) दो वर्णों के परस्पर मेल से उनके मूल रूप में होने वाले परिवर्तन को संधि

कहते हैं। संधि के मुख्यतः तीन भेद होते हैं–स्वर संधि, व्यंजन संधि तथा विसर्ग संधि।

(ख) स्वर संधि का अर्थ है–दो स्वर वर्णों का परस्पर मेल या जोड़।
स्वर संधि के पाँच भेद होते हैं–(i) दीर्घ संधि (ii) गुण संधि (iii) वृद्धि संधि (iv) यण् संधि (v) अयादि संधि।

(ग) विसर्ग के बाद किसी स्वर या व्यंजन के आने से विसर्ग में जो परिवर्तन होता है, उसे विसर्ग संधि कहते हैं।

(घ) **संधि व समास में अंतर–**
(i) संधि वर्णों में होती है। समास शब्दों में होता है।
(ii) संधि में विभक्तियों या शब्दों का लोप नहीं होता, जबकि समास होने पर विभक्तियों या शब्दों का लोप भी हो सकता है; जैसे–माता-पिता = माता और पिता; यहाँ माता और पिता को सामासिक (समस्तपद) के रूप में लिखते समय 'और' शब्द का लोप कर दिया जाता है।

2. निम्नलिखित शब्दों में संधि कीजिए–

(क)	प्रति + उपकार	**प्रत्युपकार**	(ख)	भौ + उक	**भावुक**
(ग)	तत् + अनुसार	**तदनुसार**	(घ)	वाक् + ईश	**वागीश**
(ङ)	मुनि + इंद्र	**मुनींद्र**	(च)	परम + ओज	**परमौज**
(छ)	सीमा + अंत	**सीमांत**	(ज)	मत + एक्य	**मतैक्य**

3. निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए–

(क)	निर्धन	**निः + धन**	(ख)	नीरोग	**निः + रोग**
(ग)	नायिका	**नै + इका**	(घ)	उन्नति	**उत् + नति**
(ङ)	जगदीश	**जगत् + ईश**	(च)	परीक्षा	**परि + ईक्षा**
(छ)	निष्प्राण	**निः + प्राण**	(ज)	दुस्साहस	**दुः + साहस**

4. संधि किए गए शब्दों में से शुद्ध शब्द चुनकर लिखिए–

(क) राका + ईश = **राकेश** (ख) लघु + उत्तर = **लघूत्तर**
(ग) नि + ऊन = **न्यून** (घ) शीत+ ऋतु = **शीतर्तु**
(ङ) गै + अन = **गायन**

5. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (iii) (ख) (iv) (ग) (iii) (घ) (ii)

5. समास

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) परस्पर संबंध रखने वाले दो या दो से अधिक शब्दों का मेल करके उनका रूप संक्षिप्त करने की प्रक्रिया को समास कहते हैं; जैसे–दान में वीर = दानवीर, गंगा का जल = गंगाजल आदि।

(ख) समस्तपद का विग्रह करके उसे पुनः पहले वाली स्थिति में लाने की प्रक्रिया को समास-विग्रह कहते हैं।

(ग) समास के मुख्यतः छह भेद होते हैं–

(i) **तत्पुरुष समास**; जैसे–राह के लिए खर्च = राहखर्च, देश से निकाला = देशनिकाला।

(ii) **कर्मधारय समास**; जैसे–नीला है जो कमल = नीलकमल, महान है जो आत्मा = महात्मा।

(iii) **द्विगु समास**; जैसे–चार मासों का समूह = चौमासा, तीन लोकों का समूह = त्रिलोक।

(iv) **अव्ययीभाव समास**; जैसे–जीवनभर = आजीवन, समय के अनुसार = यथासमय।

(v) **बहुव्रीहि समास**; जैसे–नीला कंठ है जिसका अर्थात् शिव = नीलकंठ, चार भुजाएँ हैं जिसकी अर्थात् विष्णु = चतुर्भुज।

(vi) **द्वंद्व समास**; जैसे–रात और दिन = रात-दिन, भला या बुरा = भला-बुरा।

2. रंगीन छपे पदों को समस्तपद में बदलकर पुनः लिखिए–

(क) हर काम **यथाविधि** होना चाहिए।

(ख) **अकालपीड़ित** लोगों को देख मुझे दया आ गई।

(ग) अनु **कामचोर** होने लगी।

(घ) पता नहीं वह **रातोंरात** कहाँ चला गया?

(ङ) **जेबकतरों** से सावधान रहना।

(च) यह अँगूठी **नवरत्न** से बनी है।

3. निम्नलिखित समस्तपदों का विग्रह कर उनका भेद लिखिए–

	समस्तपद	**समास-विग्रह**	**समास का भेद**
(क)	नीलकमल	**नीला है जो कमल**	**कर्मधारय समास**
(ख)	लखपति	**लाखों का पति**	**संबंध तत्पुरुष समास**
(ग)	घुड़सवार	**घोड़े पर सवार**	**अधिकरण तत्पुरुष समास**
(घ)	यथाशक्ति	**शक्ति के अनुसार**	**अव्ययीभाव समास**
(ङ)	पंचरत्न	**पाँच रत्नों का समूह**	**द्विगु समास**
(च)	ग्रामगत	**ग्राम को गया हुआ**	**कर्म तत्पुरुष समास**
(छ)	राजयोग	**राजा का योग**	**संबंध तत्पुरुष समास**
(ज)	गंगा-यमुना	**गंगा एवं यमुना**	**द्वंद्व समास**
(झ)	मृगनयनी	**मृग के समान नयन वाली है जो**	**बहुव्रीहि समास**

4. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (ii) (ख) (i) (ग) (i) (घ) (ii)

6. उपसर्ग

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) जो शब्दांश मूल शब्दों से पहले जुड़कर उनके अर्थ में परिवर्तन या विशेषता

ला देते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते हैं; जैसे–उप + कार = उपकार, कु + रूप = कुरूप आदि।

(ख) उपसर्ग चार प्रकार के होते हैं–(i) संस्कृत के उपसर्ग, (ii) हिंदी के उपसर्ग, (iii) उर्दू के उपसर्ग, (iv) संस्कृत के अव्यय (उपसर्ग के रूप में)।

2. निम्नलिखित उपसर्गों से दो-दो नए शब्द बनाइए–

(क)	गैर	**गैरकानूनी**	**गैरजिम्मेदार**
(ख)	सत्	**सत्कर्म**	**सत्कार**
(ग)	उप	**उपकार**	**उपनाम**
(घ)	उत्	**उत्थान**	**उत्कर्ष**
(ङ)	अन	**अनपढ़**	**अनहोनी**
(च)	कु	**कुमार्ग**	**कुपुत्र**
(छ)	वि	**वियोग**	**विज्ञान**
(झ)	हर	**हरवक्त**	**हरदिन**

3. निम्नलिखित शब्दों में उचित उपसर्ग लगाकर नए शब्द लिखिए–

(क)	स्थायी	**अस्थायी**	(ख)	पूर्ण	**संपूर्ण**
(ग)	ज्ञान	**अज्ञान**	(घ)	राष्ट्रीय	**अंतर्राष्ट्रीय**
(ङ)	फल	**निष्फल**	(च)	हार	**उपहार**
(छ)	गम	**सुगम**	(ज)	देश	**विदेश**
(झ)	आचार	**अनाचार**	(ञ)	नसीब	**खुशनसीब**
(ट)	काल	**तत्काल**	(ठ)	पसंद	**नापसंद**

4. निम्नलिखित शब्दों से उपसर्ग व मूल शब्द अलग-अलग कीजिए–

		उपसर्ग	**मूल शब्द**
(क)	नासमझ	**ना**	**समझ**
(ख)	कुरूप	**कु**	**रूप**
(ग)	अतिरिक्त	**अति**	**रिक्त**
(घ)	परिणाम	**परि**	**नाम**
(ङ)	प्राचीन	**प्र, आ**	**चीन**
(च)	कमजोर	**कम**	**जोर**
(छ)	औगुण	**औ**	**गुण**

5. नीचे दिए गए शब्दों में उन शब्दों के नीचे रेखा खींचिए, जिनमें सही उपसर्ग का प्रयोग हुआ है–

(क)	<u>आमरण</u>	अवमरण	विमरण
(ख)	अपरिवार	<u>सपरिवार</u>	भरपरिवार
(ग)	बेपसंद	<u>नापसंद</u>	दुष्पसंद
(घ)	<u>अधपका</u>	बेपका	अनपका

6. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (ii) (ख) (iii) (ग) (i) (घ) (ii)

7. प्रत्यय

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) जो शब्दांश शब्दों के अंत में जुड़कर उनके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं, प्रत्यय कहलाते हैं; जैसे–

लूट + एरा = लुटेरा, मानव + ता = मानवता आदि।

(ख) **उपसर्ग व प्रत्यय में अंतर–**

उपसर्ग व प्रत्यय दोनों ही शब्दांश हैं और दोनों ही मूल शब्दों में जुड़कर नए शब्दों का निर्माण करते हैं, किंतु दोनों में अंतर है। उपसर्ग वे शब्दांश हैं जो शब्दों से पूर्व जुड़कर उनमें परिवर्तन लाकर नए शब्दों का निर्माण करते हैं, जबकि प्रत्यय मूल शब्दों के अंत में जुड़कर नए शब्दों का निर्माण करते हैं; जैसे–

उपसर्ग	प्रत्यय
अध + पका = अधपका	घबरा + आहट = घबराहट
अ + काल = अकाल	चमक + ईला = चमकीला।

(ग) प्रत्यय के मुख्यतः दो भेद हैं–कृत् प्रत्यय और तद्धित प्रत्यय।

2. हाँ अथवा नहीं में उत्तर दीजिए–

(क) हाँ (ख) हाँ (ग) नहीं (घ) नहीं

3. नीचे दिए गए शब्दों में से मूल शब्द तथा प्रत्यय को अलग-अलग करके लिखिए–

	प्रत्ययुक्त शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय
(क)	लिखावट	**लिख**	**आवट**
(ख)	पुजापा	**पूजा**	**आपा**
(ग)	भारतीय	**भारत**	**ईय**
(घ)	रसोइया	**रसोई**	**इया**
(ङ)	स्मरणीय	**स्मरण**	**ईय**
(च)	लुटिया	**लोटा**	**इया**

4. नीचे दिए गए शब्दों में से उपसर्ग, मूल शब्द और प्रत्यय को अलग-अलग करके लिखिए–

	शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द	प्रत्यय
(क)	स्वतंत्रता	**स्व**	**तंत्र**	**ता**
(ख)	अभिमानी	**अभि**	**मान**	**ई**
(ग)	सुगंधित	**सु**	**गंध**	**इत**
(घ)	परिश्रमी	**परि**	**श्रम**	**ई**
(ङ)	सम्मानित	**सम्**	**मान**	**इत**

5. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (iv) (ख) (i) (ग) (iii)

8. शब्द-भंडार

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) जो शब्द एक-दूसरे से मिलता-जुलता अर्थ प्रकट करते हैं, उन्हें पर्यायवाची शब्द कहते हैं।

(ख) विलोम शब्द से आशय है एक-दूसरे का परस्पर विपरीत अर्थ प्रकट करने वाले शब्द।

(ग) भाषा को सुंदर व प्रभावशाली बनाने हेतु अनेक शब्दों के लिए एक शब्द का प्रयोग किया जाता है।

(घ) एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्दों का प्रयोग करते समय उनके गूढ़ार्थ संबंधी सावधानी रखनी चाहिए।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति सही शब्द से कीजिए–

(क) भ्रष्टाचार के **अपराध** में नेता को गिरफ्तार कर लिया गया।

(ख) भारत में कश्मीर एक सुंदर **पर्यटन** स्थान है।

(ग) परीक्षा के **भय** से अच्छे-अच्छे काँप जाते हैं।

(घ) **विवेक** से काम लेने वाला व्यक्ति ही सफल होता है।

(ङ) छात्रों ने अनुशासनहीनता पर **खेद** प्रकट किया।

3. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो अर्थ लिखकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) नग
- **पर्वत** = हिमालय **पर्वत** भारत के उत्तर में स्थित है।
- **नगीना** = माणिक्य एक **नगीना** है।

(ख) अंबर
- **आकाश** = **आकाश** में तारे चमक रहे हैं।
- **वस्त्र** = श्रीकृष्ण पीले **वस्त्र** धारण करते थे।

(ग) कंचन
- **सोना** = मीरा के भाई ने उसे **सोने** के कंगन उपहार में दिए।
- **धतूरा** = **धतूरे** के पत्तों का धुआँ दमा शांत करता है।

(घ) दल
- **सेना** = युद्ध में भारतीय **सेना** विजयी हुई।
- **समूह** = जन-**समूह** कल लालकिले पर एकत्र होगा।

4. निम्नलिखित शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए–

(क)	पक्षी	**खग**	**विहग**	**पखेरू**
(ख)	गृह	**घर**	**सदन**	**आवास**
(ग)	पवन	**वायु**	**हवा**	**अनिल**

(घ) कोयल **पिक** **कोकिला** **काकपाली**

(ङ) जल **नीर** **पानी** **सलिल**

5. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कर अंतर स्पष्ट कीजिए–

(क) (i) अस्त्र अर्जुन के पास अनेक दिव्य **अस्त्र** थे।

(ii) शस्त्र भीम गदा नामक **शस्त्र** चलाने में निपुण थे।

(ख) (i) अली ललिता राधा की प्रिय **अली** थी।

(ii) अलि उपवन में **अलि** फूलों का रसपान करता है।

(ग) (i) अपराध सुमेध को चोरी करने के **अपराध** में दो माह कारावास की सजा दी गई।

(ii) पाप झूठ बोलना **पाप** है।

6. निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक-एक शब्द लिखिए–

(क) नश्वर (ख) परोक्ष (ग) निर्जन (घ) निर्लज्ज

7. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (ii) (ख) (i) (ग) (iv)

9. संज्ञा

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) किसी प्राणी, वस्तु, स्थान, भाव या अवस्था के नाम को संज्ञा कहते हैं; जैसे–शेर, रामायण, विद्यालय, सुंदरता, बचपन आदि।

(ख) संज्ञा के मुख्यतः तीन भेद होते हैं–

(i) व्यक्तिवाचक संज्ञा; जैसे–राम, हिमालय।

(ii) जातिवाचक संज्ञा; जैसे–छात्र, नदी।

(iii) भाववाचक संज्ञा; जैसे–हरियाली, मित्रता।

अंग्रेजी के प्रभाव से हिंदी भाषा में संज्ञा के दो भेद और माने गए हैं–

(iv) द्रव्यवाचक संज्ञा; जैसे–चाय, सोना।

(v) समुदायवाचक संज्ञा; जैसे–झुंड, परिवार।

(ग) **व्यक्तिवाचक और जातिवाचक संज्ञा में अंतर–**

व्यक्तिवाचक संज्ञा किसी विशेष स्थान, वस्तु या प्राणी का बोध कराती है। यह सदैव एकवचन में होती है तथा लिंग के आधार पर इसमें परिवर्तन नहीं होता। इसके विपरीत जातिवाचक संज्ञा स्थान, वस्तु, प्राणी की पूरी जाति का बोध कराती है। इसमें लिंग और वचन के आधार पर परिवर्तन हो जाता है; जैसे–रामायण, महात्मा गांधी, ताजमहल–ये व्यक्तिवाचक संज्ञा के उदाहरण हैं। ये एकवचन में हैं और लिंग के आधार पर इनमें कोई परिवर्तन नहीं होता। बच्चा, लड़का, बिल्ली–ये जातिवाचक संज्ञा के उदाहरण हैं। ये पूरी जाति का बोध कराते हैं तथा वचन और लिंग के आधार पर इनमें परिवर्तन होता है;

जैसे–बच्चा, बच्चे, बच्चों (वचन), बच्ची (लिंग), लड़का, लड़के (वचन), लड़की (लिंग)।

(घ) भाववाचक संज्ञाएँ पाँच प्रकार के शब्दों से बनती हैं–

(i) जातिवाचक संज्ञाओं से; जैसे–मनुष्य = मनुष्यता, शिशु = शैशव।

(ii) सर्वनामों से; जैसे–निज = निजत्व, स्व = स्वत्व।

(iii) विशेषणों से; जैसे–मीठा = मिठास, सुंदर = सुंदरता।

(iv) क्रियाओं से; जैसे–गाना = गान, काटना = कटाई।

(v) अव्ययों से; जैसे–शीघ्र = शीघ्रता, भीतर = भीतरी।

(ङ) **समूहवाचक संज्ञा**–जिन संज्ञा शब्दों से व्यक्तियों, प्राणियों, वस्तुओं आदि के समुदाय का बोध हो, उन्हें समूहवाचक संज्ञा कहते हैं।

द्रव्यवाचक संज्ञा–जिन संज्ञा शब्दों से किसी द्रव या पदार्थ का बोध होता है, उन्हें द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं।

2. हाँ अथवा नहीं में उत्तर दीजिए–

(क) नहीं (ख) नहीं (ग) हाँ

(घ) नहीं (ङ) हाँ

3. कोष्ठक में दिए गए शब्दों से उचित भाववाचक संज्ञाएँ बनाकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) पानी का **बहाव** बहुत तेज है।

(ख) राधा ने परीक्षा की तैयारी अपने बड़े भाई के **नेतृत्व** में की थी।

(ग) दूध में कुछ **खटास** है।

(घ) पूर्णिमा की रात को ताजमहल की **सुंदरता** देखते ही बनती है।

(ङ) उसकी **लिखाई** बहुत सुंदर है।

4. निम्नलिखित शब्दों के सामने उसका संज्ञा–भेद लिखिए–

(क)	पानी	**द्रव्यवाचक संज्ञा**	(ख)	मोर	**जातिवाचक संज्ञा**
(ग)	हँसी	**भाववाचक संज्ञा**	(घ)	चतुराई	**भाववाचक संज्ञा**
(ङ)	दूध	**द्रव्यवाचक संज्ञा**	(च)	चोरी	**भाववाचक संज्ञा**
(छ)	हिमालय	**व्यक्तिवाचक संज्ञा**	(ज)	हरियाली	**भाववाचक संज्ञा**
(झ)	चावल	**द्रव्यवाचक संज्ञा**	(ञ)	नदी	**जातिवाचक संज्ञा**
(ट)	इच्छा	**भाववाचक संज्ञा**	(ठ)	बचपन	**भाववाचक संज्ञा**

5. निम्नलिखित शब्दों से भाववाचक संज्ञाएँ बनाइए–

(क)	सज्जन	**सज्जनता**	(ख)	मधुर	**मधुरता/माधुर्य**
(ग)	मना	**मनाही**	(घ)	उदार	**उदारता**
(ङ)	नारी	**नारीत्व**	(च)	जीतना	**जीत**
(छ)	कवि	**कवित्व**	(ज)	शीघ्र	**शीघ्रता**
(झ)	सर्व	**सर्वस्व**	(ञ)	दौड़ना	**दौड़**

6. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (i) (ख) (iv) (ग) (iv) (घ) (i)

10. लिंग

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) शब्द के जिस रूप से पुरुष व स्त्री जाति का बोध हो, उसे लिंग कहते हैं; जैसे–नाग-नागिन, लड़का-लड़की आदि।

(ख) लिंग के दो भेद होते हैं–(i) पुल्लिग (ii) स्त्रीलिंग।

2. हाँ अथवा नहीं में उत्तर दीजिए–

(क) हाँ (ख) नहीं (ग) नहीं (घ) नहीं

3. सदैव पुल्लिंग रहने वाले छह शब्द लिखिए–

खरगोश	गरुड़	तोता
मच्छर	चीता	उल्लू

4. सदैव स्त्रीलिंग रहने वाले छह शब्द लिखिए–

मैना	कोयल	गिलहरी
तितली	मछली	छिपकली

5. निम्नलिखित शब्दों के स्त्रीलिंग लिखिए–

(क)	देवर	**देवरानी**	(ख)	तपस्वी	**तपस्विनी**
(ग)	भवदीय	**भवदीया**	(घ)	वक्ता	**वक्त्री**
(ङ)	मूर्ख	**मूर्खा**	(च)	यशस्वी	**यशस्विनी**
(छ)	उपदेशक	**उपदेशिका**	(ज)	बाग	**बगिया**
(झ)	सुनार	**सुनारिन**	(ञ)	लाला	**ललाइन**

6. निम्नलिखित शब्दों के लिंग निर्धारित कीजिए–

(क)	आँख	**स्त्रीलिंग**	(ख)	हिमालय	**पुल्लिग**
(ग)	नर्मदा	**स्त्रीलिंग**	(घ)	पूर्णिमा	**स्त्रीलिंग**
(ङ)	घर	**पुल्लिग**	(च)	सप्ताह	**पुल्लिग**
(छ)	बाजरा	**पुल्लिग**	(ज)	इटली	**पुल्लिग**
(झ)	अग्नि	**स्त्रीलिंग**	(ञ)	हल्दी	**स्त्रीलिंग**

7. निम्नलिखित वाक्यों में रंगीन शब्दों के लिंग बदलकर वाक्य पुनः लिखिए–

(क) **छात्र** विद्यालय जा रहा है।

(ख) **नेत्री** जी अच्छी **वक्त्री** हैं।

(ग) वह कुशाग्रबुद्धि **बालिका** है।

(घ) **आयुष्मती** भवोः।

(ङ) मैंने इस **युवती** को कभी नहीं देखा।

8. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (ii) (ख) (i) (ग) (iv)

11. वचन

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) शब्द के जिस रूप से उसके एक या अनेक होने का बोध हो, उसे वचन कहते हैं; जैसे–चाबी-चाबियाँ, केला-केले, पुस्तक-पुस्तकें आदि।

(ख) वचन के दोनों प्रकार निम्नलिखित हैं–

एकवचन–संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से एक व्यक्ति या वस्तु का बोध होता है, उसे एकवचन कहते हैं; जैसे–पुस्तक, बच्चा, केला, मेज, कुरसी आदि।

बहुवचन–संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से दो या दो से अधिक व्यक्तियों या वस्तुओं का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं; जैसे–पुस्तकें, बच्चे, केले, मेजें, कुरसियाँ आदि।

(ग) सदैव एकवचन रहने वाले चार शब्द हैं–जनता, पानी, शक्कर, वर्षा।

2. कोष्ठक में दिए गए शब्दों के सही रूप (एकवचन या बहुवचन) से वाक्यों के रिक्त स्थान भरिए–

(क) सीमा पर **दुश्मन** ने तबाही मचा रखी है।

(ख) हमें समाज से बुरी **रीतियों** को निकालना होगा।

(ग) वर्तमान परिस्थिति में **युवावर्ग** पर ही भरोसा है।

(घ) भारत को अपने **सैनिकदल** पर भरोसा है।

(ङ) हमें आज के **नेताओं** पर भरोसा नहीं है।

3. निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन रूप लिखिए–

(क)	कथा	**कथाएँ**	(ख)	गन्ना	**गन्ने**
(ग)	सपेरा	**सपेरे**	(घ)	कविता	**कविताएँ**
(ङ)	दूरी	**दूरियाँ**	(च)	गुड़िया	**गुड़ियाँ**
(छ)	वधू	**वधुएँ**	(ज)	प्रजा	**प्रजाजन**
(झ)	पाठक	**पाठकवर्ग**	(ञ)	धातु	**धातुएँ**
(ट)	परदा	**परदे**	(ठ)	लाठी	**लाठियाँ**

4. निम्नलिखित शब्दों के वचन निर्धारित कीजिए–

(क)	साइकिलें	**बहुवचन**	(ख)	कन्या	**एकवचन**
(ग)	आँखें	**बहुवचन**	(घ)	आत्मा	**एकवचन**
(ङ)	बकरियाँ	**बहुवचन**	(च)	अबलाएँ	**बहुवचन**
(छ)	पलक	**एकवचन**	(ज)	शीशे	**बहुवचन**
(झ)	मंत्री	**एकवचन**	(ञ)	लुटिया	**एकवचन**
(ट)	मूँछ	**एकवचन**	(ठ)	गुरु	**एकवचन**

5. निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त रंगीन शब्दों के वचन बदलकर वाक्य पुनः लिखिए–

(क) तालाब में **मछलियाँ** तैर रही हैं।

(ख) **चप्पलें** उठाकर रख दो।

(ग) **गालियाँ** देना अच्छी आदत नहीं है।

(घ) **लड़की** खेल रही है।

6. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (i) (ख) (i) (ग) (iv) (घ) (iii)

12. सर्वनाम

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) सर्वनाम का अर्थ है–सर्व अर्थात् सबका नाम या सभी नामों के स्थान पर आने वाला शब्द; जैसे–मैं, तुम, वह, वे, स्वयं आदि।

(ख) सर्वनाम के छह भेद हैं–

(i) पुरुषवाचक सर्वनाम; जैसे–मैं, तुम, वह, उसे आदि।

(ii) निश्चयवाचक सर्वनाम; जैसे–इस, यह, इनसे आदि।

(iii) अनिश्चयवाचक सर्वनाम; जैसे–कोई, कुछ, किसी को आदि।

(iv) संबंधवाचक सर्वनाम; जैसे–जो-वो, जैसा-वैसा आदि।

(v) प्रश्नवाचक सर्वनाम; जैसे–कौन, किसका, किससे आदि।

(vi) निजवाचक सर्वनाम; जैसे–स्वयं, अपने आप, खुद आदि।

(ग) पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद होते हैं–

(i) उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम; जैसे–मुझे, मैंने।

(ii) मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम; जैसे–तुम्हारा, तुमने।

(iii) अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम; जैसे–उन्हें, वह।

(घ) जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग वाक्य में प्रयुक्त दूसरे संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के साथ संबंध स्थापित करने के लिए किया जाता है, उन्हें संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे–

जो परिश्रम करेगा वो सफल होगा।

जिसे कल चोट लगी थी वह आज ठीक है।

2. हाँ अथवा नहीं में उत्तर दीजिए–

(क) नहीं (ख) हाँ (ग) हाँ (घ) नहीं

3. निम्नलिखित वाक्यों में से सर्वनाम छाँटिए व उसका भेद लिखिए–

	सर्वनाम	**भेद**
(क)	कुछ	अनिश्चयवाचक सर्वनाम
(ख)	कोई	अनिश्चयवाचक सर्वनाम
(ग)	मैंने	उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम
(घ)	वह	अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम

(ङ) स्वयं — निजवाचक सर्वनाम

(च) उसकी, उसके — अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम

4. निम्नलिखित सर्वनामों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) स्वयं — वह **स्वयं** ही विद्यालय चला गया।

(ख) मैं — **मैं** दिल्ली जा रहा हूँ।

(ग) वह — **वह** मेरा विद्यालय है।

(घ) जो-वो — **जो** परिश्रम करेगा **वो** सफल होगा।

(ङ) आप — **आप** कब आए?

(च) कोई — लगता है **कोई** आ रहा है।

5. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (iii) (ख) (iii) (ग) (iv)

13. विशेषण

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) विशेषण से अभिप्राय है संज्ञा और सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द।

(ख) विशेषण जिस शब्द की विशेषता प्रकट करता है, उसे विशेष्य कहते हैं।

(ग) विशेषण के चार भेद होते हैं–(i) गुणवाचक विशेषण (ii) संख्यावाचक विशेषण (iii) परिमाणवाचक विशेषण (iv) सार्वनामिक विशेषण।

(घ) **सार्वनामिक विशेषण और सर्वनाम में अंतर**–जो सर्वनाम शब्द संज्ञा से पहले आकर उसकी विशेषता बताते हैं, वे सार्वनामिक विशेषण होते हैं जबकि जो शब्द संज्ञा की जगह प्रयोग होते हैं, वे सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे–

वह लड़का पढ़ रहा है। (सार्वनामिक विशेषण)

वह पढ़ रहा है। (सर्वनाम)

(ङ) विशेषण की तीन अवस्थाएँ होती हैं–मूलावस्था, उत्तरावस्था और उत्तमावस्था।

2. हाँ अथवा नहीं में उत्तर दीजिए–

(क) नहीं (ख) हाँ (ग) हाँ (घ) नहीं

3. कोष्ठक में दिए गए शब्दों के सही रूप से रिक्त स्थान पूरे कीजिए–

(क) मैंने एक **भयानक** चेहरा देखा।

(ख) पाप का नाश करो **पापी** का नहीं।

(ग) गाँव का रास्ता **पथरीला** है।

(घ) माता जी ने बहुत **स्वादिष्ट** खाना बनाया है।

(ङ) हम सब **भारतीय** हैं।

4. निम्नलिखित वाक्यों में से विशेषण छाँटिए व उसका भेद लिखिए–

	विशेषण	भेद
(क)	ठंडी	गुणवाचक विशेषण
(ख)	साँवले	गुणवाचक विशेषण
(ग)	अनेक	अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण
(घ)	जंगली	गुणवाचक विशेषण

5. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (ii) (ख) (iv) (ग) (ii)

14. कारक

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध क्रिया के साथ जाना जाता है, उसे कारक कहते हैं। इसके आठ भेद हैं–

(i) कर्ता कारक (ii) कर्म कारक
(iii) करण कारक (iv) संप्रदान कारक
(v) अपादान कारक (vi) संबंध कारक
(vii) अधिकरण कारक (viii) संबोधन कारक

(ख) कारकों के नाम व उनके विभक्ति-चिह्न निम्नलिखित हैं–

कारक तालिका

क्रमांक	कारक का नाम	विभक्ति-चिह्न
1.	कर्ता कारक	ने
2.	कर्म कारक	को
3.	करण कारक	से, के द्वारा
4.	संप्रदान कारक	को, के लिए
5.	अपादान कारक	से (अलग होना)
6.	संबंध कारक	का, के, की
7.	अधिकरण कारक	में, पर
8.	संबोधन कारक	हे!, अरे!

(ग) **कर्म और संप्रदान कारक में अंतर–**

कर्म और संप्रदान कारक दोनों का विभक्ति-चिह्न 'को' है, परंतु इनमें निम्नलिखित अंतर होता है–

(i) कर्म कारक का 'को' विभक्ति-चिह्न क्रिया के फल का आधार होता है; जैसे–'राहुल ने मूली को काटा' इस वाक्य में 'मूली को' क्रिया 'काटा' के फल का आधार है।

(ii) संप्रदान में प्रयुक्त 'को' से किसी के लिए कुछ करने का भाव व्यक्त

होता है; जैसे–'राजा ने गरीबों को वस्त्र दिए'। इस वाक्य में राजा के द्वारा देने का भाव है। अतः 'गरीबों को' संप्रदान कारक है।

(घ) **करण और अपादान कारक में अंतर–**

करण कारक तथा अपादान कारक दोनों का विभक्ति-चिह्न 'से' है, परंतु दोनों में अंतर है। करण कारक की 'से' विभक्ति का अर्थ 'के द्वारा' या 'के साथ' है, जिससे क्रिया की जाती है, परंतु अपादान कारक का 'से' चिह्न 'अलग होने' के भाव को प्रकट करता है; जैसे–

करण कारक	अपादान कारक
रमेश कार से मथुरा जाएगा।	राहुल छत से गिर गया।
समीर कलम से चित्र बनाएगा।	मयंक के हाथ से कलम छूट गई।

उपर्युक्त सभी वाक्यों में 'से' कारक चिह्न का प्रयोग हुआ है, लेकिन करण कारक में 'से' विभक्ति 'के द्वारा' के रूप में प्रयुक्त हुई है और अपादान कारक में अलग होने के रूप में प्रयुक्त हुई है।

2. उचित विभक्तियाँ लिखकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) बेटा माँ **के लिए** उपहार लाया है।
(ख) सिपाही **ने** चोर **को** डंडे **से** मारा।
(ग) **अरे!** तुम कब आए?
(घ) डॉक्टर **ने** मरीज **को** दवा दी।
(ङ) पिता जी कार **से** आए हैं।

3. निम्नलिखित वाक्यों में रंगीन पदों के कारक लिखिए–

(क) अधिकरण कारक (ख) करण कारक (ग) कर्म कारक
(घ) संबंध कारक (ङ) अपादान कारक

4. निम्नलिखित कारक-चिह्नों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) के द्वारा — हम रेल **के द्वारा** यात्रा करते हैं।
(ख) पर — पुस्तकें मेज **पर** रखी हैं।
(ग) की — यह सुधा **की** पुस्तक है।
(घ) ने — माता जी **ने** खाना बनाया।
(ङ) के लिए — रवि ने अपनी बहन **के लिए** एक फ्रॉक खरीदा।

5. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (i) (ख) (iii) (ग) (i) (घ) (i)

15. क्रिया

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) जिन शब्दों से किसी कार्य के होने या करने का बोध हो, उसे क्रिया कहते हैं।

(ख) **सकर्मक व अकर्मक क्रिया में अंतर–**

सकर्मक क्रिया में कर्म होता है और क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है, जबकि अकर्मक क्रिया में कर्म नहीं होता तथा क्रिया का फल कर्ता पर पड़ता है; जैसे–

सकर्मक क्रिया	**अकर्मक क्रिया**
नीलम पुस्तक पढ़ती है।	मानव हँसता है।
माली पानी देता है।	नदी बहती है।

(ग) प्रयोग के आधार पर क्रिया के छह भेद होते हैं–(i) सामान्य क्रिया (ii) संयुक्त क्रिया (iii) नामधातु क्रिया (iv) प्रेरणार्थक क्रिया (v) पूर्वकालिक क्रिया (vi) विधिसूचक क्रिया।

(घ) धातु से आशय है–क्रिया का सामान्य रूप बनाने वाला क्रिया का मूल अंश या रूप।

2. निम्नलिखित वाक्य सकर्मक और अकर्मक क्रिया के उदाहरण हैं। इन वाक्यों के सामने सकर्मक या अकर्मक, जो उचित हो लिखिए–

(क) सकर्मक क्रिया (ख) सकर्मक क्रिया

(ग) सकर्मक क्रिया (घ) अकर्मक क्रिया

3. निम्नलिखित वाक्यों में क्रियाओं को रेखांकित करके उनके भेदों को लिखिए–

(क) प्रिया ने पाठ <u>पढ़ लिया</u>।	**संयुक्त क्रिया**
(ख) हमें अनजान लोगों से <u>बतियाना</u> नहीं चाहिए।	**नामधातु क्रिया**
(ग) सेठ ने अपनी पुत्री से भोजन <u>बनवाया</u>।	**प्रेरणार्थक क्रिया**
(घ) विवेक <u>पढ़कर</u> सो गया।	**पूर्वकालिक क्रिया**

4. निम्नलिखित शब्दों से नामधातु क्रियाएँ बनाइए–

(क)	रंग	**रँगना**	(ख)	अपना	**अपनाना**
(ग)	गर्म	**गर्माना**	(घ)	लाज	**लजाना**
(ङ)	थपथप	**थपथपाना**	(च)	दोहरा	**दोहराना**
(छ)	हाथ	**हथियाना**	(ज)	बात	**बतियाना**

5. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (iv) (ख) (i) (ग) (ii) (घ) (iii)

16. काल

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) काल से अभिप्राय है–क्रिया का वह रूप जो किसी कार्य के करने या होने के समय का बोध कराता है।

(ख) काल के तीन भेद होते हैं–(i) भूतकाल, (ii) वर्तमान काल, (iii) भविष्यत् काल।

(ग) क्रिया के जिस रूप से कार्य के बीते हुए समय में होने का बोध हो, उसे भूतकाल कहते हैं। इसके छह भेद होते हैं।

(घ) क्रिया के जिस रूप से यह बोध हो कि कार्य आने वाले समय में होगा, वह भविष्यत् काल कहलाता है।

2. निम्नलिखित वाक्यों को निर्देशानुसार काल-परिवर्तन करके पुनः लिखिए–

(क) वह तैयार है। (ख) हमें अच्छा लगा।

(ग) वह क्रिकेट खेलेगा। (घ) मानव गृह-कार्य कर रहा होगा।

3. निम्नलिखित क्रिया शब्दों से तीनों कालों की वाक्य-रचना कीजिए–

पढ़ना रमन कहानियाँ पढ़ता था।
रमन कहानियाँ पढ़ता है।
रमन कहानियाँ पढ़ेगा।

जाना विभु विद्यालय जाता था।
विभु विद्यालय जाता है।
विभु विद्यालय जाएगा।

4. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (iii) (ख) (ii)

17. वाच्य

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) क्रिया के जिस रूप से उसके कर्ता, कर्म या भाव के अनुसार होने का बोध हो, उसे वाच्य कहते हैं। वाच्य के तीन भेद होते हैं।

(ख) जिस वाक्य की क्रिया कर्ता के अनुसार होती है, उसे कर्तृवाच्य कहते हैं; जैसे–माता जी सो रही हैं। आकाश में पक्षी उड़ रहे हैं।
यहाँ 'माता जी' और 'पक्षी' कर्ता हैं तथा क्रिया रूप उसी के अनुसार है।

(ग) क्रिया के जिस रूप में कर्म की प्रधानता होती है तथा वाक्य में क्रिया कर्म के लिंग, वचन आदि के अनुसार ही प्रयोग की जाती है, उसे कर्मवाच्य कहते हैं; जैसे–तुषार से आम खाया गया। नानी के द्वारा कहानी सुनाई गई।
यहाँ 'आम', 'कहानी'–इन वाक्यों के कर्म हैं। इन वाक्यों की क्रियाएँ इन्हीं कर्म के लिंग और वचन के अनुसार ही प्रयुक्त हुई हैं। अतः ये कर्मवाच्य की क्रियाएँ हैं।

(घ) क्रिया के जिस रूप में न कर्ता की प्रधानता हो और न कर्म की, बल्कि जहाँ क्रिया का भाव ही मुख्य विषय हो, उसे भाववाच्य कहते हैं।

2. निर्देशानुसार वाक्य बदलिए–

(क) धोबी ने कपड़े धोए।

(ख) दादी के द्वारा कहानी सुनाई जाती है।

(ग) मैं नहीं हँसता।

(घ) पक्षियों से उड़ा जाता है।

(ङ) मदन से गाया जाता है।

3. निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त वाच्यों के भेद पहचानकर लिखिए–

(क) कर्तृवाच्य (ख) कर्मवाच्य (ग) कर्मवाच्य (घ) भाववाच्य

4. निम्नलिखित वाक्यों को कर्तृवाच्य में बदलकर लिखिए–

(क) सलमान नहीं गाएगा। (ख) आओ, चलें।

(ग) पक्षी उड़ते हैं। (घ) मैं भूख नहीं सह सकता।

5. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (iii) (ख) (ii) (ग) (i)

18. अव्यय शब्द

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) वे शब्द जिनमें लिंग, वचन और काल की दृष्टि से कोई रूप परिवर्तन नहीं होता है, उन्हें अव्यय या अविकारी शब्द कहते हैं।

(ख) वे अव्यय शब्द जो वाक्य में किसी शब्द के बाद लगकर विशेष प्रकार का बल देते हैं, उन्हें निपात कहते हैं।

(ग) अव्यय शब्द पाँच प्रकार के होते हैं–

(i) क्रियाविशेषण; जैसे–प्रतिदिन, धीरे-धीरे।

(ii) संबंधबोधक; जैसे–के समीप, की खातिर।

(iii) समुच्चयबोधक; जैसे–अन्यथा, और।

(iv) विस्मयादिबोधक; जैसे–शाबाश!, अरे!।

(v) निपात; जैसे–मात्र, ही।

2. उचित क्रियाविशेषण लिखकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) वह **अचानक** गायब हो गया।

(ख) उसकी चाल **तेज** है।

(ग) गरीबों की सहायता **अवश्य** करनी चाहिए।

(घ) चाय में मीठा **कम** डाला है।

(ङ) उतने चावल लो **जितने** खा सको।

3. निम्नलिखित वाक्यों में से समुच्चयबोधक अव्यय छाँटकर लिखिए–

(क) यदि, तो (ख) अथवा (ग) क्योंकि

(घ) कि (ङ) तो

4. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (iv) (ख) (iv) (ग) (ii) (घ) (i)

19. वाक्य-विचार

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) शब्दों के व्यवस्थित व सार्थक समूह को वाक्य कहते हैं; जैसे–रोहित क्रिकेट खेलता है। शालू भोजन पका रही है।

(ख) वाक्य के दो अंग होते हैं–

(i) उद्देश्य–वाक्य में जिसके बारे में बताया जाता है, उसे उद्देश्य कहते हैं।

(ii) विधेय–उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहा जाता है, उसे विधेय कहते हैं।

(ग) रचना के आधार पर वाक्यों के निम्नलिखित तीन भेद हैं–

(i) सरल (साधारण) वाक्य–जिस वाक्य में एक उद्देश्य और एक ही विधेय हो, उसे सरल वाक्य कहा जाता है; जैसे–सीमा कविता बोल रही है।

(ii) संयुक्त वाक्य–जिस वाक्य में दो स्वतंत्र उपवाक्य किसी समानाधिकरण समुच्चयबोधक द्वारा परस्पर जुड़े हुए हों, वह संयुक्त वाक्य होता है; जैसे–पहले वह मोटा था और अब चिंता में पतला हो गया है।

यह वाक्य स्वतंत्र उपवाक्य समानाधिकरण समुच्चयबोधक क्रमशः 'और' से जुड़ा है; अतः यह संयुक्त वाक्य है।

(iii) मिश्रित वाक्य–जिस वाक्य में एक मुख्य उपवाक्य और शेष आश्रित उपवाक्य हों, उसे मिश्रित या मिश्र वाक्य कहा जाता है। मिश्र वाक्य में उपवाक्य व्यधिकरण समुच्चयबोधक शब्दों द्वारा जुड़े होते हैं; जैसे–प्रधानाचार्य ने कहा कि कल छुट्टी रहेगी।

(घ) अर्थ के आधार पर वाक्य आठ प्रकार के होते हैं–

(i) विधानवाचक वाक्य–जिन वाक्यों में क्रिया के करने या होने का सामान्य कथन हो, उन्हें विधानवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे–गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस की रचना की।

(ii) निषेधवाचक वाक्य–जिन वाक्यों से क्रिया के न करने या न होने का बोध हो, उन्हें निषेधवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे–वह साइकिल के बिना चल नहीं सकता।

(iii) प्रश्नवाचक वाक्य–जिन वाक्यों से किसी कार्य अथवा विषय के संबंध में प्रश्न पूछने का बोध हो, वे प्रश्नवाचक वाक्य कहलाते हैं; जैसे–वह क्यों नहीं आया?

(iv) विस्मयवाचक वाक्य–जिन वाक्यों से प्रसन्नता, आश्चर्य, घृणा, शोक जैसे भावात्मक आवेगों का बोध हो, उन्हें विस्मयवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे–अरे! इतना लंबा आदमी।

(v) आज्ञावाचक वाक्य–जो वाक्य आज्ञा, आदेश या उपदेश का बोध कराए, उन्हें आज्ञावाचक वाक्य कहते हैं; जैसे–आप चुप रहिए।

(vi) इच्छासूचक वाक्य–जिन वाक्यों से कर्ता की कामना, इच्छा, आशा आदि का बोध हो, वे इच्छासूचक वाक्य कहलाते हैं; जैसे–ईश्वर तुम्हें चिरायु करे!

(vii) संदेहवाचक वाक्य–जिन वाक्यों से कार्य के होने या करने में संदेह प्रकट होता हो, वे संदेहवाचक वाक्य कहलाते हैं; जैसे–आज शायद तेज गरमी होगी।

(viii) संकेतवाचक वाक्य–जिन वाक्यों से एक क्रिया का दूसरी क्रिया पर निर्भर होने का बोध हो, उन्हें संकेतवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे–यदि वह आता, तो मैं दुकान चला जाता।

2. निम्नलिखित वाक्यों के भेद अर्थ के आधार पर लिखिए–

(क) आज्ञावाचक वाक्य (ख) विस्मयवाचक वाक्य

(ग) निषेधवाचक वाक्य (घ) आज्ञावाचक वाक्य

(ङ) इच्छासूचक वाक्य

3. निम्नलिखित वाक्यों को साधारण वाक्यों में बदलिए–

(क) शेखर आकर फौरन ही वापस चला गया।

(ख) माँ थैला उठाकर बाजार चली गईं।

(ग) घड़ी नीचे गिरकर टूट गई।

(घ) वर्षा होने के कारण हम घर से बाहर नहीं निकले।

(ङ) मैंने पेड़ पर बंदर बैठा देखा।

4. निम्नलिखित वाक्यों को संयुक्त वाक्यों में बदलिए–

(क) वह पढ़ा और खेलने चला गया।

(ख) बारिश होती है और मोर नाचता है।

(ग) चाचा जी पहले आगरा और वहाँ से चेन्नई जाएँगे।

(घ) राहुल आया और चला गया।

(ङ) माँ ने बच्चे का रोना सुना इसलिए दुखी हो गई।

5. निम्नलिखित वाक्यों को मिश्र वाक्यों में बदलिए–

(क) जब तुमने कहा तो सब मान गए।

(ख) जो मेरा शक्तिशाली घोड़ा है, वह तेज दौड़ता है।

(ग) उसने पत्र दिया उसके बाद वह चला गया।

(घ) जो लोग दुष्ट होते हैं, वे दूसरों की निंदा करते हैं।

(ङ) जैसे ही सभा समाप्त हुई, सब लोग चले गए।

6. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (i) (ख) (i) (ग) (iv) (घ) (i)

20. विराम-चिह्न

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) लिखित भाषा में विराम को प्रकट करने के लिए प्रयोग किए जाने वाले चिह्न विराम-चिह्न कहलाते हैं।

(ख) विस्मयसूचक चिह्न का प्रयोग विस्मय, शोक, घृणा, हर्ष या आश्चर्य आदि का भाव प्रकट करने अथवा किसी को संबोधित करने के लिए किया जाता है।

2. निम्नलिखित विराम-चिह्नों को पहचानकर उनके नाम लिखिए–

?	प्रश्नवाचक चिह्न	;	अर्ध विराम
।	पूर्ण विराम	!	विस्मयसूचक चिह्न
,	अल्प विराम	o	लाघव चिह्न
-	योजक चिह्न	()	कोष्ठक चिह्न

3. निम्नलिखित वाक्यों में उपयुक्त स्थानों पर विराम-चिह्न लगाकर वाक्य पुनः लिखिए–

(क) माँ बच्चे को सुलाती है।
(ख) वाह! कितनी अच्छी गुड़िया है।
(ग) क्या सोहन ज्वर से पीड़ित है?
(घ) तुम्हारा घर कहाँ है?
(ङ) नहीं, मैंने ऐसा कभी नहीं कहा।
(च) यह कहानी 'कादंबिनी' में छपी है।
(छ) दशरथ के पुत्र थे–राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न।
(ज) मम्मी ने पूछा–"राजू कहाँ है?"
(झ) बच्चा सोते-सोते डर गया।
(ञ) किरण, रवि और राजेश रात-दिन परिश्रम कर रहे हैं।

4. निम्नलिखित विराम-चिह्नों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए–

(क) हिंदी हमारी राजभाषा है।
(ख) माँ–सत्य का साथ तुम्हें उन्नति की ओर ले जाएगा।
(ग) वह परिश्रमी, ईमानदार और दयालु है।
(घ) तुमने मुझसे झूठ क्यों बोला?

5. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (i) (ख) (ii) (ग) (ii) (घ) (ii)

21. मुहावरे और लोकोक्तियाँ

अभ्यास-कार्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) मुहावरों से आशय है–अपने शाब्दिक अर्थ से भिन्न अर्थ अर्थात् विशेष अर्थ प्रकट करने वाले शब्द-समूह या वाक्यांश।

(ख) लोकोक्ति से अभिप्राय है–लोक में प्रचलित जन-साधारण की युक्ति या कथन।

(ग) **मुहावरे व लोकोक्ति में अंतर–**
मुहावरे का स्वतंत्र प्रयोग नहीं हो सकता, जबकि लोकोक्ति अपने आप में पूर्ण वाक्य होती है; अतः स्वतंत्र रूप से प्रयोग की जाती है; जैसे–(आँखें दिखाना)–मुहावरा (लकीर का फकीर होना)–लोकोक्ति।

- परीक्षा में कम अंक आने पर माँ ने पुत्र को आँखें दिखाईं। (मुहावरा वाक्य का अंग बन गया।)
- बुद्धि से काम लो, लकीर के फकीर मत बनो। (लोकोक्ति का स्वतंत्र प्रयोग है।)

2. निम्नलिखित मुहावरों व लोकोक्तियों के अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) अंग-अंग मुसकुराना **(बहुत खुश होना)**–जब शालिनी वार्षिक परीक्षा में उत्तीर्ण हुई, तो उसका **अंग-अंग मुसकुरा उठा**।

(ख) गड़े मुरदे उखाड़ना **(बीती हुई बात को व्यर्थ याद करना)**–हमें **गड़े मुरदे न उखाड़कर**, भविष्य की चिंता करनी चाहिए।

(ग) गागर में सागर भरना **(थोड़े में बहुत कुछ कहना)**–बिहारी ने अपने दोहों में **गागर में सागर भर दिया है**।

(घ) मान-न-मान, मैं तेरा मेहमान **(जबरदस्ती गले पड़ना)**–मैं तो उस लड़की को जानती भी नहीं, बड़ी शान से कार में आ बैठी, इसी को कहते हैं–**मान-न-मान, मैं तेरा मेहमान**।

3. दिए गए वाक्यों में से मुहावरे चुनकर लिखिए–

(क) लोहा लेना (ख) डींगे मारना

(ग) आँखें खुलना (घ) आकाश से बातें करना

4. निम्नलिखित वाक्यों के लिए उपयुक्त लोकोक्तियाँ लिखिए–

(क) दोहरा लाभ होना = **आम के आम गुठलियों के दाम**

(ख) अधिक समय में कम काम = **नौ दिन चले अढ़ाई कोस**

(ग) प्रोत्साहन देने पर भी परिवर्तन न होना = **ढाक के तीन पात**

(घ) आश्रयदाता से शत्रुता = **जल में रहकर मगर से बैर**

(ङ) सच्चा न्याय करना = **दूध का दूध, पानी का पानी**

5. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (i) (ख) (ii) (ग) (i)

खंड (ख) : रचना

22. पत्र-लेखन

अभ्यास

1. आपकी कक्षा में जिन वस्तुओं की आवश्यकता है, उनके संदर्भ में प्रधानाचार्य को एक पत्र लिखिए।

सेवा में,
प्रधानाचार्य
केंद्रीय विद्यालय
मैसूर।
मान्यवर,

हमारी कक्षा का श्यामपट्ट इतना घिस गया है कि इस पर कुछ लिखना संभव नहीं है। डस्टर तथा चाक भी नहीं हैं। बाहर जाने का अनुमति-पत्र भी नहीं है। दो-तीन बार मुख्य लिपिक से इन वस्तुओं की व्यवस्था के लिए प्रार्थना कर चुके हैं, पर उन्होंने कोई ध्यान नहीं दिया।

कृपया आप इन वस्तुओं की व्यवस्था करने का आदेश दें।

आपका शिष्य

नीरज बंसल

कक्षा-8 'सी'

दिनांक : .....

2. अपने मित्र को ग्रीष्मावकाश में अपने साथ गाँव चलने का निमंत्रण देते हुए पत्र लिखिए।

परीक्षा भवन,

दिनांक : .....

प्रिय मित्र,

सप्रेम नमस्ते।

तुम्हारी कुशलता की कामना करते हुए पत्र लिखने में देरी के लिए क्षमा चाहता हूँ। मित्र! गर्मी की छुट्टियाँ निकट आ रही हैं और पिता जी ने कल ही बताया कि इस बार हम सब गाँव जा रहे हैं। पिता जी की यह बात सुनते ही मेरा ध्यान सबसे पहले तुम्हारी ओर गया, क्योंकि पिछली बार जब हम मिले थे तो तुमने कहा था कि तुम्हारी गाँव जाने की प्रबल इच्छा है। मैंने अपने पिता जी से भी बात कर ली है। बस तुम अपनी माता जी से बात कर लेना और ग्रीष्मावकाश होते ही हमारे साथ गाँव चलना।

अपने पिता जी व माता जी को मेरा प्रणाम कहना।

तुम्हारा मित्र

आशीष

3. बिजली आपूर्ति विभाग के नाम बार-बार बिजली जाने पर शिकायत-पत्र लिखिए।

मुख्य अभियंता,

विद्युत विभाग,

राजनगर गाजियाबाद।

विषय : क्षेत्र में बिजली की अनियमित आपूर्ति के संबंध में।

महोदय,

मैं आपका ध्यान राजनगर क्षेत्र में बिजली की अनियमित आपूर्ति की तरफ दिलाना चाहता हूँ। इस क्षेत्र में पिछले दो महीने से बिजली बार-बार जाती-आती रहती है। कई बार यह चार-पाँच घंटे तक नहीं आती। इसके कारण हम सभी का जीवन कष्टमय हो गया है। अँधेरे का फायदा उठाकर अपराधी चोरी, छेड़छाड़ आदि घटनाओं को अंजाम देते हैं। पर्याप्त बिजली न मिलने के कारण विद्यार्थी भी बहुत परेशान हैं। परीक्षाएँ नजदीक आ रही हैं।

आपसे निवेदन है कि इस क्षेत्र की बिजली आपूर्ति को नियमित करने का कष्ट करें।

धन्यवाद।

भवदीय,
क, ख, ग
परीक्षा भवन,
दिनांक : 15 फरवरी, 20xx

4. डाकपाल को डाकिये के लापरवाही से पत्र बाँटने के लिए एक शिकायती-पत्र लिखिए।

सेवा में,
डाकपाल महोदय
प्रधान डाकघर
सैक्टर-7
नोएडा
दिनांक : 15.8.20.....
मान्यवर,
मैं सैक्टर-7 नोएडा का निवासी हूँ। हमारे क्षेत्र का डाकिया श्यामलाल बहुत ही लापरवाह है। वह लोगों के पत्र ठीक समय पर नहीं देता। यही नहीं, कभी-कभी तो बच्चों के हाथ में पत्र दे देता है, तो बच्चे इधर-उधर फेंक देते हैं। किसी का पत्र किसी और घर में डाल जाना तो आम बात है। पत्रिकाओं को तो वह डालकर ही नहीं जाता। उसकी इसी लापरवाही के कारण पिछले सप्ताह ही मुझे नौकरी के साक्षात्कार का पत्र देरी से मिला जिसके कारण मैं साक्षात्कार नहीं दे पाया और नौकरी मेरे हाथ से चली गई।
आपसे अनुरोध है कि आप डाकिये के विरुद्ध उचित कार्यवाही करें अन्यथा उसके स्थान पर नया डाकिया नियुक्त करें, जिससे हमारी समस्या का समाधान हो सके।
धन्यवाद।
रामचंद्र शर्मा
मकान न0 212, सैक्टर-7
नोएडा

7. अपने छोटे भाई को समय का सदुपयोग करने के लिए पत्र लिखिए।

34, अशोक नगर,
दिल्ली।
दिनांक : 2 अक्टूबर, 20 .....
प्रिय हरीश,
सदा खुश रहो।
मुझे विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि तुम आजकल अपना समय पढ़ाई में न लगाकर अन्य व्यर्थ के कार्यों में गँवा रहे हो।
तुम्हें ज्ञात होना चाहिए कि बीता हुआ समय कभी भी वापस नहीं लौटता और जो समय का सदुपयोग नहीं करता, जीवन भर पछताता है। इसलिए समय की महत्ता को समझते हुए समय पर पढ़ाई करो, खेलो व आराम करो। यदि तुम समय का सदुपयोग नहीं करोगे, तो शेष जीवन दुःखों में बीतेगा। अतः प्रत्येक कार्य समय पर करो और आज का काम कल पर मत छोड़ो। मुझे आशा एवं पूर्ण विश्वास है कि तुम मेरी इन बातों व सुझावों

की ओर अवश्य ध्यान दोगे एवं समय का उचित सदुपयोग करोगे।

तुम्हारा बड़ा भाई

मोहन

8. बड़ी बहन द्वारा भाई को रक्षाबंधन के अवसर पर राखी भेजते हुए पत्र लिखिए।

310, लक्ष्मीबाई नगर

नई दिल्ली

दिनांक : 30 जुलाई, 20.....

प्रिय अनुराग

सस्नेह।

तुम्हारा पत्र कल ही प्राप्त हुआ। प्रथम-सत्र की परीक्षा में तुमने कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया, यह पढ़कर अत्यंत प्रसन्नता हुई। भगवान से यही प्रार्थना है कि तुम सदा इसी प्रकार हर क्षेत्र में गौरव प्राप्त करो।

इस वर्ष रक्षाबंधन 5 अगस्त को पड़ रहा है। मैं हर वर्ष की तरह, इस वर्ष भी तुम्हें इस अवसर पर 'राखी' भेज रही हूँ। इसे निश्चित दिन अपनी कलाई पर बाँध लेना। 'राखी' का यह सूत्र भाई-बहन के प्रेम का प्रतीक है। इस सूत्र के साथ तुम्हारी बड़ी बहन का प्यार व आशीर्वाद बँधा है। यह सूत्र, जीवन में आने वाली हर कठिनाई से तुम्हारी रक्षा करेगा।

मम्मी व पापा को मेरा प्रणाम कहना।

तुम्हारी बड़ी बहन

ममता

9. परीक्षा में प्रथम आने पर मित्र को बधाई-पत्र लिखिए।

8 बी, पीतमपुरा

नई दिल्ली

दिनांक : .....

प्रिय मोहित,

तुम्हारे द्वारा प्रेषित पत्र से मुझे ज्ञात हुआ कि तुमने वार्षिक परीक्षा में विद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। इस समाचार को पढ़कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। इस सफलता के लिए मेरी ओर से हार्दिक बधाई। मैं आशा करता हूँ कि ईश्वर की कृपा से आगे की कक्षाओं में भी इसी प्रकार सफलता प्राप्त करोगे।

मेरी शुभकामनाएँ सदैव तुम्हारे साथ हैं।

तुम्हारा शुभचिंतक

करण उपाध्याय

10. पेयजल संकट के संबंध में जल बोर्ड को शिकायती-पत्र लिखिए।

अध्यक्ष महोदय

नगर निगम

टाउन हाल, दिल्ली।

विषय : पेयजल की कठिनाई दूर करने के लिए पत्र।

मान्यवर,

विगत कई दिनों से तिमारपुर क्षेत्र के सरकारी आवासों में पेयजल की आपूर्ति नियमित रूप से नहीं हो रही है। कभी-कभी पानी का दबाव इतना कम होता है, कि दूसरी मंजिल तक भी पानी नहीं पहुँच पाता। तीन-चार दिन से पानी की व्यवस्था इतनी खराब है, कि लोग एक-एक बूँद पानी के लिए तरस रहे हैं। गरमी के दिनों में पानी की समस्या उग्र रूप धारण कर लेती है, कई दिनों से नहाना-धोना तो दूर पीने के लिए भी पानी नहीं मिल पा रहा है। चारों ओर पानी के लिए त्राहि-त्राहि-सी मच गई है।

पानी सुचारू रूप से न मिल पाने के कारण लोगों की कठिनाइयाँ बढ़ गई हैं। अतः आपसे अनुरोध है कि पेयजल की कठिनाई को दूर करने का प्रबंध करें, जिससे इस क्षेत्र के निवासियों को पर्याप्त मात्रा में पेयजल उपलब्ध हो सके।

धन्यवाद।

भवदीय

कमल खन्ना,

13/49, तिमारपुर,

दिल्ली।

23. अनुच्छेद-लेखन

अभ्यास

निम्नलिखित शीर्षकों पर अनुच्छेद लिखिए–

(क) मेरा प्रिय पर्यटन-स्थल

मेरा पसंदीदा पर्यटन स्थल महाबलेश्वर है। महाबलेश्वर हिल स्टेशन एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल है।

महाबलेश्वर में घूमने के लिए कई जगहें हैं। इस जगह का वातावरण बहुत सुंदर और लुभावना है। यहाँ के ठंडे मौसम के कारण, इस जगह वर्ष के किसी भी समय पर जाया जा सकता है।

मैं यहाँ 3-5 बार जा चुका हूँ। मैंने यहाँ वेना झील, प्रतापगढ़ किला, लिंगमाला फॉल्स, टेबललैंड, आर्थर सीट, विल्सन प्वाइंट, सनसेट प्वाइंट जैसी जगहें देखी हैं।

इसके अतिरिक्त यहाँ के प्रसिद्ध गार्डन में भी बहुत मजा आता है। यहाँ विभिन्न रस, जैम, चॉकलेट, जलेबी मिलते हैं।

महाबलेश्वर का स्थानिक बाजार बहुत प्रसिद्ध है। वहाँ अलग-अलग प्रकार की चीजें, चप्पल, कपड़े मिलते हैं। महाबलेश्वर आने के बाद मैं यहाँ की लोकप्रिय स्ट्रॉबेरी आइसक्रीम जरूर खाता हूँ।

मुंबई के पास होने की वजह से और यहाँ के प्राकृतिक मौसम के कारण महाबलेश्वर मेरा पसंदीदा पर्यटन स्थल है।

(ख) रोचक रेल-यात्रा

मेरा स्कूल गर्मियों की छुट्टी के लिए बंद हो गया। मेरा भाई मुंबई में रहता है और कुछ दिन रहने के लिए मुझे आमंत्रित किया। मैंने मुंबई रेल से जाने का फैसला किया।

अगले दिन मैं रेलवे स्टेशन पहुँचा और रेल में बैठ गया। कुछ ही क्षण में रेल ने रफ्तार पकड़ ली। बाहर से बच्चे चलती रेलगाड़ी को देखकर अलविदा कर रहे थे। कुछ देर बाद हरे-भरे खेतों से गुजरने लगे। रेल यात्रा के दौरान बीच-बीच में चाय, नमकीन, चने, आदि सामान बेचने वाले भी आते थे। रेल द्वारा यात्रा का इतना लंबा सफर कैसे तय हुआ पता ही नहीं चला। वास्तव में रेल द्वारा यात्रा करना सस्ता और आरामजनक है।

(ग) प्रदूषण

आज के युग को 'विज्ञान का युग' कहा जाता है। आज मनुष्य ने पृथ्वी, आकाश तथा जल पर अपना आधिपत्य जमा लिया है तथा मनुष्य की सुख-सुविधा के लिए, अनेक मशीनों एवं आविष्कारों को जन्म दिया है। समय की गति के साथ-साथ जनसंख्या में भी लगातार वृद्धि हुई है। जनसंख्या की वृद्धि के कारण उसने प्राकृतिक वनों को काट-काटकर या तो उद्योग-धंधों का विस्तार किया है या रहने के लिए स्थान बनाए हैं। वनों की अंधा-धुंध कटाई के कारण प्राकृतिक संतुलन बिगड़ गया है। वर्षा, जलवायु तथा भूमि पर इसका दुष्प्रभाव पड़ा है। वनों के कारण वातावरण शुद्ध रहता था, पर आज मिलों की चिमनियों से निकलते धुएँ तथा मिलों से बहने वाले दूषित पदार्थों से वातावरण प्रदूषित हो गया है। नगरों में बसों, ट्रकों तथा अन्य वाहनों से धुआँ निकलता है जिससे अनेक प्रकार के रोग हो रहे हैं। फेफड़ों के रोग, रक्त या चर्म के रोग बढ़ते जा रहे हैं। धुएँ में जहरीले पदार्थ होते हैं, जो साँस के द्वारा हमारे शरीर में पहुँच जाते हैं। इसी प्रकार मिलों से बेकार हो जाने वाला पदार्थ नदियों में बहा दिया जाता है। इससे पानी प्रदूषित हो जाता है, जिसे पीने से अनेक प्रकार के रोग हो रहे हैं। प्रदूषण की समस्या बहुत भयंकर समस्या है। वनों की अंधा-धुंध कटाई पर रोक लगाई जानी चाहिए तथा वृक्षारोपण पर बल दिया जाना चाहिए। इससे प्रदूषण कम होता जाएगा, क्योंकि वृक्ष दूषित वायु (कार्बन डाइ-ऑक्साइड) को ग्रहण कर शुद्ध वायु (ऑक्सीजन) प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त सरकार को चाहिए कि उद्योग-धंधों को शहरों की घनी आबादी से दूर स्थापित करने के लिए कानून बनाए, क्योंकि प्रदूषण का दुष्प्रभाव शहरों पर ही अधिक पड़ता है। हम सबका भी यह कर्तव्य है कि हम वृक्षारोपण के महत्व को समझें तथा खूब वृक्ष लगाएँ।

(घ) राजभाषा हिंदी

प्रत्येक राष्ट्र किसी-न-किसी भाषा को राजभाषा के रूप में अपनाता है। भारतवर्ष ने राजभाषा के रूप में हिंदी को अपनाया है। हिंदी का विकास व उद्भव मुख्यतया संस्कृत भाषा से हुआ है। संस्कृत भाषा का सारा ज्ञान हिंदी में ही भरा पड़ा है। यह हमारे सुसंस्कृत समाज व साहित्य की भाषा है। वर्तमान समय में हमारी राजभाषा विश्व के अनेक देशों में बोली, लिखी तथा पढ़ी जाती है। भाषा विचारों को प्रकट करने का एक सशक्त व अति उत्तम माध्यम है। अतः हमें इसके विकास व उन्नति में पूर्ण सहयोग देना चाहिए। हमारे राष्ट्र की राजभाषा एक ही है और वह है हिंदी।

24. कहानी-लेखन

अभ्यास

(क) नीचे दिए गए संकेतों के आधार पर कहानियाँ पूरी कीजिए और उनके शीर्षक लिखिए–

1. दर्जी और हाथी

किसी गाँव में एक दर्जी की दुकान थी। पास के जंगल में एक हाथी रहता था। वह हाथी रोज सुबह तालाब में स्नान करने जाता था। रास्ते में दर्जी की दुकान पड़ती थी। दर्जी प्रतिदिन हाथी को केला खाने के लिए देता था। इस प्रकार दर्जी और हाथी में दोस्ती हो गई।

एक दिन दर्जी किसी काम से गाँव से बाहर चला गया। दुकान पर दर्जी का लड़का था। हाथी रोज की तरह आया और केला खाने के लिए सूँड़ दर्जी की दुकान में कर दी। दर्जी के लड़के ने हाथी की सूँड़ में सूई चुभो दी। हाथी उस समय तो चुपचाप चला गया, लेकिन तालाब में नहाने के बाद वह अपनी सूँड़ में गंदा पानी भरकर लाया और खिड़की में से दर्जी की दुकान में डालकर अपना बदला ले लिया।

जब दर्जी वापस लौटकर आया तो लड़के ने सारा हाल कह सुनाया। दर्जी लड़के पर बहुत क्रोधित हुआ और बताया कि जैसा व्यवहार तुम किसी के साथ करोगे, वैसा ही व्यवहार वह तुम्हारे साथ करेगा। इसलिए किसी के साथ बुरा व्यवहार नहीं करना चाहिए।

शिक्षा–जैसे को तैसा।

2. कौआ और लोमड़ी

एक दिन एक कौए को कहीं से एक रोटी मिली। वह रोटी को लेकर एक पेड़ पर जा बैठा। इतने में एक लोमड़ी भी उधर आ निकली। वह बहुत भूखी थी। उसने कौए के मुँह में रोटी देखी, तो उसके मुँह में पानी भर आया। वह उससे रोटी छीनने का उपाय सोचने लगी।

तब उसने कौए से कहा, "अरे कौए भाई! तुम कितना अच्छा गाते हो! मुझे भी एक गाना सुना दो। मैं तुम्हारा गाना सुनकर बहुत खुश होऊँगी।" कौआ अपनी प्रशंसा सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने गाने के लिए जैसे ही अपना मुँह खोला, रोटी नीचे गिर पड़ी। लोमड़ी झट से रोटी उठाकर भाग गई। कौआ देखता ही रह गया और बहुत पछताया।

शिक्षा–झूठी प्रशंसा से कभी खुश नहीं होना चाहिए।

3. चतुर खरगोश

एक जंगल में एक शेर रहता था। वह प्रतिदिन कई पशुओं को मारकर अपनी भूख शांत करता था, इससे सभी जानवर बहुत दुखी रहते थे। इसके समाधान के लिए उन्होंने एक सभा बुलाई और यह निर्णय लिया कि शेर के भोजन के लिए प्रतिदिन एक जानवर भेजा जाएगा। जानवरों के इस निर्णय को जब शेर ने सुना तो वह उनकी बात मान गया। अब प्रतिदिन बारी-बारी से एक जानवर शेर का आहार बनने लगा। एक दिन एक चालाक खरगोश की बारी आई। वह बहुत देर बाद शेर के पास पहुँचा। शेर ने उससे देर से आने का कारण पूछा।

खरगोश ने बताया, "महाराज! रास्ते में मुझे एक दूसरा शेर मिला और कहने लगा कि मैं ही इस जंगल का राजा हूँ।" खरगोश की यह बात सुनकर शेर दहाड़ा और बोला, "मुझे उस दूसरे शेर से मिलवाओ, मैं उसे मार डालूँगा।"

खरगोश उसे एक गहरे कुएँ के पास ले गया। शेर ने जब कुएँ में अपनी परछाईं देखी, तो उसने उसे दूसरा शेर समझा और दहाड़ने लगा तब उसे कुएँ के अंदर से ऐसी ही आवाज सुनाई दी। उस आवाज को दूसरे शेर की दहाड़ समझकर वह कुएँ में कूद गया और मर गया। इस प्रकार खरगोश ने अपनी समझदारी और चतुराई से जंगल के सभी जानवरों की जान बचा ली।

शिक्षा–हमें संकट में धीरज और साहस से काम लेना चाहिए।

4. ईमानदार लकड़हारा

एक बार एक गाँव में एक लकड़हारा रहता था। वह बहुत गरीब था। वह एक छोटी-सी झोंपड़ी में अपने परिवार के साथ रहता था। वह लकड़ियाँ काटकर और उन्हें बेच कर अपने बच्चों का पालन-पोषण किया करता था। एक दिन वह नदी के किनारे एक वृक्ष पर चढ़कर लकड़ियाँ काट रहा था। अचानक उसके हाथ से कुल्हाड़ी छूटकर नदी में गिर गई। वह इतना गरीब था कि वह दूसरी कुल्हाड़ी नहीं खरीद सकता था। वह नदी के किनारे बैठ गया और रोने लगा।

तभी वहाँ जल देवता प्रकट हुए। उन्होंने उससे रोने का कारण पूछा। लकड़हारे ने उसे अपनी सारी कहानी सुना दी। जल देवता ने तुरंत नदी में डुबकी लगाई। वह एक सोने की कुल्हाड़ी लेकर बाहर आए। जब उन्होंने उस कुल्हाड़ी को लकड़हारे को देना चाहा तो लकड़हारे ने उसे लेने से मना कर दिया। उसने कहा कि वह कुल्हाड़ी उसकी नहीं है। जल देवता ने दूसरी बार पानी में डुबकी लगाई। इस बार वे एक चाँदी की कुल्हाड़ी के साथ बाहर आए। लकड़हारे ने कहा''यह भी मेरी कुल्हाड़ी नहीं है।''

जल देवता ने नदी में तीसरी बार डुबकी लगाई और इस बार वे लोहे की कुल्हाड़ी के साथ बाहर आए। लकड़हारा खुशी से चिल्ला उठा और कहने लगा कि यही मेरी कुल्हाड़ी है। जल देवता उसकी ईमानदारी पर अति प्रसन्न हुए और तीनों ही कुल्हाड़ियाँ लकड़हारे को दे दीं।

शिक्षा–ईमानदारी सबसे अच्छी नीति है।

(ख) निम्नलिखित लोकोक्तियों के आधार पर कहानी लिखिए–

1. अब पछताए होत क्या जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत।

''सुहाना! उठो! आज हमारी पहली परीक्षा है!''

धीरे से उठकर मैं बिस्तर पर बैठ गई। अदिती मेरी सहेली थी। हम बारहवीं कक्षा में पढ़ रहे थे और हम दोनों होस्टेल में एक ही कमरे में रहते थे।

'अदिति, चिंता मत करो। परीक्षा मुश्किल नहीं होगी। फेल होना नामुमकिन है! देखो मैंने पढ़ा ही नहीं। हम शत-प्रतिशत पास हो जाएँगे।'

'तुम जो करना चाहती हो करो। पर पास होने के लिए परीक्षा हॉल तक तो जाना ही पड़ेगा न! जल्दी तैयार हो जाओ! परीक्षा एक घंटे में शुरू होने वाली है।'

परीक्षा हॉल के बाहर खड़े हुए सौ से भी अधिक बच्चों में से मैं एक ही थी जो पढ़ नहीं रही थी। सारे बच्चे पुस्तकों को देखकर कुछ-न-कुछ बड़बड़ा रहे थे। कुछ बच्चे लिख भी रहे

थे। अदिति यही कर रही थी। मैं आराम से बैठ गई और इन सबको ध्यान से देख रही थी। यह मेरे लिए बहुत आसान थी। मुझे सब याद था। मुझे विश्वास था कि मैं पास हो जाऊँगी। पढ़ने की कोई जरूरत नहीं थी।

घंटी बजी और सारे विद्यार्थी हॉल के अंदर जाने लगे। मैं अपना सामान उठाकर अंदर गई। सारे बच्चों के बैठ जाने पर हमें प्रश्न पेपर मिला। मेरी नजर पेपर पर लिखे कुछ प्रश्नों पड़ी।

अहा! यह तो इतना आसान था। अदिति बेवजह चिंता कर रही थी। कलम उठाकर मैं लिखने लगी। पहला प्रश्न देखकर मेरे चेहरे पर मुस्कान फैल गयी। यह तो तीन वर्ष का बच्चा भी कर सकता था। मैं प्रश्न का उत्तर लिखने लगी। आधा लिखने पर मैं रुक गई। मेरे अंदर संदेह की धारा बहने लगी। यह प्रश्न इतना आसान नहीं था। पूरे दस मिनट तक मैं प्रश्न का उत्तर ढूँढ़ने का तरीका सोच रही थी।

पहला प्रश्न छोड़कर मैं दूसरा पढ़ने लगी पर यह मुश्किल था। मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा था। दूसरे विद्यार्थियों के चेहरे को देखकर मैं जान गई कि उनके लिए यह बहुत आसान था। सारे बच्चे बेफिक्र होकर प्रश्न के उत्तर लिख रहे थे। मैं डर गई। इस पेपर पर लिखा एक प्रश्न भी मुझे समझ में नहीं आ रहा था। अब फेल होना मुमकिन था। पूरे तीन घंटे बीत गए। मैंने पेपर में एक पूरा उत्तर भी नहीं लिखा था।

इससे मेरे चेहरे से पसीना बहने लगा। यह बहुत बुरा हुआ। एक आदमी कागज लेने के लिए मेरे पास आए। धीरे-से मैंने उनके हाथ में कागज दिया। कागज देने पर मैं जल्दी से हॉल से बाहर निकली। क्योंकि मैं नहीं चाहती थी कि लोग मेरा रोता चेहरा देखें।

'अरे सुहाना! क्या हुआ? तुम रो क्यों रही हो?'

'अदिति, तुम सही थी। मुझे पढ़ना चाहिए था। परीक्षा में मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा था। अब मैं फैल हो जाऊँगी। ओह! मैंने क्यों पढ़ा नहीं? मैं इतनी आलसी क्यों बनी?'

'सुहाना अब हम कुछ भी नहीं कर सकते हैं। किसी ने सही कहा है,' ''अब पछताए होत क्या, जब चिड़ियाँ चुग गई खेत।'' इस गलती से तुमने पढ़ने का महत्व तो समझा। अब भविष्य में तुम ऐसा नहीं करोगी।

3. ऊँची दुकान फीका पकवान।

एक शहर में एक हलवाई की दुकान थी। उसकी मिठाई बहुत स्वादिष्ट होती थी। इसलिए हलवाई की दुकान काफी मशहूर हो गई थी। लोग दूर-दूर से वहाँ मिठाई खरीदने आते थे। त्योहारों के समय तो इतनी भीड़ होती थी कि लोगों को काफी देर तक इंतजार करना पड़ता था। जो भी ग्राहक एक बार उस दुकान में चला जाता था। वह उस दुकान का पक्का ग्राहक बन जाता था।

उस दुकान के ठीक सामने एक और हलवाई की दुकान थी। लेकिन न तो उसकी मिठाई इतनी स्वादिष्ट थी और न ही उसका व्यवहार अच्छा था। इसलिए उसकी दुकान पर बहुत कम ग्राहक जाते थे। उस दुकान का मालिक दिन-भर बैठा-बैठा मक्खियाँ मारता रहता था। वह सामने वाली दुकान पर ग्राहकों की भीड़ देखकर मन-ही-मन जलता रहता था। एक दिन उसके दिमाग में एक विचार आया। उसने अपनी दुकान तुड़वाकर ऊँचा मचान बना लिया। उस मचान पर उसने नई दुकान बनवाई ताकि लोगों को दूर से ही नजर आ

जाए। नया शो केस, बढ़िया फर्नीचर, फैंसी लाइटें भी लगवाईं। ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए उसने दुकान की बढ़िया साज-सजावट करवा ली। ''कहते-कहते दादा जी चुप हो गए।'' ''फिर क्या हुआ दादा जी?'' लता ने पूछा।

हाँ, फिर क्या था। मिठाई की ऊँची और नई दुकान देखकर वहाँ मिठाई खरीदने वालों की भीड़ लग गई। यह देखकर उस दुकान का हलवाई मन-ही-मन बहुत खुश हुआ। लेकिन यह क्या? कुछ देर बाद जब लोगों ने मिठाई खाई तो मुँह बना लिया और हलवाई से लड़ने लगे''यह क्या है? तुम्हारी मिठाई में तो स्वाद ही नहीं है। इनमें मीठे का नाम तक नहीं है। ऊँची दुकान फीके पकवान! ऊँची दुकान, फीके पकवान!'' यह कहते हुए लोग जोर-जोर से चिल्लाने लगे।

25. निबंध-लेखन

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) निबंध का अर्थ है– भली-भाँति बँधी हुई सशक्त रचना। निबंध लेखन विद्यार्थी के लिए रचनात्मक विकास का साधन है। यह अपने आप में एक कला है। इसमें विषय का संपूर्ण ज्ञान भाषा का प्राजल रूप और लेखक की व्यक्तित्व की छाप स्पष्ट दिखाई देती है। गद्य की अन्य विधाओं में निबंध का महत्वपूर्ण स्थान है। अच्छा निबंध लिखने के लिए कल्पना के साथ मौलिकता जरूरी है। निबंध किसी विषय पर लिखा जाता है। उस विषय के बारे में लेखक की अपनी कल्पना होती है। किसी दूसरे लेखक या निबंध की नकल नहीं होती। उस पर अपने विचार और अपने विचारों के लिए अपनी भाषा का प्रयोग मौलिकता कहलाता है।

(ख) **निबंध-लेखन में निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए–**

1. विषय का चुनाव सोच-समझ कर कीजिए। उस विषय में गहन जानकारी हो और लिखने में रुचि हो।
2. निबंध के विषय में उसके सभी पहलुओं पर विचार कीजिए।
3. भाषा शुद्ध, स्पष्ट, सरल और प्रवाहपूर्ण हो।
4. निबंध का विभाजन, रूप-रेखा बनाकर अलग-अलग अनुच्छेदों में होना चाहिए।
5. विचारों में क्रमबद्धता और अभिव्यक्ति में रोचकता हो।
6. वाक्यों का प्रयोग शुद्ध और व्याकरण के अनुसार हो। विराम चिह्नों का सही प्रयोग हो।
7. निबंध में अप्रासंगिक बातों को शामिल न करें।
8. छोटे-छोटे, व्यवस्थित और सुसंगठित वाक्य रचना करनी चाहिए।

2. निम्नलिखित शीर्षकों पर निबंध लिखिए–

(क) मेरा प्रिय कवि

हिंदी साहित्याकोश में गोस्वामी तुलसीदास ही एक ऐसे दैदीप्यमान् नक्षत्र हैं, जिनको लोकनायक का स्थान प्राप्त है। वास्तव में उन्होंने समाज को एक नवीन दिशा प्रदान की

थी। इस सबका आधार स्तंभ है, उनका विश्व प्रसिद्ध ग्रंथ रामचरितमानस। इस ग्रंथ के माध्यम से उन्होंने तत्कालीन विखंडित होते समाज को एकता के सूत्र में पिरोकर नई दिशा प्रदान की।

गोस्वामी तुलसीदास जी का जन्म संवत् 1589 में बाँदा जिले के राजापुर नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम आत्माराम दूबे और माता का नाम हुलसी था। जन्म के समय इनके मुँह में बत्तीस के बत्तीस दाँत थे, जिन्हें अशुभ सूचक माना जाता है। इसके अतिरिक्त इनका जन्म भी अशुभ नक्षत्र में हुआ था, अतः अमंगल की आशंका से इनके माता-पिता ने इन्हें बचपन में ही त्याग दिया था। इस प्रकार ये अपने माता-पिता के लाड-प्यार से वंचित रहे।

जन्म के समय तुलसीदास के मुख से सबसे पहला शब्द राम निकला था। अतः इसी आधार पर इनका नाम रामबोला रख दिया गया। माता-पिता द्वारा त्यागे जाने के कारण इनका बचपन अनाथों की तरह बीता।

माता-पिता के प्यार से वंचित अनाथ रामबोला ने अनेकों कष्ट झेलने के उपरांत बाबा हरिदास की शरण ली। बाबा हरिदास ने इनके सुकोमल मन में राम नाम की महिमा का बीजारोपण कर दिया। वे सदैव इन्हें राम कथाएँ सुनाया करते थे। कुछ दिनों पश्चात् बाबा बालक को अपने साथ लेकर काशी आ गए, जहाँ पर शेष सनातन जी के आश्रम में बालक ने अपना अध्ययन प्रारंभ किया। यहीं रहकर इन्होंने संस्कृत भाषा सहित अनेक विषयों का अध्ययन किया।

काशी में रहते हुए भी तुलसीदास का मन अपनी जन्मभूमि का मोह त्याग नहीं कर सका। अतः अध्ययन समाप्त करके ये अपने गाँव वापस लौट आए। गाँव की एक अति सुंदर कन्या के साथ इनका विवाह हो गया, जिसका नाम रत्नावली था। अपनी पत्नी से ये अत्यधिक स्नेह करते थे, एक पल भी उनके बिना नहीं रह सकते थे।

एक समय की बात है कि तुलसीदास कहीं बाहर गए हुए थे। इनकी अनुपस्थिति में ही इनकी पत्नी अपने मायके चली गई। जब ये रात्रि में घर वापस लौटे और पत्नी के मायके जाने का समाचार सुना तो इन्होंने रात्रि में ही ससुराल जाने का निश्चय किया, यद्यपि उस समय मौसम बहुत खराब था और मार्ग में पड़ने वाले नदी-नाले जल-प्लावित थे। तथापि उनकी चिंता न करते हुए भी ये रात्रि में ही अपनी ससुराल पहुँचे। अत्यधिक खराब मौसम में अपने पति को अनेक कष्ट झेलकर आया देखकर इनकी पत्नी क्रोध में आग बबूला होकर फटकार लगाते हुए बोली–अस्थि चर्ममय देह मम!, तामें ऐसी प्रीति ऐसी जो श्रीराम से, होत नहीं भव भीति अर्थात् मेरे हड्डी तथा चमड़े से बने इस शरीर से आपको इतना अधिक प्रेम है। यदि इतना ही प्रेम श्रीराम से होता तो आपको संसार सागर में भय नहीं लगता अर्थात् आपको मुक्ति मिल जाती। अपनी पत्नी की इस प्रकार की फटकार का इनके हृदय पर बहुत गहरा आघात लगा तथा इनके ज्ञान-चक्षु खुल गए, मानो इन्हें भवसागर से पार होने का सिद्धमंत्र मिल गया। इनके स्वभाव में इसी समय से परिवर्तन आ गया और ये धीरे-धीरे सांसारिक कार्यों से विरक्त हो गए। श्रीराम में इनकी भक्ति बढ़ती गई।

श्रीराम की भक्ति से आप्लावित हृदय वाले तुलसीदास ने सभी तीर्थों की यात्रा की और अंततः वे श्रीराम की जन्मस्थली अयोध्या आ गए यहीं रहकर इन्होंने अपनी विश्व प्रसिद्ध रचना रामचरितमानस को लिखना प्रारंभ किया। इसके पश्चात् इन्होंने गीतावली, दोहावली, विनय पत्रिका, कवितावली, पार्वती मंगल, जानकी मंगल आदि ग्रंथों की रचना की। उनकी ये रचनाएँ ब्रज तथा अवधि भाषाओं में तत्कालीन प्रचलित अनेक शैलियों में लिपिबद्ध हैं। तुलसीदास यदि केवल रामचरितमानस की ही रचना करते, तो भी इनकी प्रसिद्धि में कोई विशेष अंतर न पड़ता। इस काव्य रचना में सूर्यवंशी राम के चरित्र का बड़ा मनोरम वर्णन किया है। राम के चरित्र के माध्यम से इन्होंने जहाँ मानव के सर्वोच्च चरित्र को हमारे सम्मुख रखा वहीं वशिष्ठ, विश्वामित्र, भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न, दशरथ, कौशल्या, सुमित्रा, सुग्रीव, हनुमान आदि पात्रों के माध्यम से गुरु, पुत्र, भाई, पिता, माता, मित्र, भक्त के सर्वश्रेष्ठ चरित्र को प्रस्तुत किया। माता सीता जी के माध्यम से उन्होंने प्रजा और राजा के संबंधों का आदर्श चित्रण प्रस्तुत किया है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि गोस्वामी तुलसीदास ने तत्कालीन मृतप्राय राष्ट्र में नवजीवन का संचार करके लोगों को इनके कर्तव्यों के प्रति सावधान किया। संवत् 1690 में इनका शरीर पंचतत्व में विलीन हो गया।

(ख) रेल-दुर्घटना

जीवन में कुछ यादें ऐसी होती हैं,जो सदैव ही स्मृति पटल पर अंकित रहती हैं। यदि उन स्मृतियों में मिठास हो, तो हृदय में माधुर्य भाव उत्पन्न होने लगता है, कड़वाहट हो तो मन वितृष्णा से भर उठता है, दुःख हो तो अंदर टीस-सी उठती है।

ग्रीष्मावकाश होते ही मित्र मंडली ने तय किया अमृतसर स्वर्ण मंदिर के दर्शनार्थ हेतु जाया जाए। निर्धारित कार्यक्रमानुसार हम मुंबई से अमृतसर आने वाली 'गोल्डन टैंपल एक्सप्रेस' में रवाना हो गए। रास्ते भर में हँसी-ठिठोली, खेल, अंताक्षरी, चुटकुला गोष्ठी तथा हास्यरस से भरपूर कविताएँ न जाने क्या-क्या चलता रहा। सचमुच मित्रों संग यात्रा का मजा ही अलग था। लगता था, यह रेल-यात्रा जीवन की एक मधुर यादगार होगी कि अचानक यह रेल-यात्रा एक भयानक दुर्घटना में बदल गई।

14 मई की रात मुंबई सैंट्रल से चलकर प्रातः 3.50 लुधियाना से रवाना हुई 'गोल्डन टैंपल' प्रातः 4 बजे लाढोवाल स्टेशन के निकट ही दुर्घटना का शिकार हो गई। इसके एस-4 स्लीपर कोच में आग लग गई। शीघ्र ही एस-4 कोच में आग की लपटें चारों ओर फैलने लगीं और उन्होंने एस-3 तथा एस-5 कोचों को भी अपनी लपटें में ले लिया। यहाँ तक कि एस-6 भी आग की लपटों से बच न सका। चारों तरफ चीख-पुकार मच गई। गाड़ी रुकते ही हम नीचे उतर आए। दृश्य देखा तो कलेजा मुँह को आने लगा। आग की ऊँची उठती भयानक लपटें दूसरे डिब्बों की तरफ भी बढ़ रही थीं। गाड़ी में कुछ सैनिक सफर कर रहे थे। उन्होंने अपनी जान पर खेलकर जलते हुए डिब्बों को गाड़ी के अन्य डिब्बों से अलग कर दिया, नहीं तो यह आग शेष डिब्बों को भी अपनी चपेट में ले लेती। तब मृतकों तथा घायलों की संख्या न जाने कितनी हो जाती। शीघ्र ही वहाँ पुलिस कर्मचारी, अग्निशमन कर्मचारी, डॉक्टरों का दल, नर्सें, एंबुलेंस, समाचार-पत्रों के पत्रकार आदि पहुँचने शुरू हो गए। पुलिस कर्मचारी बोगियों से निकाले शवों को गिनने तथा अन्य कार्यवाही करने लगे।

अग्निशमन कर्मचारी बोगियों की आग पर काबू पाने का प्रयास करने लगे। मैं अपने साथियों के साथ मिलकर घायलों को अस्पताल पहुँचाने में मदद करने लगा।

सचमुच दिल दहला देने वाले इस अग्निकांड ने अपनी मंजिल तक पहुँचने की आस लिए बैठे यात्रियों को अकाल ही मृत्यु का ग्रास बना लिया था। उधर स्थिति का जायजा लेने मंत्रीगण पहुँचने लगे थे। मृत्यु का वह तांडव नृत्य आज भी जब याद आता है, तो कलेजा काँप उठता है।

शॉर्ट सर्किट के कारण, गाड़ी में स्टोव फटने के कारण, जलती सिगरेट का टुकड़ा गाड़ी में फेंक देने से तथा शरारती तत्वों का हाथ अथवा विध्वंसक कार्यवाही का शक।

समाचार-पत्रों में प्रकाशित खबरें आँखों के सामने आने लगीं, ''आई०एस०आई० पंजाब में पुनः गड़बड़ी कराने की फिराक में है।'' ऐसा लगा, कहीं ये किसी आतंकवादी संगठन का काम तो नहीं है। अपने माता-पिता को हमने दूरभाष द्वारा सूचित किया कि हम ठीक हैं। उन्होंने हमें लौट आने को कहा। हम भारी मन से यात्रा बीच में छोड़ घर लौट गए।

अगले दिन समाचार-पत्रों में छपा था, ''रेलमंत्री ने इस अग्निकांड को भयानक हादसा करार देते हुए यह घोषणा की कि मृतक के परिजनों को 4 लाख रुपये मुआवजा।'' मन में यह सवाल उठा कि क्या इस 4-5 लाख रुपये द्वारा परिवार को उनका खोया बेटा, पति, भाई लौटाया जा सकता है? क्या अनमोल जिंदगी की 4-5 लाख रुपये देकर आपूर्ति की जा सकती है? क्या वे 4-5 लाख रुपये मृतक के परिजनों के शेष जीवनयापन हेतु पर्याप्त हैं? आजकल महँगाई के युग में इनसे तो दो कमरों का मकान नहीं बनता, बेटी नहीं ब्याही जा सकती, शिक्षा का खर्च नहीं निकलता, तो सरकार के द्वारा लगाई गई इस मरहम का अर्थ ही क्या है? अच्छा हो यदि इन दुर्घटनाओं के कारण की जाँच करके भविष्य में इन्हें रोका जाए। 'पंजाब केसरी' के संपादक ने उचित ही लिखा था''जब भी रेल दुर्घटनाएँ होती हैं, रेलमंत्री, रेल अधिकारी घटना स्थल पर पहुँचते हैं, उसकी जाँच होती है, मृतकों के परिवारों को सहायता देकर रेलतंत्र फिर लंबी चादर तानकर सो जाता है।''

(घ) यदि मैं प्रधानमंत्री होता

समाचार-पत्र उठाते ही अकसर आपको प्रधानमंत्री के दर्शन हो जाते हैं। दूरदर्शन पर प्रधानमंत्री का भाषण या साक्षात्कार चल रहा होता है। दूरदर्शन पर विभिन्न चर्चाओं में प्रधानमंत्री पर या तो कटाक्ष हो रहा होता है अथवा उसके कार्यक्रमों की प्रशंसा। प्रधानमंत्री अर्थात् जिसके कंधों पर देश का भार होता है, जो शासन का मुखिया होता है, जिस पर पूरे राष्ट्र की समस्याओं से जूझने का दायित्व होता है। प्रधानमंत्री देश का सर्वप्रमुख नेता होता है।

प्रधानमंत्री का पद जितना बड़ा है, उसका उत्तरदायित्व भी उतना ही बड़ा होता है। भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। यहाँ की समस्याएँ भी बड़ी हैं। प्रधानमंत्री कैसे इन समस्याओं से संघर्ष करते हैं? मैं इसी उधेड़बुन में पड़ा था कि न जाने कब मेरे मन में इस महत्वाकांक्षा ने जन्म ले लिया कि काश! मैं भी देश का प्रधानमंत्री होता। तब मैं प्रधानमंत्री बनने के सपने देखने लगा। जब से श्री नरेंद्र मोदी भारत के प्रधानमंत्री बने हैं तब से मुझे भी अपना सपना साकार होने की संभावना प्रतीत होने लगी है, क्योंकि यदि एक साधारण चाय बेचने वाला व्यक्ति भारत का प्रधानमंत्री बन सकता है तो मैं क्यों नहीं?

भारत का प्रधानमंत्री बनकर मैं सर्वप्रथम शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति का सूत्रपात करूँगा। अभी भी जब मैं बाल मजदूरी में लगे बच्चों को देखता हूँ तो मेरा हृदय चीत्कार कर उठता है। मैं सभी बच्चों के लिए अनिवार्य और निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था करने के काम को प्राथमिकता दूँगा। मेरा प्रयत्न रहेगा कि सभी बच्चों का सर्वांगीण विकास हो।

हमारे देश का युवावर्ग कुंठित एवं निराश है। बेरोजगारी की समस्या ने उसे बुरी तरह तोड़कर रख दिया है। वह बहुत कुछ करना चाहता है, पर उसे अवसर नहीं मिलते। सरकार जैसे-तैसे काम चला रही है। वह रोजगार के नए अवसर सृजित नहीं कर पा रही है। मेरा लक्ष्य होगा प्रतिवर्ष एक करोड़ युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराना। यह काम अकेले सरकार नहीं कर सकती। अतः औद्योगिक घरानों का सहयोग लेने से मैं नहीं चूकूँगा। बेरोजगारों को रोजगार देकर उनके असंतोष को कम किया जा सकता है। मैं यह प्रयास करूँगा कि देश उनकी प्रतिभा और क्षमता का भरपूर लाभ उठा सके।

मेरे देश की जनसंख्या इतनी तीव्र गति से बढ़ रही है कि इसने सभी कल्याणकारी योजनाओं को धराशायी कर दिया है। मेरा लक्ष्य होगा कि इस अंधाधुंध बढ़ती जनसंख्या पर नियंत्रण लगाया जा सके। एक परिवार में दो से अधिक बच्चे नहीं होने चाहिएँ? इसके लिए मैं कठोर कदम उठाने से भी नहीं हिचकिचाऊँगा, भले ही मुझे आलोचना का शिकार क्यों न होना पड़े।

भारत एक कृषि प्रधान देश है। देश में कृषकों की दशा अभी भी दयनीय बनी हुई है। किसानों के जीवन-स्तर को सुधारने के लिए मैं भरसक प्रयास करूँगा। गाँवों को उन्नत बनाया जाएगा, वहाँ सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाएँगी तथा घरेलू उद्योग-धंधों को बढ़ावा दिया जाएगा।

आज सूचना के क्षेत्र में क्रांति आ रही है। मैं इसकी गति में और तेजी लाऊँगा। कंप्यूटर और इंटरनेट के मेल से जनसंचार सुविधाओं का विकास किया जाएगा।

मैं भारत को आतंकवाद से मुक्ति दिलाने का भरपूर प्रयास करूँगा। यह आतंकवाद विश्वभर की समस्या है, पर इसने भारत की प्रगति को अवरुद्ध कर रखा है।

मैं इसके प्रति 'जीरो टोलरेंस' की नीति का अनुसरण करूँगा।

मेरा जोर पर्यावरण को प्रदूषण मुक्त बनाने पर रहेगा। पर्यावरण को शुद्ध बनाने में वृक्षारोपण को बढ़ावा दिया जाएगा, गंगा तथा अन्य नदियों के जल को शुद्ध किया जाएगा।

मैं विश्वास दिलाता हूँ कि मेरे प्रधानमंत्री बनने पर भारत पुनः 'सोने की चिड़िया' कहलाने लगेगा। विश्व में भारत की प्रतिष्ठा कायम होगी। मैं विश्व-बंधुत्व की भावना पर काम करूँगा।

काश! मुझे प्रधानमंत्री बनने का अवसर मिले।

(ङ) रंगों का त्योहार : होली

समय-समय पर आने वाले त्योहार व्यक्ति के व्यस्त एवं नीरस जीवन में उल्लास, आनंद एवं उमंग का संचार कर देते हैं। ये त्योहार एक ओर तो हमें अपनी संस्कृति से जोड़े रखते हैं, तो दूसरी ओर हमें कोई-न-कोई प्रेरणा एवं संदेश भी दे जाते हैं। त्योहारों की शृंखला में 'होली' का विशेष स्थान है।

होली का त्योहार फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। यह वसंत ऋतु के आगमन का संदेशवाहक है।

प्रत्येक त्योहार किसी-न-किसी पृष्ठभूमि पर आधारित होता है। होली का संबंध भी एक पौराणिक घटना से है। प्राचीन काल में हिरण्यकश्यप नाम का एक दैत्य था जो बह्मा से एक विचित्र वरदान पाकर अत्यंत अहंकारी तथा नास्तिक हो गया था। वह चाहता था कि लोग भगवान को छोड़कर उसकी पूजा करें पर उसी का पुत्र प्रहलाद भगवान का परम भक्त था। जब पिता के मना करने पर भी प्रहलाद ने ईश्वर-भक्ति नहीं छोड़ी तो हिरण्यकश्यप ने उसे मारने के अनेक प्रयास किए, मगर प्रहलाद का बाल भी बाँका न हुआ। दैत्यराज की बहन होलिका को यह वरदान मिला हुआ था कि अग्नि उसे जला नहीं सकती। अपने भाई के आग्रह पर होलिका प्रहलाद को लेकर जलती आग में बैठ गई। पर होलिका भस्म हो गई और प्रहलाद फिर बच गया तभी से होलिका-दहन की परंपरा का जन्म हुआ।

होली की रात्रि में होलिका-दहन किया जाता है। किसी खुले स्थान पर लकड़ियों के ढेर तथा उपलों से होली बनाई जाती है। होली की आग में गेहूँ तथा जौ की बालियाँ भूनकर एक-दूसरे को खिलाते हैं तथा गले मिलते हैं। अगले दिन फाग खेला जाता है। लोग एक-दूसरे पर गुलाल तथा रंग डालते हैं। इस दिन अमीर-गरीब, छोटे-बड़े का भेदभाव मिट जाता है। लोग एक-दूसरे के गले मिलते हैं तथा प्रेम, सद्भाव एवं मेल-जोल का दृश्य उपस्थित हो जाता है। दोपहर के बाद लोग नहा-धोकर एक-दूसरे के घर जाते हैं तथा मिठाई खाते-खिलाते हैं।

होली का त्योहार प्रेम एवं भाई-चारे का संदेश देता है। कुछ लोग इस त्योहार की पवित्रता को अपने अनुचित व्यवहार से कलुषित कर देते हैं। वे मद्यपान करके अभद्र व्यवहार करते हैं तथा पानी के रंगों के स्थान पर तेल के रंग, कीचड़ आदि का प्रयोग करते हैं। हमारा कर्तव्य है कि होली के त्योहार को अत्यंत पवित्रता से मनाएँ।

(च) मेरा प्रिय खेल : कबड्डी

यदि शरीर ही स्वस्थ नहीं, तो स्वस्थ मस्तिष्क कहाँ से आया?
इसीलिए तो ठीक कहा है पहला सुख निरोगी काया।

किसी ने ठीक ही कहा है कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए व्यायाम तथा खेलकूद आवश्यक हैं। खेलकूद से शरीर पुष्ट होता है तथा स्वस्थ रहता है।

आज अनेक प्रकार के खेल प्रचलित हैं; जैसे– हॉकी, क्रिकेट, फुटबॉल, वॉलीबॉल, बास्केटबॉल, बैडमिंटन, टेनिस, कबड्डी आदि। सभी खेलों में कबड्डी का खेल मेरा सर्वाधिक प्रिय खेल है।

भारत में कबड्डी सबसे सस्ता तथा आसान खेल है। दूसरे खेलों में लंबे-चौड़े मैदानों तथा महँगी सामग्री की आवश्यकता पड़ती है। कबड्डी के खेल में इस प्रकार का कोई बंधन नहीं है। इसे छोटे-से-छोटे स्थान पर भी खेला जा सकता है। इसे खेलने के लिए किसी प्रकार की सामग्री की भी आवश्यकता नहीं पड़ती। यह एक भारतीय खेल है।

इसे खेलने के लिए मैदान के बीचों-बीच एक रेखा खींच दी जाती है जिसे 'पाला' कहते हैं। इसके दोनों ओर बराबर-बराबर खिलाड़ी खड़े हो जाते हैं। एक ओर से एक खिलाड़ी साँस

रोककर 'कबड्डी-कबड्डी' कहता हुआ दूसरी ओर जाता है। यदि वह दूसरी ओर के किसी खिलाड़ी को स्पर्श करके बिना साँस टूटे 'पाला' पार करके अपनी ओर आ जाता है या पाले को स्पर्श कर लेता है, तो उसकी टीम को एक अंक मिलता है और स्पर्श किया हुआ खिलाड़ी आउट माना जाता है। अगर वह खिलाड़ी दूसरी ओर के खिलाड़ियों द्वारा पकड़ लिया जाता है और साँस टूटने तक वह पाले को स्पर्श नहीं कर पाता, तो उसे आउट माना जाता है। दोनों ओर के आउट होने वाले खिलाड़ी मैदान से बाहर बैठा दिए जाते हैं। आउट होने वाला खिलाड़ी मैदान में तभी वापस आ सकता है, जबकि उसकी टीम का खिलाड़ी दूसरी टीम के किसी खिलाड़ी को आउट कर दें। यदि कोई खिलाड़ी एक से अधिक खिलाड़ियों को छूकर बिना साँस टूटे पाला पार करके अपनी ओर आ जाता है या पाले को स्पर्श कर लेता है, तो स्पर्श किए हुए सारे खिलाड़ी आउट माने जाते हैं। निश्चित समय के बाद अंकों के आधार पर विजयी टीम की घोषणा की जाती है।

कबड्डी का खेल अत्यंत मनोरंजक तथा स्वास्थ्यप्रद है। इसमें खिलाड़ियों को अत्यंत चुस्ती, फुर्ती तथा सावधानी से खेलना पड़ता है। भारत जैसे देश में जहाँ अधिकांश लोग आधुनिक खेलों का महँगा सामान नहीं खरीद पाते, कबड्डी का खेल ही सर्वोत्तम है। इस खेल से सहयोग तथा भाईचारा बढ़ता है।

जब एशियाई खेलों में पहली बार कबड्डी के खेल को शामिल किया गया, तो भारत ने कबड्डी के खेल में स्वर्ण-पदक जीता। हमारा कर्तव्य है कि हम इस खेल को अपनाएँ। सरकार को भी चाहिए कि कबड्डी के खेल को बढ़ावा दे।

(छ) भ्रष्टाचार

नीति वहिर्भूत आचरण ही अनैतिक एवं भ्रष्ट आचरण है। आज देश में नैतिक मूल्यमान की भयानक रिक्तता दिखाई पड़ती है। जिन कारणों से विश्व में देश की छवि धूमिल होती जा रही है, उनमें भ्रष्टाचार की प्रधानता है। इसका सीधा संबंध चरित्रहीनता से है।

भ्रष्टाचार आज एक विश्वव्यापी समस्या है। संसार के अनेक देश इस दुर्गुण के गिरफ्त में हैं। पहली दृष्टि में ऐसा लगता है कि अभाव की स्थिति के कारण लोग भ्रष्ट आचरण के लिए विवश हो जाते हैं और वे नैतिकता को विसर्जित कर निजी स्वार्थ की पूर्ति के लिए कुछ ऐसा कर बैठते हैं, जिन्हें भ्रष्टाचार कहा जा सकता है। पर जब किसी देश का मुख्यमंत्री, मंत्री-परिषद् के सदस्य, प्रधानमंत्री और राष्ट्राध्यक्ष तक संदेह के घेरे में आ जाएँ, तो उस स्थिति को अभाव से जोड़ पाना कठिन हो जाता है। कदाचित् यह चारित्रिक दुर्बलता का बहिर्मुखी प्रकाशन है।

विज्ञान की प्रगति के साथ जीवन में सुविधाओं के संसाधन जुटाए गए हैं। समय के साथ उपभोक्तावाद को बढ़ावा मिला है। मनुष्य नैतिक-अनैतिक, उचित-अनुचित किसी भी रास्ते से अपने लिए सुख के साधन जुटा रहा है। बेईमानी, चोर बाजारी, रिश्वतखोरी, सत्ता का दुरुपयोग आदि कारणों से भ्रष्टाचार को बल मिल रहा है। इसकी अतिशयता से सामान्य जन का जीवन दुभर हो उठा है। युक्ति-संगत जीवन की शर्तें भ्रष्टाचार के कारण विलुप्त हो रही हैं। समाज में इसकी जड़ें काफी गहरी होती जा रही हैं। जीवन का हर क्षेत्र, चाहे वह सरकारी तंत्र से जुड़ा हो या नितांत वैयक्तिक हो, आज भ्रष्टाचार के शिकंजे में है। सरकारी या गैर-सरकारी छोटे-बड़े सभी कर्मचारी अपने जीवन को सुखद

बनाने के लिए कुछ ऐसे कार्यकलाप में लिप्त दिखाई पड़ते हैं, जिन्हें भ्रष्टाचार की संज्ञा दी जा सकती है। यह कैसी बिडंबनापूर्ण स्थिति है कि भ्रष्टाचार की जड़ें निर्धन अभावग्रस्त लोगों तक नहीं बल्कि सत्ताधारियों में भी फैली हुई हैं। उदाहरण के लिए बोफोर्स घोटाला, यूरिया घोटाला, चारा घोटाला, प्रतिभूति के मामले आदि आपराधिक भ्रष्ट आचरणों का संबंध निर्धन वर्ग से नहीं सत्ता के उच्च आसन पर विराजित लोगों से है। मामला चाहे अमेरीकी वाटर गेट का हो या जापानी मंत्रीमंडल का, चाहे बांग्ला के राष्ट्रपति उससे जुड़े हों या हमारे देश के भूतपूर्व प्रधानमंत्रियों की ओर ही संदेह की उँगलियाँ उठाई गई हों, सारी स्थितियाँ बड़ी दुर्भाग्यपूर्ण हैं।

नैतिक शिक्षा, चारित्रिक दृढ़ता, कठोर और निर्मम दंडविधि के बिना इस समस्या से मुक्त हो पाना नितांत असंभव लगता है।

(ञ) महात्मा गांधी

महात्मा गांधी एक महान आत्मा थे। उन्होंने अपने ऊँचे कार्यों और आदर्शों से विश्व में प्रमुख स्थान पाया। वे महापुरुष कहलाए। वे भारत की आजादी के इतिहास के नायक थे। उन्होंने सत्य और अहिंसा का रास्ता अपनाकर अंग्रेजी शासन की जड़ को हिलाकर रख दिया था। भारतीय उन्हें राष्ट्रपिता कहते हैं। प्यार से लोग उन्हें बापू भी कहते हैं। पूरी दुनिया में उन्हें महात्मा गांधी के नाम से जाना जाता है।

महात्मा गांधी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 ई० को गुजरात के पोरबंदर नामक स्थान में हुआ था। इनके बचपन का नाम मोहनदास तथा इनका पूरा नाम मोहनदास कर्मचंद गांधी था। इनके पिता कर्मचंद गांधी राजकोट के दीवान थे। गुजरात में आरंभिक शिक्षा पूरी करने के बाद मोहनदास बैरिस्टरी पढ़ने के लिए इंग्लैंड गए। गांधी जी इंग्लैंड में सादगी से रहे। वे वहाँ से वकालत की डिग्री लेकर भारत लौटे। उन्होंने मुंबई में वकालत शुरू की। कुछ महीनों बाद उन्हें एक मुकदमे के सिलसिले में दक्षिण अफ्रीका जाना पड़ा। वहाँ उन्होंने गोरों के काले कारनामे देखे। गोरे भारतीयों पर अत्याचार करते थे। गांधी जी ने इस अत्याचार का विरोध किया। यहीं उन्होंने सबसे पहले सत्याग्रह का प्रयोग किया। अंत में गांधी जी की जीत हुई।

1915 ई० में गांधी जी भारत लौट आए। भारत में उस समय अंग्रेजों के विरुद्ध छिट-पुट संघर्ष चल रहा था। गांधी जी ने पूरे देश का भ्रमण किया और भारत की सही स्थिति का पता लगाया। उन्होंने पाया कि भारतीय जनता बहुत मुसीबत में है। तब उन्होंने भारतीयों को अंग्रेजों के विरुद्ध संगठित किया। 1919 में जलियाँवाला बाग हत्याकांड ने गांधी जी को झकझोर दिया। सन् 1920 में उन्होंने असहयोग आंदोलन छेड़ दिया। इस आंदोलन में पूरा देश गांधी जी के साथ था। आंदोलन काफी हद तक सफल रहा।

सन् 1930 में गांधी जी ने 'नमक सत्याग्रह' किया। इस आंदोलन को 'सविनय अवज्ञा आंदोलन' कहा जाता है। गांधी जी ने साबरमती से दांडी तक की पैदल यात्रा कर समुद्र तट पर नमक बनाकर नमक कानून तोड़ा। इस यात्रा में हजारों लोग उनके साथ थे। भारतीयों में आजादी पाने के लिए पूरा जोश था। लेकिन गांधी जी शांतिपूर्वक आंदोलन चलाते थे। वे हिंसा के खिलाफ थे। जब कभी भी उनके आंदोलन में हिंसा हुई उन्होंने उसे वापस ले लिया। गांधी जी अंग्रेजों की हिंसा का जवाब अपने अहिंसक तरीके से देते थे।

सन् 1942 ई० में गांधी जी ने 'करो या मरो' का नारा देकर 'भारत छोड़ो आंदोलन' आरंभ किया। उन्होंने अंग्रेजों से भारत छोड़कर चले जाने के लिए कहा। आखिरकार 15 अगस्त, 1947 ई० को भारत स्वतंत्र हो गया।

आंदोलन के दौरान गांधी जी को कई बार जेल यात्रा करनी पड़ी पर गांधी जी अपने निश्चय पर डटे रहे। उन्होंने जीवन भर लोगों की सेवा की। कुष्ठ रोगियों तथा प्लेग जैसी बीमारियों से पीड़ित लोगों का अपने हाथों से उपचार किया। अछूत समझे जाने वाले लोगों को अपने आश्रम में रखा। उन्हें भगवान का रूप अर्थात् हरिजन कहा। गांधी जी ने हिंदू-मुस्लिम एकता के लिए पूरा जोर लगा दिया। लेकिन भारत के बँटवारे के समय सांप्रदायिक दंगे भड़क उठे। इससे दुखी होकर गांधी जी को लंबा उपवास करना पड़ा।

30 जनवरी, 1948 का दिन एक काला दिन था। इस दिन प्रार्थना-सभा में नाथूराम गोडसे ने उन्हें गोली मारकर इस नश्वर संसार से विदा कर दिया। गांधी जी 'हे राम' कहते हुए चल बसे। परंतु दुनिया उन्हें नहीं भूल पाई। राजघाट में गांधी जी की समाधि बनी हुई है। 2 अक्टूबर को 'गांधी जयंती' एक राष्ट्रीय त्योहार के रूप में मनाया जाता है।

Note

Note

Note